Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सटक सीताराम

★

प्रो० संसारचन्द्र एम० ए०

८३
५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय

विषय संख्या 8.2 RA
पुस्तक संख्या 6
आगत पञ्जिका संख्या 36,212

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कृपया १५ दिन से अधिक समय तक पुस्तक अपने पास न रखें।

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति
भूतपूर्व उपकुलपति द्वारा पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को दो हजार पुस्तकें सप्रेम भेंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

26,299
10-12-69
Stock Verification-2024
37311

RA पुस्तकालय 26399
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या ...... आगत संख्या ......

पुस्तक-वितरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित २० वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा १० पैसे के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

20 DEC 1986
Stock Verification-2024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सटक सीताराम

Stock Verification-2024

लेखक

प्रो० संसारचन्द्र एम० ए०

Stock Verification-2024

ओरिएण्टल बुक डिपो
१७०४, नई सड़क, दिल्ली।

R 8.3,SAN-S
37311

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक
ओरिएण्टल बुक डिपो
१७०४, नई सड़क, दिल्ली

ज्ञानान्न मुक्तिः
गुरुकुल पुस्तकालय काँगड़ी.

मूल्य : तीन रुपये

ज्ञानान्न मुक्तिः
गुरुकुल पुस्तकालय काँगड़ी.

मुद्रक
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस
क्वीन्स रोड, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स
ट
क
सी
ता
रा
म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो शब्द

हास्य क्या है ? मज़ाक किसे कहते हैं? इस सम्बन्ध में प्राय: मतभेद पाया जाता है। एक वर्ग की मान्यता है कि रचना में हास्य अथवा मज़ाक का निर्वाह एक सामान्य कला है। साहित्यिकों की अधिकांश संख्या इससे सहमत नहीं। इनका विश्वास है कि मज़ाक करना मज़ाक नहीं है। कौन जाने किसका दृष्टिकोण पूर्णतया संगत है और किसकी धारणा भ्रान्त अथवा निर्मूल है। मैं तो इतना जानता हूँ कि मज़ाक वास्तव में एक दोधारी तलवार है। यदि इसका निशाना चूक जाय तो मज़ाक करनेवाला स्वयं मज़ाक का पात्र बन जाता है।

यह प्रश्न विचारणीय है कि किसी रचना में हास्य एवं व्यंग्य का उद्रेक करने के लिए किन-किन साधनों की अवाश्यकता होती है। इसके लिए किस प्रकार का वातावरण तथा परिस्थितियाँ अपेक्षित हैं? लेखक की साहित्यसाधना का स्तर कैसा होना चाहिये? इन सब बातों का संतुलित विवेचन अत्यन्त विशद एवं गम्भीर है। सामान्य रूप से जैसा कि मैं समझ सका हूँ, ऐसे लेखक के लिए शान्त मन, स्वस्थ दिमाग़ तथा अच्छे हाज़में की आवश्यकता होती है। जहाँ तक मेरा वैयक्तिक सम्बन्ध है, पहली दोनों चीज़ें तो पश्चिमी पंजाब में ही छोड़ आया हूँ। हाज़में का ह़ोलिया यहाँ आकर बिगड़ गया है। भला इस मिलावट के दौर में हाज़मा ठीक भी कैसे रह सकता है! ढूंढने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी कोई चीज़ अपने शुद्ध रूप में नहीं मिलती। दूध को ही लीजिये। हमारे यहाँ दूध को सबसे सात्विक एवं पवित्र माना जाता है। खेद है कि आजकल बाज़ार में जो दूध बिकता है, उसको दूध कहना दूध का मुँह चिढ़ाना है। चूल्हे में लकड़ियों के साथ स्वयं हलवाई भी यदि भस्म हो जाय, तो भी इस पर मलाई नहीं जमती। मैं तो भूले से भी इसका सेवन नहीं करता। यदि कभी ऐसा अपराध कर भी लूँ, तो मेदे और दूध में भयानक युद्ध प्रारम्भ हो जाता है। दूध अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाकर मेदे में जगह बनाना चाहता है और मेदा इसे सर्वथा आगन्तुक एवं विषम पदार्थ समझकर बाहर फेंकने का प्रयत्न करता है। इन दोनों की कशमकश में मेरी नाक में दम हो जाता है और मैं पेट पकड़कर बैठ जाता हूँ।

ऐसे निराश वातावरण में मैंने हास्य-विनोदात्मक निबन्ध लिखने का साहस किया है। इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दी में निबन्ध-साहित्य का विशेष महत्त्व है, परन्तु इस प्रकार के निबन्धों का बहुत कम प्रचलन है। हमारा निबन्ध-साहित्य निर्बन्ध न होकर परिबन्ध है। इसमें बौद्धिक पक्ष को ही प्रधानता मिलती है। साहित्य का यह माध्यम प्रायः कल्पनातत्त्वों के समुचित विकास के लिए उर्वर नहीं समझा जाता। यही कारण है कि ऐसा साहित्य केवल ज्ञान-पिपासा को शान्त करने के लिए तथा चिन्तन एवं अनुभूति को उत्तेजित करने के लिए ही उपादेय होता है। इसमें हृदय की मृदुल तारों को झंकृत करने की अधिक स्फूर्ति नहीं होती। इसीलिए इसका अधिकांश उपयोग विद्वानों तक ही सीमित रहता है। इससे जनसाधारण की रुचि का यथेष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिष्कार सम्भव नहीं होता। आजकल तो अधिकांश निबन्ध-साहित्य आलोचना का ही सहायक बनकर रह गया है। वस्तुतः इससे निबन्ध-साहित्य की व्यापकता को आघात पहुँचता है। इसमें सन्देह नहीं कि भारतेन्दुयुग में निबन्ध के वर्तमान स्वरूप का एकान्तिक अभाव था। उन निबन्धों में हृदयपक्ष की सजीवता एवं सरसता स्थान-स्थान पर झलकती है। द्विवेदी काल में भी निबन्ध का स्वरूप इतना गंभीर नहीं हुआ। आचार्य शुक्ल के समय से तो यह साहित्य इतना सारगर्भित एवं पांडित्यपूर्ण हो चला है कि इसमें मनोविनोद एवं ज़िन्दादिली के लिए बहुत कम अवकाश है। अब कुछ साहित्यिकों का ध्यान व्यंग्यात्मक निबन्धों की ओर अग्रसर हो रहा है जिनमें प्रभाकर माचवे, यशपाल तथा नामवरसिंह आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

यदि देखा जाय तो हास्यविनोद मनुष्य की सहज वृत्ति है। जीवन के व्यस्त कार्यव्यापार से ऊब जाने पर उसे घड़ी दो घड़ी इसी मज़ाक की भी इच्छा होती है। हास्यविनोद से शून्य जीवन सर्वथा रुक्ष एवं निष्प्राण सा रह जाता है। इसीलिए साहित्य में भी हास्यविनोद के तत्त्वों का समावेश नितान्त अपेक्षित है। किसी भी देश एवं काल का साहित्य इसके बिना अधूरा है। ऋग्वेद जैसे प्राचीनतम ग्रन्थ में भी कहीं-कहीं सरल हास्य की मृदुल हिलोरें हृदय को झकझोर देती हैं। एक स्थान पर तो वेदपाठ करने वाले ब्रह्मचारियों को बरसाती मेंढक कहकर उनकी खूब खिल्ली उड़ाई गई है। अतः यह निर्विवाद है कि एक उत्कृष्ट साहित्यकार जहाँ मानव-हृदय में गहरी टीस उत्पन्न कर देता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ वह व्यंग्य एवं विनोद के छींटे बरसाकर हँसी में लोटपोट कर देना भी भलीभाँति जानता है।

इन्हीं विचारों ने लेखक को इस पुस्तक की रचना के लिए प्रेरित एवं बाध्य किया है। वस्तुतः ये निबन्ध मेरे जीवन के अवकाशक्षणों की देन हैं। इनके विषयों का चयन सामान्य जीवन से ही हुआ है। इनमें यथासंभव हास्य एवं विनोद की सामग्री जुटाने का प्रयास मिलेगा। जीवन के अनेक पहलुओं अथवा कार्यव्यापारों पर कहीं-कहीं चोट अथवा तनज़ का उपक्रम भी मिलेगा परन्तु लेखक की यह प्रवृत्ति किसी प्रकार के पक्षपात एवं अरुचि की प्रतिक्रिया नहीं है। उसका मुख्य उद्देश्य तो पाठक के मन में केवल गुदगुदी-सी पैदा करना एवं थोड़ी देर के लिए उसे जीवन के गम्भीर वातावरण से तटस्थ करना है। स्मरण रहे कि इस पुस्तक की सभी घटनाएँ एवं स्थल वा पात्र काल्पनिक हैं। जो कुछ भी किसी के सम्बन्ध में लिखा गया है, उसमें मेरा कोई 'मोटिव' नहीं है। यह तो मेरे धूमिल विचारों का अनर्गल प्रवाहमात्र ही समझना चाहिये। चिरकाल से इन बिखरे हुए मनोवेगों को मूर्त रूप देने की लालसा रह-रहकर बलवती होती थी जिसका सक्रिय परिणाम पुस्तकाकार हो रहा है। इस सम्बन्ध में मुझे श्री देवीदास जी से विशेष प्रेरणा मिलती रही जिसके लिये उनका आभार मानता हूँ। प्रकाशक महोदय श्री सन्त साहिब ने भी पुस्तक के प्रकाशन में सुरुचि एवं लगन का परिचय दिया है, इसलिए उनका भी धन्यवाद करता हूँ। अन्त में इस लघु प्रयास को विज्ञ पाठकों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औदार्य तथा सहानुभूति पर छोड़ते हुए महाकवि कालिदास के शब्दों में ही अपने कथन की इतिश्री करता हूँ—

"परिहास विजल्पितं सखे परमार्थेन न गृह्यतां वचः।"

वसंत पंचमी, १९५८ **संसारचन्द्र**

अम्बाला छावनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१.	सटक सीताराम	१
२.	स्कूल खोलिए	१३
३.	सुनाइए क्या हाल है ?	२३
४.	नराणां नापितो धूर्तः	३३
५.	अम्बाला	४१
६.	मकान	४९
७.	भोजन	५९
८.	बिजली का पङ्खा	६९
९.	श्रीमती जी	७९
१०.	फिल्मची और फिल्म स्टार	८९
११.	शराब की बोतल	१०१
१२.	भैंस	११३
१३.	चाय	१२३
१४.	भूख हड़ताल	१३१
१५.	भय का राज्य	१३९
१६.	शादी एजेंसी	१४९
१७.	लाल भुजक्कड़	१५९

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सटक सीताराम

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक अंग्रेज़ फिलास्फर का कथन है कि संसार का प्रत्येक मनुष्य पागल है। एक जर्मन डाक्टर ने वैज्ञानिक खोज के आधार पर सिद्ध किया है कि प्रतिभाशाली मनुष्य और पागल एक ही थैली के चट्टे-बट्टे होते हैं। वस्तुतः इन दोनों के मध्य की विभाजक-रेखा नितान्त पतली होती है। प्रातिभ व्यक्ति को यदि एक आंच और दी जाय तो वह पूरा पागल हो जायगा। आप देखते हैं कि हर एक प्राणी को प्रायः कोई न कोई ख़ब्त सवार होता है। किसी को पढ़ने का शौक इतना बढ़ जाता है कि जुनूं की हद तक पहुँच जाता है। किसी को गाने की धुन मतवाला बना देती है। किसी को घूमने का चस्का है, तो किसी को कोई और लत लग जाती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। तात्पर्य यह है कि हम सब किसी न किसी लटक के शिकार होकर ही रहते हैं। किसी व्यक्ति-विशेष में जितनी प्रतिभा की मात्रा अधिक होती है, उतनी ही उसकी लगन गम्भीर होती है। जिन आदमियों का दिमाग़ चल जाता है या जिन्हें डाक्टर पागल होने का फतवा दे देते हैं, उनकी धुन अथवा लगन तो चरमसीमा तक पहुँच जाती है। बहुत बार ऐसे लोग बड़े पते की बात कह देते हैं और कई बार तो ऐसी फबती कसते हैं कि सुनने वाला अवाक् रह जाता है। उस वक्त किसी कवि का यह शेयर बरबस याद आ जाता है:——

अक्ल की सब पुख्ताकारी तेरे दीवाने में है

हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध नेता स्वर्गीय मौलाना मुहम्मद अली जब कैम्ब्रेज विश्वविद्यालय में थे तो एक दिन उन्हें मछली का शिकार खेलने की सूझी। वह सुदूर देहात में चले गये जिसके पास ही एक छोटा सा नाला बह रहा था। उसके थोड़ी ही दूर एक स्याह रंग की इमारत खड़ी थी, जो वास्तव में पागलखाना था। मौलाना इस इमारत से बिल्कुल अपरिचित थे। दिनभर मेहनत करने के बाद भी वे मछली पकड़ने में सफलमनोरथ न हो सके। अन्त में डोरी-काँटा हाथ में लेकर मौलाना निराश वापिस लौटे। जब वह पागलखाना की इमारत के पास से गुज़र रहे थे, तो एक पागल खिड़की की सलाखें पकड़े खड़ा था। उसने मुहम्मद अली से पूछा कि तुम कौन हो और इधर क्या करने आये हो? मौलाना ने उत्तर दिया कि मैं हिन्दुस्तानी हूँ और यहाँ नाले पर मछलियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पकड़ने आया था। पागल ने पूछा—तो क्या कोई हाथ लगी ? मौलाना ने निराश-भाव से सिर हिलाया। पागल छूटते ही बोला—तो फिर बाहर क्या कर रहे हो, अन्दर चले आओ। मौलाना मुहम्मद अली पागल की इस करारी चोट पर खिलखिलाकर हँस पड़े।

बरेली के पागलखाने का किस्सा इससे भी अधिक विचित्र और दिलचस्प है। एक पागल महाशय पागलखाने की निचली मंज़िल की एक कोठरी में रहते थे। उन्हें यह ख़ब्त था कि मैं पैगम्बर हूँ और परमात्मा ने मुझे लोगों का उद्धार करने के लिए भेजा है। वे पैगम्बरी को एक पवित्र इमानत समझते थे। इसलिए जो भी विज़िटर उनकी कोठरी के पास खड़ा होता था, उसके आगे वे अपनी पैगम्बरी का एलान करते थे। पागलखाने की दूसरी मंज़िल पर ठीक उसी कोठरी के ऊपर एक और पागल सज्जन रहते थे, जो अपने आपको ख़ुदा समझे बैठे थे। वे बहुत कम बोलते थे। कभी-कभी ही भविष्यवाणी करते थे, जिससे विज़ि-टरों का मन बहल जाता था।

एक दिन पैगम्बर साहिब विज़िटरों के एक जत्थे के सामने एक लच्छेदार भाषण झाड़ रहे थे। अरे लोगो! मेरी तरफ देखो। मैं संसार में आपका उद्धार करने के लिए आया हूँ। आज चारों तरफ पाप और बुराई का ही दौरदौरा है। सच्चाई की अपेक्षा झूठ का पल्ला भारी हो रहा है। निर्धन पिस रहे हैं और धनी मौज उड़ा रहे हैं। इन सब बुराइयों का नाश करने के लिए ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुदा ने मुझे भेजा है ।

दूसरी मंज़िल पर खुदा साहिब भी यह भाषण सुन रहे थे । ज्यों-ज्यों पैगम्बर साहिब के लेक्चर में गर्मी आती जाती थी त्यों-त्यों खुदा साहिब भी ताव खाते जाते थे । आखिर उन्होंने पानी का भरा हुआ एक मटका पैगम्बर साहिब के सिर पर दे मारा और बोले——ओ ईमान वालो, खबरदार ! इस झूठे और फरेबी की बातों में न आना । यह तुम्हें धोखा दे रहा है । मैंने इसे कभी पैगम्बर बनाकर नहीं भेजा । यह सिर्फ मेरे नाम को एक्सप्ला-यट (expioit) कर रहा है ।

प्रायः १९३४ की बात है । मैं कुछ मित्रों के साथ कराची गया । कराची के पास ही गिद्दू बन्दर एक छोटा सा स्टेशन है और इसके निकट ही इसी नाम वाला एक गाँव है, जहाँ उन दिनों सिन्ध गवर्नमेंट का सरकारी पागलखाना था । हमने सुपरिंटेंडेंट साहिब से आज्ञा ली और पागलखाना देखने के लिए अन्दर गये। हमने क्या देखा कि सूटबूट पहने एक सुंदर नौजवान अपनी कोठरी की खिड़की से हमें टुकर-टुकर निहार रहा है । जब हम उसके पास से गुज़रने लगे तो उसने इशारे से हमें बुलाया और अंग्रेज़ी में कहा कि देखो साहिब, क्या मैं आपको पागल दिखाई देता हूँ । ये लोग स्वयं पागल हैं जो मुझ अच्छे-भले को पागलखाने में ले आये हैं । मैं लाख विनती करता हूँ परन्तु पागलखाने के कर्म-चारियों के कान पर जूँ तक नहीं रेंगती । दया करके मुझे तीन पैसे दीजिये ताकि मैं अपने बड़े भाई को पत्र लिखूँ और वह मुझे यहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से ले जायें। उसकी सारपूर्ण बातचीत सुनकर हम बहुत प्रभावित हुए और हममें से किसी एक ने उसे झट तीन पैसे दे दिये। इतने में दूर खड़ा एक सिपाही झट वहाँ पहुँच गया और पूछने लगा कि तुमने पागल को पैसे क्यों दिये हैं। हमने उत्तर दिया कि यह तो बिल्कुल ठीक है। उसने सुनाया कि यह पागल प्रत्येक मनुष्य से तीन पैसे माँगता है और हर समय पत्र लिखता रहता है। यही तो इसका पागलपन है।

यह तो हुआ परन्तु अभी तक मुझे किसी पागल से वास्ता नहीं पड़ा था। इसलिए पागलों के कारनामों से मैं व्यक्तिगत रूप से प्रायः परिचित न था। गत वर्ष मुझे दिल्ली जाना पड़ा। जब भी मैं दिल्ली जाता हूँ तो अपने एक मित्र के यहाँ ठहरता हूँ। एक रात को वहाँ सोया तो रातभर भारी बेचैनी होती रही। मेरे साथ वाले कमरे से हर दस मिनट के बाद 'सटक सीताराम' की आवाज़ आती थी। यह आवाज़ इतनी भयानक थी कि मैं हड़बड़ाकर चौंक उठता था। दूसरे दिन मैंने अपने मित्र से बात की। उन्होंने आह भरकर कहा--कि क्या पूछते हो। करनाल में मेरे एक रिश्तेदार हैं। उनका एक बीस-बाइस साल का लड़का है जिसे भूत सवार हो गया। मन्त्रों का निरन्तर जप करते हुए उसका दिमाग जवाब दे गया। घरवालों ने इसे इलाज के लिए मेरे पास भेज दिया है। बड़े-बड़े अनुभवी डाक्टरों ने इलाज किया परन्तु 'मरज़ बढ़ता गया ज्यूं-ज्यूं दवा की' वाली बात है। वैसे तो किसी को कुछ नहीं कहता। केवल थोड़े-थोड़े समय के बाद 'सटक सीता-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम' कहता है। अब एक ही उपाय है। कृपया इसे अपने साथ ले जाइये। मैंने इसके पिता को तार दे दिया है। वे करनाल स्टेशन से इसे सम्भाल लेंगे। मित्र का यह कहना था कि मैंने झट हाँ कह दी और सटक सीताराम को साथ लेकर स्टेशन की तैयारी करने लगा।

हम दोनों रिक्शा पर बैठ गये। रिक्शावाला थोड़ी दूर चला और रिक्शा ठहराकर कहने लगा––बाबू साहिब, ज़रा ठहरिये मैं बीड़ी ले आऊँ। रिक्शावाला यह कहते हुए एक दुकान की ओर लपका। मैं भी रिक्शा से उतरकर पान लेने लगा कि पीछे से ज़ोर से 'सटक सीताराम' की आवाज़ आई। मुड़कर देखा तो मेरा हमसफर उछलकर रिक्शा की गद्दी पर बैठ चुका था और बड़े जोश से रिक्शा चला रहा था। फिर क्या था, रिक्शा-वाले ने चोर-चोर का शोर मचाया और उसके पीछे भागने लगा। मैं रिक्शावाले के पीछे हो लिया और ज़ोर से पुकारने लगा–गोविन्दराम (पागल का नाम) ठहर जाओ। मेरा चिल्लाना व्यर्थ था। गोविन्दराम वायु के वेग की तरह रिक्शा को उड़ाता हुआ ले जा रहा था। रिक्शावाले का चोर-चोर और मेरा गोविन्दराम ठहर जाओ का शोर सुनकर एक वरदीपोश कान्स्टे-बल भी हमारे पीछे लग गया। अब रिक्शावाला, मैं और सिपाही तीनों सरपट दौड़ रहे थे और गोविन्दराम हमें लीड कर रहा था। रिक्शावाले को अपनी रिक्शा का, मुझे गोविन्दराम का और पुलिस कान्स्टेबल को हम तीनों का फिकर था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर का लाख शुकर कि उस समय सड़क पर बहुत ही कम ट्रेफिक था। केवल इक्का-दुक्का आदमी दिखाई देता था। गोविन्दराम मानो रिक्शा चलाने के फ़न का चमत्कार दिखा रहा था। थोड़ी-थोड़ी देर के बाद मेरा बहादुर 'सटक सीताराम' का नारा लगाता था, जिसे सुनकर प्रत्येक राह चलने वाला ठिठक जाता था और उसकी सहमी हुई निगाहें दूर तक उसका पीछा करती थीं। अन्त में धड़ाम के साथ रिक्शा सड़क की नाली में जा गिरी और गोविन्दराम झटका खाकर नाली से दो गज़ परे जा पड़ा। रिक्शा बेचारी नाली को न फांद सकी और घायल होकर औंधे-मुँह जा पड़ी। मैंने सोचा कि गोविन्दराम का बोलो राम हो गया है, मगर मेरे शेर ने झट उठकर 'सटक सीताराम' कहा और खामोश होकर एक तरफ खड़ा हो गया।

अब जनाब, रिक्शावाला और पोलीस कान्स्टेबल मुझे यम-राज दिखाई देने लगे। पहला तो अपनी टूटी हुई रिक्शा को देख-कर सर पर सवार हो रहा था और दूसरा थाने की ओर घसीट रहा था। मैंने रिक्शावाले को दस रुपए का नोट देकर अपना पिंड छुड़ाया और कान्स्टेबल साहिब की मिन्नत की और कहा कि मैं परदेसी हूँ और सटक सीताराम के ज़ुल्म का शिकार हूँ। कान्स्टेबल मेरी बातों से पसीज गया और मैं गोविन्दराम को लेकर स्टेशन पर पहुँचा।

गोविन्दराम को मैंने अपने पास बैंच पर बिठा लिया और उसकी प्रत्येक हरकत पर कड़ी निगरानी रखने लगा। अब वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिल्कुल मौन और शान्त था। थोड़ी देर के बाद गाड़ी आ गई। गाड़ी के सभी डिब्बे खचाखच भरे हुए थे मगर मैंने किसी-न-किसी तरह गोविन्दराम को अन्दर धकेल दिया और स्वयं भी घुसड़-घसड़ कर डिब्बे में प्रविष्ट हो गया।

गाड़ी का डिब्बा तो काफी बड़ा था परन्तु मुसाफिरों का यह हाल था कि एक-दूसरे पर गिरे पड़ते थे। जब गाड़ी गतिशील हुई तो गोविन्दराम ने ज़ोर से 'सटक सीताराम' का नारा लगाया जिसकी तुमुल ध्वनि सारे डिब्बे में गूँज गई। बच्चे अपनी माताओं से लिपट गये। जो मुसाफिर लेटे हुए थे वे डरकर बैठ गये। जो बैठे हुए थे वे खड़े हो गये। जो खड़े थे, उन्होंने गिरना शुरू कर दिया। मेरे देखते-देखते मेरे पास की सीटों पर बैठे हुए मुसाफिर सुकड़ने लगे। अब जगह की तंगी न रही और हम दोनों एक खाली सीट पर डट गये।

भगवान् का लाख शुकर है कि करनाल पहुँचने तक कोई विशेष घटना न हुई। करनाल स्टेशन पर गोविन्दराम के पिता जी विद्यमान थे। जब गाड़ी स्टेशन पर रुकी तो वे ज़ोर-ज़ोर से गोविन्दराम-गोविन्दराम पुकार रहे थे। लड़के के कानों में जब पिता की आवाज़ पड़ी तो उसने तार-स्वर से 'सटक सीताराम' कहा। उसके पिता जी मुस्कराते हुए हमारे डिब्बे के पास आ गये। मैं और गोविन्दराम दोनों गाड़ी से उतरे। मुझे देखकर वे आतुर भाव से बोले——लड़के ने रास्ते में तंग तो नहीं किया। मैंने झेंपते हुए कहा——नहीं जी, कोई विशेष कष्ट नहीं दिया। मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सुनकर गोविन्दराम ने 'सटक सीताराम' कहा और अपने पिता के साथ चल दिया। मैंने संतोष की सांस ली। जान बची औरलाखों पाये समझकर डिब्बे में दाखिल हो गया।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूल खोलिए

★

CC-0: In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्र विद्यावाचस्पति
चन्द्रलोक, जवाहर नगर
दिल्ली द्वारा
गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय को
भेंट

नवयुवक ! मैंने तुम्हारी दर्दभरी कहानी सुनी है। बेकारी का भूत हाथ धोकर तुम्हारे पीछे पड़ गया है। तुम बी० ए० पास हो फिर भी तुम्हें कहीं नौकरी नहीं मिली। तुमने पेट की ज्वाला को शान्त करने के लिए कई पापड़ बेले। तुमने लाण्डरी खोली, पुराने नोटों को नये नोटों में बदलने का धंधा किया। वकील के एजेण्ट बने, अखबारें बेचीं परन्तु दुर्भाग्य ने कहीं पीछा न छोड़ा। इसीलिए तुम्हारा उत्साह बुझ गया है। तुम्हारे चेहरे पर उदासी-युक्त गम्भीरता छा रही है। इसमें दोष तुम्हारा नहीं वरन् तुम्हारे सलाहकारों का है। वास्तव में तुम्हें कोई रहनुमा मिला ही नहीं। अब तुम मेरे पास आये हो तो लो, मैं तुम्हारी बेकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के भूत को चुटकी में भगा देता हूँ। यदि मूड में आ जाऊँ तो शहर-भर के बेकारों को काम दिला सकता हूँ।

तुम फटी-फटी नज़रों से मुझे देख रहे हो कि मेरे पास कौन सी जादू की पुड़िया या अलादीन का चिराग़ है जो मैं आँख झपकते ही यह चमत्कार दिखा दूँगा। निराश युवक! सच है कि मेरे पास इन दोनों में से कोई भी चीज़ नहीं परन्तु मेरे पास इन से भी एक अचूक नुस्खा है। इस गली के दक्षिण की ओर देखो। गली के मध्य भाग में थोड़े-थोड़े फासले पर रस्सियों से टांके हुए रंगबिरंगे कपड़े लहरा रहे हैं। तुम सोच रहे हो कि शायद मुहल्ले की स्त्रियों ने अपनी चुनरियां सुखाने के लिए लटका रखी हैं। तुम भूल रहे हो। भाई जान! ये तो स्कूलों के साइनबोर्ड हैं। पहला स्कूल जो उस हलवाई की दुकान के ठीक सामने है जनता हाई स्कूल है। इस स्कूल की कहानी बड़ी विचित्र तथा दिलचस्प है। इस हलवाई का आठ जमात पढ़ा हुआ छोटा भाई दुकान पर काम करता था। किसी बात पर दोनों भाइयों में कहा-सुनी हो गई। छोटे भाई ने तमककर कहा—अरे साले, अगर तूने मुझे ज़्यादा तंग किया तो तुम्हारे सामने स्कूल खोल लूंगा। लड़का मेहनती था, जो कुछ कहा कर दिखाया। अब वह मज़े से काम चला रहा है और बड़े भाई की छाती पर मूंग दल रहा है। बड़ा भाई तो अपना सिर चूल्हे में दे रहा है ओर छोटा गर्व से ऊँचा किए हुए है।

अब पीछे मुड़ो और इस गली के उत्तर की ओर देखो, वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हें कम से कम चार स्कूल दिखाई देंगे। अन्तिम स्कूल नेहरू हाई स्कूल के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अध्यक्ष प्रिंसिपल राजाराम हैं। तुम हैरान क्यों होते हो, इन सब स्कूलों के मुखिया अपने आपको प्रिंसिपल कहते हैं। इनका दर्जा सबसे ऊँचा है। प्रिंसिपल राजाराम ने तो ए० बी० सी० एल० टी० न जाने कितनी-कितनी डिगरियाँ अपने शुभ नाम के साथ टाँक रखी हैं। विद्वान् इतने हैं कि यदि अंग्रेज़ी पढ़ाते हुए कोई स्पैलिंग ग़लत हो जाय तो तनिक नहीं घबराते। मूछों पर हाथ फेरकर लड़कों पर रोब जमाते हुए झट कह उठते हैं कि फ्रैंच के रूल के अनुसार यही ठीक है।

नेहरू हाई स्कूल के साथ वाला स्कूल एक रिक्शा वाले की हिम्मत का फल है। मैट्रिक पास होकर मारा-मारा फिरता था। तंग आकर रिक्शा वाला बना। रिक्शा चलाते-चलाते इसका अंग-अंग चूर हो जाता था पर मरता क्या न करता। कुछ समय के बाद फेफड़े कमज़ोर हो गए और बिस्तर पर पड़ गया। इलाज के लिए डाक्टर की शरण में जाना पड़ा। डाक्टर बड़ा दूरदर्शी था, बोल उठा—अगर जान चाहते हो तो रिक्शा मत चलाओ। अगर तुम्हें चलाने का चस्का ही पड़ गया है, तो स्कूल चलाओ। अब उसने डाक्टर की राय पर चलते हुए स्कूल खोल लिया है और चैन की बंसी बजा रहा है। पहले सवारियों की घुड़कियाँ सुनता था, अब स्वयं लड़कों पर डाँट-फटकार करता है। पहले सारा दिन टाँगें चला-चला कर रूखी-सूखी खाता था, अब बिना हाथ हिलाये तर निवाले खा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरे भाई ! तुम अभी तक मुझे विस्फारित नेत्रों से देख रहे हो। मालूम होता है कि तुम इस शहर में अभी नये हो। ज़रा इस शहर का चक्कर तो काटो। तुम्हें कदम-कदम पर ऐसे स्कूल मिलेंगे। यह चीज़ यहाँ की कॉटेज इण्डस्ट्री बन गई है। देहरादून के चावल प्रसिद्ध हैं। संगतरों के सम्बन्ध में नागपुर का नाम आता है। बनारस का लंगड़ा आम विशेष महत्त्व रखता है और यह शहर नाना प्रकार के स्कूलों के कारण सबसे बाज़ी ले गया है।

नवयुवक, अभी तक तुम्हारी निस्तेज आँखों में परेशानी और बेबसी का सागर लहरा रहा है। हाँ समझा, तुम इसलिए चिन्तित हो कि तुम्हारे पास सरमाया नहीं है। किस कम्बख्त ने तुम्हें कहा है कि इन स्कूलों के लिए पूंजी का होना आवश्यक है। इन स्कूलों को चलाने के लिए तो झूठ की ज़रूरत है। अरे भोलेभाले नौजवान ! यदि तुम्हें झूठ बोलना नहीं आता, तो मुझे अफसोस है कि मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता। और स्मरण रहे कि यहाँ घटिया दर्जे के झूठ से काम नहीं चलेगा वरन् करारा और टकसाली झूठ बोलना पड़ेगा। करारा और टकसाली झूठ क्या होता है, यह एक भिन्न विषय है, जिसकी व्याख्या इस समय उचित नहीं है। वास्तव में यह एक ऐसा भयानक हथियार है, जो मैं इस समय तुम्हारे हाथ में देना नहीं चाहता परन्तु यदि तुम मेरी बातें ध्यान से सुनोगे तो तुम इसकी थोड़ी सी झलक पा जाओगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तरह के स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का अव्वल तो सिरे से भेजा होता ही नहीं और जिनके होता है उनमें फासफोरस का कण भी नहीं होता। ऐसे लड़के बहुत कम मिलेंगे जिनकी खोपड़ी में भेजा भी हो और फासफोरस भी। तुम ऐसे लड़कों के कानों में प्रतिदिन ठोंसते रहो कि तुम्हारा तजुरबा तीस साल का है। ऐसे विद्यार्थी, जिनके दिमाग़ का खाना खाली होगा, तत्काल ही तुम पर ईमान ले आयेंगे। यदि कोई मनचला पूछ बैठे कि मास्टर साहिब, आपकी उमर तो पच्चीस साल है और तजुरबा तीस साल। यह क्या बात है? तो चेहरे पर जलाल पैदा करके और आवाज़ को गम्भीर बनाकर कहना कि पच्चीस साल का पूर्वजन्म का और पाँच साल का इस जन्म का मिलकर तीस ही तो है। अब आप के ब्रह्मवाक्य को कौन झुठला सकता है। जन्म पहला हो या दूसरा, आपके तजुरबे से कौन इन्कार कर सकता है। अभी मैंने केवल टकसाली झूठ का एक छोटा सा नमूना दिखाया है। आप स्वयं बुद्धिमान् हैं, बुद्धिमान् को तो इशारा ही काफ़ी होता है।

आप सोचते हैं कि आपको अलजबरा नहीं आता। आपको किसने कहा है कि इन स्कूलों में अलजबरा पढ़ाया जाता है। इनमें तो केवल अलजबरे का ज़िकर होता है। आपको चाहिए कि मौका मिलते ही अलजबरे के विरुद्ध एक धूआँधार भाषण झाड़ दें कि यह कैसी निकम्मी पुस्तक है। इसको खोलते ही मनुष्य एक्स, वाई और ज़ेड के चक्रव्यूह में फंस जाता है कि दिन तो क्या महीनों तक निकल नहीं सकता। दैनिक जीवन में अल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जबरा किस काम आता है ? अलजबरे के अध्ययन का श्रीगणेश करते ही सिर के बाल झड़ने आरम्भ हो जाते हैं। थोड़ा अभ्यास करने पर तो आदमी गंजा हो जाता है। आपको सैकड़ों प्रोफैसर और टीचर ऐसे मिलेंगे, जिनकी चन्दिया अण्डे की तरह साफ होती है। यह सब अलजबरे का ही प्रसाद है। अलजबरे के सवाल का आरम्भ कितना पेचीदा और भूलभुल्लैयों में डालने वाला होता है। कल्पना करो कि यह एक्स के बराबर है। भला तुम ही बताओ कि जिस वस्तु की नींव ही कल्पना पर हो उसका विश्वास कौन करे।

जब लड़के आपका तर्कपूर्ण भाषण सुनेंगे तो उनके कानों की खिड़कियाँ खुल जायेंगी। वे आपको श्रद्धा की नज़रों से देखेंगे क्योंकि लड़कों की अधिकांश संख्या प्रायः अलजबरे को अपना शत्रु समझती है। जब आप उनके शत्रु के विरुद्ध जहाद का बीड़ा उठायेंगे तो वे आपके भक्त बन जायेंगे क्योंकि अंग्रेज़ी की एक उक्ति के अनुसार शत्रु का शत्रु मित्र होता है और जब लड़के आपके एक बार मित्र बन गए तो बस समझ लो कि पौ बारह हैं।

अहा ! अब आप स्थान का किस्सा ले बैठे। ज़रा इस शहर के स्कूलों की छानबीन करो तो यह समस्या भी स्वयं ही हल हो जायगी। गली के अन्त तक चले जाओ। क्या देखोगे कि जहाँ दिन को किताबें बेचने का धन्धा था वहाँ रात को स्कूल टपक पड़ा है। जहाँ कोई स्त्री दिन में रसोई बनाती है तो चन्द घण्टों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R.A द.३/६ ३६,३१२

के बाद वह रसोई स्कूल का रूप धारण कर लेती है। तुम्हारे पास कोई बरामदा, दालान कुछ तो होगा ही, दीवानखाना नहीं तो गुसलखाना ही सही। अब समझा आप सचमुच इस शहर में नये हैं और धर्मशाला में ठहरे हुए हैं। तो धर्मशाला को ही स्कूल बनाइये। यदि वहाँ काम नहीं बनता तो किसी मन्दिर की तलाश कीजिए। यदि वहाँ से टका सा जवाब मिले तो किसी पेड़ या मैदान को ढूँढिये। अगर वह ठीक नहीं तो श्मशान का रुख़ कीजिये। मुझे विश्वास है कि कहीं न कहीं तुम्हारी दाल गल जायगी।

नौजवान ! अब तुम जा सकते हो। आज से ही झूठ बोलने की प्रैक्टिस शुरू कर दो। जब तुमने निर्भीक होकर झूठ बोलना आरम्भ कर दिया तो सफलता तुम्हारे कदम चूमेगी। एक सप्ताह के बाद फिर आना। यदि तुम अपने काम में पूरे उतरे तो फिर तुम्हें बताऊँगा कि इन स्कूलों के कर्णधार करारा झूठ कैसे बोलते हैं ?

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनाइए क्या हाल है ?

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीदड़ की जब मौत आती है तो वह शहर की तरफ भागता है। मेरी जो शामत आई तो मैं उस गली में मकान ले बैठा जहाँ सब के सब रिटायर्ड बजुर्ग रहते हैं। अब आप बार-बार पूछते हैं कि मैं सिर्फ रात को दिखाई देता हूँ। दिन को घर से बाहर क्यों नहीं निकलता। आपकी तरह कई मित्र व्यंग्य भी बरसाते हैं कि इतनी बड़ी उमर में रात-दिन घर में घुसे रहना ठीक नहीं। दूसरे साथी मुझ पर पत्नीभक्त होने की फबती भी कसते हैं। अब क्या बताऊँ कि आजकल मैं खरगोश का जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। बल्कि सचमुच बिलकुल खरगोश हूँ। यह गरीब जानवर दिनभर चील, बाज़, साँप और नेवले के भय से झाड़ी में दुबका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहता है। मैं इन रिटायर्ड महाशयों के डर से बाहर नहीं आता क्योंकि ये सब के सब परले सिरे के बातूनी और कानों के रसिया हैं। जब कभी मुझे मिलते हैं तो घण्टों अपनी रामकहानी से मेरा नाक में दम कर देते हैं। अब सुनिये ! गत रविवार को मैं नन्हें की दवाई लेने के लिये घर से निकला। पहली मुठभेड़ बख्शी अविनाशीराम से हुई। गली-मुहल्ले के सब इन्हें बख्शी बख्शी कहते हैं। महकमा माल में तीस साल नौकरी करने के बाद रिटायर हुए हैं। उमर साठ साल के लगभग होगी। चन्दिया बिल्कुल बिल्लौर की तरह साफ और नाक तोते की तरह टेढ़ी। भगवान् की लीला न्यारी है कि इस उमर में इन पर कवि बनने का भूत सवार हो गया है। हालाँकि यह खब्त इन्हें अठारह-बीस साल की उमर में लगना चाहिये था। मैं दबे शब्दों में कई बार विनती कर चुका हूँ कि बख्शी साहब कविता नौजवानों का चोंचला है। दिमाग़ी ऐयाशी का ही दूसरा नाम कविता है। इस उमर में जब कि वल्वले ठण्डे पड़ जाते हैं और उमंगों पर ओस बरसती है क्या खाक कविता होती है। मगर वे मेरी बातों को हँसी में उड़ा देते हैं। अब बताओ भला मैं अपनी किस्मत को क्यों न कोसूँ जब कि अपने काव्य की स्तुति के लिए सारे मुहल्ले में यदि कोई उन्हें दिखाई दिया है तो वह मैं बदनसीब हूँ। मैं जो इनके दरवाज़े के पास से गुज़रा तो ड्योढ़ी में पलंग पर बैठे थे और हुक्के की नली मुँह में लिये इक लम्बी-चौड़ी क़ापी की वरकगिरदानी कर रहे थे। उन्होंने जो चश्मा नाक से सरकाकर मुझे देखा तो मेरे रोंगटे खड़े हो गए, मगर उनकी बाछें खिल गईं। छूटते ही फर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माया——मास्टर साहिब ! सुनाइये क्या हाल हैं ? आप दो-तीन दिन से नज़र ही नहीं आये, ज़रा बात तो सुनिये। मैं कलेजा थामते हुए उनके पास गया तो मुझे कुर्सी पर बैठने का इशारा करते हुए कहने लगे—बुरा हो। मैंने हैरान होकर पूछा—किसका, मेरा या आपका ? हँसकर कहने लगे अजी इस कविता का। घंटों से सिर खपा रहा हूँ मगर कोई काम की चीज़ नहीं सूझती। यह कविता मैंने रातभर जागकर तैयार की है। आप काव्य-प्रेमी हैं इसलिए ज़रा सुनिये तो।

बख्शी साहिब ने कापी खोली तो कविता देखकर मेरा दम घुटने लगा। यह कविता कोई दस-बारह पृष्ठों पर फैली हुई थी। कविता क्या थी ? "कुछ न समझे खुदा करे कोई" वाला सिलसिला था। मैं बख्शी साहिब से पिण्ड छुडाने के लिए प्रत्येक पद पर दाद देता था, मगर यह दाद मेरे लिए घातक सिद्ध हो रही थी। मैं ज्योंही कविता का गुणगान करता था, बख्शी साहिब दुगने जोश-खरोश के साथ एक-एक पंक्ति को पाँच-पाँच, छः-छः बार पढ़-पढ़कर झूम उठते थे। उनके चेहरे पर एक विशेष प्रकार की मस्ती नाच रही थी। नेत्रों से उल्लास बरस रहा था जैसे वे खुशी से पागल हो रहे हों। कुछ समय के बाद मेरे धैर्य का बाँध टूटने लगा और मैंने यह कहते हुए "बख्शी साहिब बाकी कल, बाकी कल" गली में छलाँग लगा दी।

उससे आगे थोड़ी दूर मेजर चोपड़ा का मकान है। पच्चीस साल की फौजी नौकरी करने के बाद रिटायर हुए हैं। पचपन वर्ष की आयु है। पर्याप्त हृष्ट-पुष्ट प्रतीत होते हैं। प्रायः आँखें बन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके हर समय बैठक में आराम कुर्सी पर डटे रहते हैं। फिर भी इनकी आँख बचाकर निकल जाना कोई हँसी-खेल नहीं है। मैंने अपनी तरफ़ से बचाव के अनेक उपाय प्रयुक्त किये। उनके दरवाज़े के पास से दबे पाँव बिल्ली की चाल चला। कई बार साँस रोककर प्राणायाम करते हुए निकलने का प्रयत्न किया परंतु हर बार चोपड़ा साहिब के चक्कर में आ गया। ईश्वर जाने वह ज्योतिष जानते हैं या उनके सूँघने की शक्ति इतनी तीव्र है कि आँखें बन्द किए हुए उनको मेरे आने का पता चल जाता है--

दिल की धड़कन मुझे पैग़ाम देती है तेरा--
तुझ से पहले तेरे आने की खबर होती है।

मैंने मेजर साहिब को देखा तो वे अपने स्वभाव के अनुसार आँखें बन्द किये हुए आराम कुर्सी पर शोभा दे रहे थे। मैंने तत्काल साँस रोक ली और फूँक फूँक कर कदम रखने लगा। मुँह दूसरी तरफ फेरकर तन्मयता से आगे बढ़ा। मुझे पूरा विश्वास था कि आज चोपड़ा साहिब मात खा जायेंगे। अभी यह विचार आया ही था कि अचानक पीछे से बम फटा। अहा ! मास्टर साहिब हैं, मुझे पता है कि आपके बाज़ार जाने का यही समय है। सुनाइए क्या हाल है ? मैंने कहा--भगवान् की कृपा है, ज़रा नन्हें की दवाई लेने के लिए बाज़ार जा रहा हूँ। कहने लगे अजी, छोड़ो दवाई को। दवाई कहीं भागी नहीं जाती। आइये बैठिए। मैं उनकी बैठक में गया तो मेरे हाथ में शीशी देखकर कहने लगे--मास्टर साहिब, इतने समझदार होकर आप दवाइयों के चक्कर में पड़े हुए हैं। आपने सुना नहीं कि संसार में जितने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगी प्रतिदिन बीमारी से चल बसते हैं उससे दुगने दवाइयों से। जितनी दवाइयाँ बढ़ रही हैं उसी अनुपात से रोगियों की संख्या में भी भारी वृद्धि हो रही है। सरकार यदि मेरी सुने तो समूचे देश के दवाइयों के स्टाक नष्ट करवा दे। यदि एक भी रोगी बच जाय तो मेरा जिम्मा। मैं हूँ–हाँ करके पिंड छुड़ाना चाहता था कि वे बातचीत की दिशा बदलकर कहने लगे कि आपने मेरा वह बुलडाग देखा है जो अभी-अभी मेरे भतीजे कैलाश ने मुझे देहरादून से भेजा है ? मास्टर साहब, क्या कहने हैं इस कुत्ते के। बड़ा समझदार और पूरा आज्ञाकारी है। यह कहकर उन्होंने मेरी पीठ वाले कोने की तरफ इशारा किया। मैंने घूमकर देखा तो एक भयानक शक्लवाला कद्दावर-कुत्ता जबड़े खोले हुए रोषपूर्ण नज़रों से मुझे घूर रहा था। उसे देखकर मेरा दम खुश्क हो गया। मगर मेजर साहिब की ज़बान की गति कुत्ते के गुणगान करने में तनिक भी न थमती थी। मुस्कराकर कहते जाते थे कि आपने कुत्तों की बहुत सी नसलें देखी होंगी परन्तु वे इससे कोसों दूर हैं। भौंकने को ही लीजिए। अधिकांश कुत्ते कितना अनर्गल और बेसुरा भौंकते हैं। ऐसे मालूम होता है सारा मगज़ ही चाट जायेंगे। फिर ये न दिन देखते हैं, न रात। जब जी में आया आरंभ कर दिया। कभी इसे भी भौंकते हुए सुनना। आवाज़ में वह रस और लोच है बस समझ लो कि संगीत का चश्मा उमड़ पड़ा हो। घंटों तक भौंकता रहे कानों को नीरस नहीं लगता। इस पर भी खूबी यह कि इसके भौंकने का समय निश्चित है। दिन-भर मौन धारण किये रहता है। इसके भौंकने की प्रवृत्ति प्रायः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्योदय से पूर्व और सूर्यास्त के बाद जागरूक होती है। फिर भौंकने का क्या कहना ! दो-तीन बार हल्की सी टफ़ टफ़ की आवाज़ निकालता है। चौकीदारी की चौकीदारी और संगीत का संगीत।

मैंने बहुत परेशान होकर कहा––मेजर साहिब, मुझे कुत्तों से कोई दिलचस्पी नहीं है। यदि सच पूछो तो मुझे इनसे स्वाभाविक घृणा है। मुझे चिन्तित देखकर वे कहने लगे––आप घबरा क्यों रहे हैं? यह सिर्फ भौंकता है। काटता हरगिज़ नहीं। आपने अंग्रेज़ी का मुहावरा नहीं सुना कि जो भौंकते हैं वे काटते नहीं। मैंने उत्तर दिया––मेजर साहिब, आपका कथन सर्वथा उचित है परन्तु इन कुत्तों का क्या भरोसा। कब कोई कुत्ता भौंकना बन्द कर दे और काटना शुरू कर दे। यह कहकर मैंने शीशी उठाई और तीर की भाँति दरवाज़े से निकल भागा परन्तु बार-बार पीछे देखता जाता था कि कहीं मेजर साहिब का बुलडाग मेरा पीछा तो नहीं कर रहा।

मत समझिये कि अभी गली खत्म हुई है और उसके साथ मेरी दर्दभरी कहानी समाप्त हुई है। ग़ालिब के कथन के अनुसार :––

हो चुकीं ग़ालिब बलाएं सब तमाम
एक मर्गे नागहानी और है

ग़ालिब को तो केवल मर्गे नागहानी का भय था मगर यहाँ मर्गे नागहानी से भी बढ़कर लाला रामरक्खा रिटायर्ड ओवरसीयर का दौलतखाना है जो गली के अन्तिम चौक पर स्थित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनकी आयु भली भाँति साठ को पार कर चुकी है। अनेक रोगों ने घेर रखा है। प्रायः चारपाई पर लेटे रहते हैं। मैंने जल्दी-जल्दी इनके मकान से गुज़रने का प्रयत्न किया मगर तत्काल पीछे से एक क्षीण एवं कमज़ोर आवाज़ सुनाई पड़ी--मास्टर साहिब, एक नज़र इधर भी। मैं आन की आन में उनके पास पहुँचा और शिष्टाचार के ढंग से पूछ बैठा कि सुनाइये क्या हाल है ? पता नहीं ये साहिब गिलाशिकवा करने का कोई बहाना ढूँढ रहे थे। ज्योंही मेरे मुँह से ये शब्द निकले, पके हुए फोड़े की तरह फूट पड़े और एक ही साँस में दर्जनभर बीमारियाँ गिना डालीं जिनका वे शिकार बन चुके थे। कहने लगे और तो खैर है लेकिन दो दिन से काजी साहब का भारी प्रकोप है। शौचगृह का सेवन करते-करते शरीर चकनाचूर हो गया है। पता नहीं कौन सी ऐसी चीज़ खा ली है कि पेट ठिकाने पर ही नहीं आता। मैंने कहा--किसी डाक्टर की सम्मति लीजिए। उत्तर मिला--कर चुका हूँ। किसी वैद्य या हकीम को दिखाइये--दिखा चुका हूँ। अमृतधारा के सम्बन्ध में क्या विचार है ? खा चुका हूँ। सतपुदीना कैसा रहेगा ? वह भी फाँक चुका हूँ। मैंने घबराकर कहा तो फिर तरबूज़ खाइये, और चल दिया।

जब डाक्टर के पास पहुँचा कि वह कब का जा चुका था। सिर लटकाये हुए घर को लौटा। रास्ताभर यह विचार रह-रह कर सता रहा था कि यदि एक बार फिर इन सज्जनों से भेंट हुई तो नन्हें का भगवान् ही रक्षक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नराणां नापितो धूर्तः

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाई हिन्द के हों या पाकिस्तान के, लाहौर के हों या अम्बाला के, सब के सब बातूनी तथा कानों के रसिया ज़रूर होते हैं। केवल थोड़ा सा ही अन्तर है। किसी की ज़बान कैंची की तरह चलती है, तो किसी की उस्तरे के समान। किसी की बातों में बुर्श जैसी नर्मी है, तो किसी के वार्तालाप में नश्तर जैसी तेज़ी। कोई सिर्फ शब्दों की हजामत बनाता है, तो कोई बाल की खाल उतारता है।

मीरपुर (जम्मू काश्मीर) की तबाही के बाद जिन चीजों की याद्र मुझे सता रही है, उनमें वहाँ के नाई भी हैं। कसम ले लो, क्या ही प्रतिभाशाली बुजुर्ग थे। राजा जी को हजामत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाने के लिये कहो तो छैनी खोलते-खोलते योरोपीय महायुद्ध पर एक लम्बी-चौड़ी भूमिका बाँध देते थे। हजामत बनाने के मध्य में जम्मू के शाही खान्दान के हालात, कण्ट्रोल से पैदा होने वाली मुसीबतों और आटे-दाल पर एक सारगर्भित भाषण झाड़ देते थे। उस्तरे की रगड़ और ज़बान की गति दोनों साथ-साथ चलती थीं। बातों में मिठास का यह हाल था कि यदि मुँह पर कहीं उस्तरे का चरका भी लग जाता तो दर्द का अनुमान तक न होता था। अवसरवादी इतने थे कि ज्यों ही शेव करते समय उस्तरा शाह रग़ पर पहुँचता तो झट किसी न किसी चीज़ की फरमाइश कर डालते थे। अब आप ही ख्याल करें कि जब उस्तरा शाह रग़ पर धरा हो, तो कौन कम्बख्त इन्कार करने का साहस कर सकता है।

आपने संस्कृत की यह प्रसिद्ध उक्ति तो सुनी होगी—"नराणां नापितो धूर्तः पक्षीनां चैव वायसः।" ज़रा ध्यान दीजिये कि इन शब्दों में कितना रहस्य छिपा हुआ है। यह सूक्तिकार कितना दूरदर्शी विद्वान् है। पक्षियों में कोयल, मोर, तोता, कबूतर, बाज़ आदि अनेकों विद्यमान हैं, पर उसकी अर्जुन-दृष्टि कौए पर ही केन्द्रित हो गई है। इसी तरह मनुष्यों के अनेकों पेशे हैं—दर्ज़ी, धोबी, सुनार, लुहार आदि क्या कुछ नहीं है, परन्तु सूक्तिकार का कृपापात्र केवल नाई ही बन सका है। वास्तव में नाई और कौए में गहरी समानता है। अपने-अपने सभ्य समाज में दोनों का कम महत्त्व नहीं है। कौओं की एकता प्रसिद्ध है। आपने देखा होगा कि श्राद्धों के दिनों में कौओं को बलियाँ भेंट की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती हैं। बलि मिलते ही कौआ जब तक काँय-काँय करके सारी बिरादरी को निमन्त्रण न दे ले, तब तक उसे चैन नहीं मिलता। इस पक्षी की सामाजिक भावना इतनी उत्कृष्ट है कि यदि कोई कौआ चित्त हो जाय तो सैकड़ों कौए जलूस के रूप में मातमपुर्सी के लिये इकट्ठे हो जाते हैं। इसी तरह नाइयों की पंचायत भी किससे छिपी है। अब तो ख़ैर यह बात नहीं, मगर पुराने ज़माने में यदि आधी दाढ़ी मूँड़कर कोई नाई बिगड़ उठता था, तो बची-खुची दाढ़ी को हाथ लगाने के लिये दूसरा नाई तैयार नहीं होता था। कौआ घर की मुँडेर पर बैठकर जब काँय-काँय का राग अलापता है, तो बस समझ लो कि किसी मेहमान के आने की सूचना दे रहा है। गाँव वाले भी जब नाई को दूर से आता हुआ देखते हैं, तो समझ जाते हैं कि यह कोई न कोई सन्देश ला रहा है। कौआ हर घड़ी समय की ताक में रहता है। घरवालों के देखते-देखते खाने-पीने की चीज़ें उड़ा लेता है। नाई भी अवसर को हाथ से जाने नहीं देता। यजमान को मूड में देखकर कुछ न कुछ ज़रूर ही ऐंठ लेता है।

वर्तमान युग क्रान्ति का अग्रदूत है। हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उथल-पुथल मच रही है। नाई भी सभ्यता के इस नवीन दौर में दो भागों में बँट गया है। शहरी नाई और देहाती नाई। देहाती नाई अब भी अपनी पुरानी डगर पर चल रहा है। सुबह सवेरे ही छैनी बगल में दबाये घर से निकल पड़ता है और सीधा गाँव के चौधरी के पास पहुँच जाता है। नरम-नरम हाथों से पानी के साथ चौधरी की ठोड़ी की मालिश करता है। साथ ही साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगे हाथों गाँवभर की खबरें सुनाता जाता है। हाथों से तो चौधरी की दाढ़ी नरम करता है और खुशामदभरी बातों से स्वयं चौधरी को भी नरम कर डालता है। इधर-उधर की बातें करते-करते बड़े गंभीर भाव से कहने लगता है—चौधरी साहिब, आपने कलवे के बेटे को पुलिस के चंगुल से छुड़ाकर गाँवभर में अपनी धाक जमा दी है। सारे गाँव में आपकी नेकी के चर्चे हो रहे हैं। मातादीन की लुगाई उससे बिलकुल फरंट हो गई थी। यह आपके दबदबे का ही फल है कि वह अब भीगी बिल्ली बनकर उसके घर में टिक गई है। यजमान ! यदि सच पूछो तो आपके पुण्य-प्रताप से ही गाँव वाले सुख की नींद सोते हैं। निस्संदेह आपका दम ग़नीमत है। चौधरी अजब अन्दाज़ से मुस्कराकर नाई की ओर देखता है। चौधरी की यह मुस्कराहट नाई को उसकी कामयाबी का सन्देश देती है। उसकी आँखें खुशी से चमकने लगती हैं और झट बोल उठता है——चौधरी साहिब, भैंस के लिये चारा चाहिये। चौधरी उत्तर देता है, भई ले जाइयो। नाई जब पानी मरता हुआ देखता है तो और पाँव पसारता है और चेहरे पर गहरी अनुभूति लाकर कहता है कि यजमान, अबकी बार कनक की फसल से हमें कुछ नहीं मिला। नाई का जादू सिर चढ़ बोलता है। यजमान, जो पहले ही नाई की लच्छेदार बातों में चक्कर काट रहा था, तत्काल सिर हिलाकर स्वीकृति दे देता है। फलतः नाई हजामत बनाते-बनाते बेचारे चौधरी को भी मूँड लेता है।

शहरी नाई ज़माने की हवा के साथ-साथ बहुत हद तक बदल चुके हैं। चाहे कुछ भी हो, मनुष्य के स्वाभाविक संस्कारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में बहुत ही कम अन्तर पड़ता है। शहरी नाइयों में भी खुशामद करने की प्रवृत्ति विद्यमान होती है परन्तु इनकी खुशामद भी माडर्न टाइप की होती है। दुकान को इस ढंग से सजाते हैं कि गाहक फड़क उठता है। बड़े-बड़े शीशे, एक्ट्रसों की लम्बी-चौड़ी तस्वीरें दुकान को चार चाँद लगा देती हैं। देहाती नाई की तरह शहरी नाई भी अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए नाना प्रकार की बातें बनाना जानते हैं। अम्बाला के बड़े बाज़ार के चौक में एक नाई साहिब का न्यू हेयर कटिंग सैलून बड़ा प्रसिद्ध है। मैं कभी-कभी हजामत बनवाने के लिए वहीं चला जाता हूँ। जब वह अपना काम शुरू करने लगते हैं तो मेरे चेहरे पर इस तरह नज़रें गाड़ देते हैं, जिस तरह खतरनाक आपरेशन के समय डाक्टर रोगी को देखता है। मुझको घबराया हुआ देखकर कहते हैं—बाबू साहिब, कल मेरी दुकान के पिछवाड़े में दो खून हो गये हैं, परन्तु खूनी का अभी तक पता नहीं चल सका। पिता और पुत्र दोनों सो रहे थे कि किसी निर्दयी ने छुरा घोंपकर उनके प्राण हर लिये हैं। कभी-कभी जब मैं उनकी दुकान में दाखल होता हूँ तो छूटते ही कह डालते हैं कि बाबू साहिब, आज हैज़े से तीस आदमी चल बसे हैं। न मालूम यह भयानक रोग कितनों की जान लेगा। मैं भौचक्का होकर उनका मुँह देखने लगता हूँ, तो बोल उठते हैं कि दोनों समय प्याज़ का प्रयोग किया करो। एक दिन मुझसे न रहा गया। साहस बटोरकर पूछ ही बैठा कि भाई, तुम मुझे इतनी भयानक खबरें क्यों सुनाते हो ? नाई महोदय मुस्कराये और अजब अन्दाज़ से कहने लगे—मालूम होता है कि आपको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी उस्ताद नाई से वास्ता नहीं पड़ा। भला यहाँ के नाई भी कोई नाई हैं। बालों के साथ यह तो खाल को भी छील डालते हैं। वास्तव में यह सबके सब घसियारे हैं। एक नाई और घसियारे में उतना ही अन्तर है जो उस्तरे और खुरपे में है। आपको विदित होना चाहिए कि भय और आतंक के वातावरण में मनुष्य के शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और बालों का यह तनाव नाई के दृष्टिकोण से अत्यन्त सुविधाजनक होता है। इस तरह उसका काम भलीभाँति सम्पन्न हो जाता है। अब आप समझे कि यह सब कुछ मैं केवल अपने फायदे के लिए ही करता हूँ।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अम्बाला

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के अनेक नगर अपनी विभिन्न विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध हैं। दिल्ली का चाँदनी चौक अपनी निराली शान रखता है। बम्बई के साथ चौपाटी का नाम लिया जाता है। बनारस की सुबह और लखनऊ की शाम के किस्से तो प्रायः किताबों में भी लिखे जा चुके हैं। आगरे का ताजमहल और ग्वालियर के किले तो प्राचीन भारतीय कला के स्मारक बन चुके हैं। परन्तु अम्बाला में भी कई ऐसे दृश्य एवं स्थल हैं, जिन्होंने इस शहर के नाम को उछाल रखा है।

अम्बाला की पहली उल्लेखनीय विशेषता यहाँ के जोहड़ अथवा दलदलें हैं। इनके विस्तार का यह हाल है कि इन्होंने पूरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पूरे शहर को अपने घेरे में लपेट लिया है । इनमें अहमदशाह अब्दाली के समय का पानी अब तक खड़ा है । अम्बाला की म्युनिस्पैलिटी ने इन्हें अतीत के स्मृति-चिह्न समझकर अपनी देखरेख में रख लिया है । अतः इनमें किसी प्रकार का भी परिवर्तन इसे गवारा नहीं । इन दलदलों में नाना प्रकार की मक्खियाँ और मच्छर बरसाती च्यूटियों की तरह फैलते हैं । इनकी ख़ुशी का यह हाल है कि ये अम्बाला म्युनिस्पैलिटी की शान में दिन-रात मधुर तराने गाते रहते हैं । गत वर्ष मलेरिये और हैज़े ने अम्बाला में प्रवेश किया था परंतु स्वास्थ्य के विशेषज्ञों के अनुसार कोई सन्तोषजनक परिणाम नहीं निकल सका । कहा जाता है कि यहाँ के मच्छर और मक्खियाँ घटिया नसल के थे । अब की बार यहाँ की म्युनिस्पैलिटी काँगू की वादी से ऊँचे दर्जे की मक्खियाँ और मच्छर मँगवाने का उपक्रम कर रही है । उसे पूरा भरोसा है कि यदि भगवान् ने चाहा तो इस बार अगली-पिछली सभी कसर निकल जायेगी ।

इस नगर का दूसरा प्रसिद्ध उपहार यहाँ के कुत्ते हैं । इनमें कई दुमकटे हैं । इसी तरह कानकटे कुत्तों की भी कमी नहीं । कई बिल्कुल मसकीन और दरवेश स्वभाव के हैं । इन पर से यदि साइकिल अथवा रिक्शा भी गुज़र जाय तो प्रोटेस्ट तक नहीं करते । कुछ ऐसे त्यागी भी हैं कि अपने शरीर का एक-एक बाल खुजली एवं खारिश की सेवा में अर्पण कर चुके हैं । अब केवल खाल पर ही सब्र किये बैठे हैं । अम्बाला में कई ऐसे कुत्ते भी मिलेंगे जिन्हें ईश्वर ने कवियों जैसा मिज़ाज प्रदान किया है । यहाँ तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि कभी-कभी ये कुत्ते दूध जैसी सफेद चाँदनी रातों में म्युनिस्पैलिटी के तत्त्वावधान में कवि-सम्मेलन का आयोजन भी करते हैं। वसन्त के शुभागमन पर रात के सन्नाटे में नगर के उत्तरी कोने से एक कुत्ता कविता-पाठ करके कवि-सम्मेलन का उद्घाटन कर देता है। कविता की यह रसीली झंकार हवा की लहरों में तैरती हुई सारे नगर के वातावरण में गूँज उठती है। बस फिर क्या कहने! कुत्तों की भरी बिरादरी को आन की आन में सूचना मिल जाती है कि कवि-सम्मेलन का श्रीगणेश हो गया है। इसका प्रमाण भी लगे हाथों मिल जाता है। पश्चिम दिशा की ओर से दो-तीन बार भौं-भौं की आवाज़ आती है। इसके बाद कई दर्जन गीत और गज़लें पढ़ी जाती हैं। इतने में एक कुत्ता, जो हलवाई के चूल्हे में दुबका बैठा था, झट सिर निकालकर गज़लों की झड़ी लगा देता है। फिर तो वह हुल्लड़ मचता है कि हम बार-बार खिड़की से सिर निकालकर 'आर्डर' 'आर्डर' पुकारते हैं, मगर आप जानते हैं कि ऐसे अवसर पर जब कवियों की महफल रंग पर आई हो तो उस समय बेचारे प्रधान की भी कौन सुनता है?

अम्बाला की तीसरी प्रसिद्ध वस्तु यहाँ की सड़कें हैं। कुछ वर्ष पहले यहाँ बड़े ज़ोर की चेचक फैली थी। इसका प्रभाव इतना व्यापक था कि बेचारी सड़कें भी इसकी लपेट में आ गई थीं और बहुत सी तो इस दैवी प्रकोप की ताब न लाकर दम तोड़ गई थीं। इनकी हालत देखकर संसार की नश्वरता का दृश्य आँखों के सामने खिंच जाता है और मीर तकी का एक शेर बरबस याद आ जाता है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाश पर इबरत यह कहती थी मीर
आए थे दुनियाँ में इस दिन के लिए

जो सड़कें इस तूफानी बला से बच निकली हैं, उनमें भी विशेष दमखम नहीं है। मारे चेचक के दागों के उनकी बुरी हालत हो गई है। अम्बाला की म्युनिस्पल कमेटी ने इन दागों को रफू कराने के लिए कई पापड़ बेले हैं, मगर चेचक के दाग भी कहीं मिट सकते हैं। अम्बाला का प्रत्येक कोचवान इन दागों से भली भाँति परिचित है। इसीलिए वह घोड़े को सावधानी से चलाता है। यदि कहीं घोड़े को सरपट दौड़ाने का प्रयत्न भी करे तो तत्काल घोड़ा और कोचवान दोनों सजदे में गिर जाते हैं और सवारियाँ ज़मीन चाटने लगती हैं। परंतु विधि का विधान देखिए। कई बार बुराई में भी भलाई निकल आती है। ये सड़कें लाख बुरी हों परंतु फिर भी बड़े काम की हैं। स्कूलों के अनुभवी और योग्य अध्यापक इन सड़कों से पूरा-पूरा लाभ उठाते हैं। जो विद्यार्थी प्राय: ज्योमेटरी में कमज़ोर होते हैं उनको यहाँ पर प्रेक्टीकल कराया जाता है। एक-एक लड़के को सामने खड़ा करके मास्टर साहिब कहते हैं——इस गढ़े की तरफ देखो, यह तिकोन है। इसी के पास दूसरी तरफ चतुष्कोण है। गोलाकार की शक्ल यदि दिमाग में बैठाना चाहते हो तो सामने वाले गढ़े को ध्यान से देखो। इस तरह सारी की सारी जमैटरी तुम्हारी उँगलियों पर नाचने लगेगी।

अम्बाला इसलिए भी प्रसिद्ध है कि यही एकमात्र ऐसा नगर है, जिसका कोई भौगोलिक जलवायु नहीं है। नगरनिवासी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस ईश्वरीय प्रसाद के लिए अनेक यत्न कर चुके हैं, परन्तु अभी तक उनके भाग्य ने करवट नहीं बदली। म्युनिस्पैलिटी के इजलासों में नगरवासियों को इस माँग पर कई बार बहस हो चुकी है। मैम्बरों का विचार है कि वर्तमान युग में खालिस जलवायु का मिलना तो आकाश-कुसुम के समान है। इसीलिए उन्होंने इसका बदल खोज लिया है। ताज़ी हवा की कमी को पूरा करने के लिए उन्होंने स्थान-स्थान पर गर्दोगुबार और धुएँ के सेण्टर खोल रखे हैं, जहाँ से ये सब चीज़ें इन्हें बिना किसी दाम के सप्लाई होती हैं। इसमें सन्देह नहीं कि म्युनिस्पैलिटी की इस उदारता के फलस्वरूप पानी खुश्क हो गया है परन्तु इसके लिए सतलुज से नहर निकालने की योजना पर भी पूरा ज़ोर दिया जा रहा है। आशा है कि इस सदी के गुज़रने से पहले ही इसका परिणाम निकल आयेगा और नगर-निवासियों की यह शिकायत भी दूर हो जायेगी।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकान

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर फिर वे दिन न दिखाये। कितना भयानक समय था। शरणार्थियों का सैलाब पाकिस्तान से उमड़-उमड़ कर हिन्दुस्तान की तरफ बह रहा था। प्रत्येक मनुष्य की अपनी दर्दभरी कहानी थी। परन्तु एक मुसीबत प्रायः सबके लिए समान थी। वह थी मकान की समस्या। समझ में नहीं आता था कि आदमियों और मकानों के अनुपात में इतना असाधारण अन्तर कैसे पड़ गया था। उन दिनों पूर्वी पंजाब के किसी भी शहर में मकान तलाश करना गुलबकावली प्राप्त करने के समान था। जिसे देखो मकान की धुन सवार थी। जिससे भी मिलो वह स्थान का किस्सा ले बैठता था। एक अनार सौ बीमार वाली समस्या थी—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन है जो नहीं है हाजतमन्द
किसकी हाजत रवा करे कोइ

नवम्बर १९४७ के आखिरी दिन थे कि मुझे किस्मत के थपेड़ों ने मीरपुर से अम्बाला में ला पटका। नया शहर, प्रत्येक मनुष्य अजनबी। न किसी से परिचय, न मेल-जोल। कई रातें प्लेटफार्म पर घिस-पिस कर गुज़ार डालीं। ज्यों-ज्यों सरदी बढ़ती जाती थी, त्यों-त्यों यह वहम जड़ पकड़ता जाता था कि कहीं निमोनिया का शिकार न हो जाऊँ। इसी उधेड़बुन में धक्के खाते-खाते एक दिन पुरानी जानपहचान वाले एक साहिब मिले, जो १९३६ में लाहौर में नौकर थे। उन्होंने शिष्टाचार के अनुसार हालचाल पूछा। मैंने उत्तर दिया। वैसे तो ईश्वर का लाख शुकर है, परन्तु रहने के लिए कोई जगह नहीं मिलती। इस बला की सरदी में रेलवे प्लेटफार्म पर रातें काट रहा हूँ। वे कहने लगे कि भई! मैं तुम्हें केवल सोने का ठिकाना दे सकता हूँ और बस। मैंने उनका धन्यवाद किया और कहा कि चलो इतना ही ग़नीमत है।

सायंकाल को जो उनके दौलतखाना पर पहुँचा तो वहाँ नक्शा ही और था। आदमियों, औरतों, बच्चों की काफ़ी रेलपेल थी। कानों-पड़ी आवाज़ सुनाई नहीं देती थी। उनकी बातों से पता चला कि उनके बहुत-से दूर-पास के रिश्तेदार शरणार्थी भाई इनके मकान में टिक गये हैं। आये दिन इस रिश्तेदारों की संख्या में भारी वृद्धि हो रही है। वे स्वयं हृदय के इतने कोमल हैं कि 'गरीबखाना मौजूद है हर बला के लिए' के कथन के अनुसार प्रत्येक पीड़ित का उदारता से स्वागत कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे इस आश्रयदाता सज्जन के मकान में तीन-चार कमरे थे। सबसे बड़ा कमरा मरदों के लिए निश्चित था। सोने के लिए चारपाइयों के स्थान पर एक लम्बी दरी बिछी थी। मैं जब कमरे में प्रविष्ट हुआ तो कुछ लोग सोये हुए थे और कुछ बातचीत कर रहे थे। कुल लड़के और पुरुष मिलाकर तीस से अधिक न थे। मैं भी एक कोने में विराजमान हो गया।

मुश्किल से आँख लगी थी कि कानों ने ऐसा शोर सुना कि रेलवे का भारी इंजन अपनी पूरी आवाज़ के साथ शंट कर रहा है। चौंककर गरदन उठाई तो देखा कि दूसरे कोने में एक बजुर्ग पूरी शक्ति से खराँटेबाज़ी में व्यस्त हैं। इनकी खराँटेबाज़ी भी विचित्र प्रकार की थी। हर खराँटा पूर्वागत खराँटे की अपेक्षा मन्द-मन्द स्वर से चलता था। हर बारह खराँटों के बाद स्टीम फिर नए सिरे से भर जाती थी और वही क्रम जारी हो जाता था। एक-आध मिनट के लिए ये बुजुर्ग खामोश भी हो जाते थे। उस समय दो-तीन और आदमी भी फुँकारते थे। मगर उनके खराँटे सनक सूँ साँ और सीटियों की आवाज़ से मिलते थे। जब कभी बजुर्ग भी उनके साथ स्वर मिला देते थे तो ऐसा प्रतीत होता था कि किसी फिल्म कम्पनी का आरकेस्टरा बज रहा है। एक-आध घंटे के बाद पाँच-सात मिनट का इण्टरवल भी हो जाता था। उस समय मेरे पास लेटा हुआ एक बूढ़ा अपनी परेशान खाँसी से कमरे के खामोश वातावरण को छिन्न-भिन्न कर देता था। मैं रातभर इन्हीं विचारों में खोया जा रहा था कि कमरे में रातभर जागना बुरा है या प्लेटफार्म पर लेटकर निमोनिया के दर्द की टीस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे दिन प्रात:काल ही मैं फिर मकान की तलाश के लिए निकल पड़ा। एक लाला जी अपनी दूकान पर आसन बिछाये गीता का पाठ कर रहे थे। मुझे देखकर पूछने लगे कि क्या बात है? मैंने पाकिस्तान में तबाह होने की दु:खभरी कहानी एक ही साँस में कह डाली और साथ ही कहा कि कोई छोटा-मोटा कमरा किराये पर दिला दें तो बहुत कृपा हो।

लाला जी एकटक मेरी ओर देखने लगे और बोले——नौजवान! दिल तो चाहता है कि पाकिस्तान की सारी दौलत तुम्हारे कदमों पर डाल दूँ। मगर यह मेरे बस का रोग नहीं है। यदि मेरा बस चले तो मैं महाराजा ग्वालियर के महल, शाहजहाँ का लाल किला और ताजमहल तक तुम्हें सौंप सकता हूँ मगर इस वक्त मेरे पास आ-जाकर एक छोटा सा कमरा है, तुम्हें पसन्द हो तो देख लो। मैंने हामी भरी और उनके साथ हो लिया।

लाला जी ने मुझे वह कमरा दिखाया जो घर के कूड़े-कबाड़ से बुरी तरह रुका पड़ा था। कोई तीन गज़ लम्बा और पौने दो गज़ चौड़ा होगा। आँखों पर विश्वास न करते हुए मैं फुसफुसाया——क्या यही कमरा है? लाला जी सूखी हँसी हँसकर कहने लगे–फर्श खालिस सीमेंट का है, तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा। किराया सिर्फ पचास रुपए माहवार और छः मास का एडवांस होगा। मुझे कुछ चिंतित देखकर बोले——क्यों? क्या किराया अधिक है? मैं लाला जी के प्रश्न से आहत होकर झुँझला उठा और मैंने कहा——लाला जी किराये की कोई बात नहीं। मैं तो यह सोच रहा हूँ कि यदि मैं कहीं बीमार पड़ गया तो मरने के लिए मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं सड़क पर जाना पड़ेगा। कारण यह है कि मुरदा उठाने के लिए चार भाइयों की ज़रूरत पड़ती है और इस कमरे में तो दो आदमी इकट्ठे प्रविष्ट नहीं हो सकते।

कुछ दिनों के बाद पता चला कि यहाँ के एक प्रसिद्ध सेठ साहिब के दर्जनों मकान हैं। मैं प्रातःकाल ही उनकी सेवा में उपस्थित हुआ। सेठ साहिब गांधी जी के आकृतिचित्र के सामने हाथ बाँधे खड़े थे और बड़े प्रेम से 'रघुपति राघव राजाराम' गा रहे थे। मैं एक कोने में बैठ गया। थोड़ी देर के बाद उन्होंने मेरी तरफ़ देखा। मैंने सेठ जी की गांधी-भक्ति की प्रशंसा की और कहा कि आप बहुत भाग्यवान हैं। सेठ जी बोले—मैं तो भाग्यवान हूँ ही, तुम बताओ कि तुम कौन हो? मैंने कहा—एक शरणार्थी। वे बोले—अच्छा, अच्छा, मैंने समझा कोई इन्सान होगा। बताओ किसलिए आये हो? मैंने कहा—कमरा चाहिए। बोले—मिल जायगा। मैंने जब किराया पूछा तो वे मुस्कराये और कहा—मालूम होता है इस शहर में नए-नए आये हो जो छूटते ही किराया पूछ रहे हो। पगड़ी-वगड़ी तो तय कर लो। मैंने विस्मित होकर पूछा—वह क्या होती है? बोले—जब दोगे पता लग जायगा। मैं सकपकाया और विनीत शब्दों में प्रार्थना करने लगा—मैं तबाह होकर आया हूँ, कुछ दया कीजिए। तमककर बोले तो क्या डाक्टर ने मकान किराये पर लेने के लिए कहा है। इसके बाद वे गांधी जी की तस्वीर की ओर मुड़े और निराशा में डूबे हुए स्वर से कहने लगे—बापू, तुम तो कहते थे कि 'सबको सन्मति दे भगवान्' मगर न मालूम इन शरणार्थियों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कब सन्मति आयेगी।

आखिर समय ने करवट ली और मुझे एक सज्जन ने बतलाया कि यदि मकान चाहते हो तो मुस्लिम मुहल्लों के चक्कर काटो। मैंने उनकी शिक्षा पर अमल किया और एक खाली मकान देखकर उसमें घुस गया।

मेरे पड़ोस में एक सिख जण्टलमैन रहते थे। उन्होंने मुझे बताया कि यह मकान किसी बाकर अली कलंदर का है जो पाकिस्तान चला गया है। पहले तो मैं इसे मज़ाक ही समझता रहा परंतु बाद में इस मकान में जो खोजें हुई हैं, उन्होंने सरदार साहिब के कथन को पूरी तरह साबित कर दिया है।

गम्भीर अनुसंधान के बाद पता चला कि कलंदर साहिब का यह मकान मुहम्मद तुग़लक का ज़माना देख चुका है। छत चारों कोनों में सपाट और बीच में कबर की तरह। पूर्वी और पश्चिमी दीवारों में स्थान-स्थान पर शिगाफ और दराड़ें पड़ चुकी थीं। फिर भी इनमें अभी कुछ दमखम बाकी था, मगर दूसरी दो दीवारें तो आपस में गले मिलने के लिए लालायित हो रही थीं। ऐसा लगता था कि आनेवाली बरसात में अवश्य ही परस्पर लिपट जायेंगी। सड़क पर गुज़रते समय जब कोई मनचला नौजवान 'बादल धीरे धीरे आ' गाता था तो मैं सहमी हुई नज़रों से इन दीवारों को देखने लगता था। कोठरी के कोने में औंधे मुँह पड़ा हुआ एक फूटा हुक्का कलंदर साहिब के वियोग में पृथ्वी पर लोट रहा था। एक ओर ताक पर किसी अज्ञात धातु की बनी हुई जंगभरी देजकी रखी थी जिसका निचला भाग लुप्त था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकान के आँगन में एक सूखा हुआ नीम का पेड़ था, जिसके तने के साथ छोटी-छोटी रस्सियाँ बँधी थीं, जो कलंदर साहिब की याद में 'झुलना झुलाओ' गा रही थीं। मुझे अचरज हुआ कि कलंदर साहिब की इतनी कीमती चीज़ें कस्टोडियन साहिब की नज़र से कैसे बच गई थीं, जबकि इनकी गणना भी तो उन्हीं चीज़ों में थी जो मुसलमान हिन्दुस्तान में छोड़ गये थे।

मकान की ड्योढी में दरवाज़ा तो था, मगर किवाड़ गायब थे। प्रतिदिन दरवाज़े को बड़े ग़ौर से देखता था। कुछ पता न चलता था कि किवाड़ पहले लगे ही न थे, या कलंदर साहिब इन्हें उखाड़कर पाकिस्तान ले गये थे। कुछ भी हो कुत्तों के प्रवेश पर कोई पाबन्दी नहीं थी। इसलिए जब मैं प्रातःकाल उठता था तो कभी-कभी दर्जनभर कुत्ते मेरे चारों तरफ नींद का मज़ा लेते थे––

ज़िन्दगी अपनी जो इस रंग में गुज़री ग़ालिब
हम भी क्या याद करेंगे खुदा रखते थे

बरसों गुज़र गये। ईश्वर ने दिन फेर डाले हैं। रहने को अच्छा मकान मिल गया है। मगर अब तक लाला जी की याद मेरे दिल में है। सेठ साहिब को भी नहीं भूल सकता, न ही कलंदर साहिब की हवेली को। जब भी कभी एकान्त में अपने जीवन के पृष्ठ टटोलता हूँ तो अतीत की स्मृतियाँ हृदय को झकझोर देती हैं। कभी-कभी सोचता हूँ कि इन्हें सदा के लिए भूल जाऊँ परंतु भूलना एक भारी प्रश्न-चिह्न बनकर घूम जाता है और मैं अवाक् रह जाता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन नाना प्रकार के हैं। दाल-भात से लेकर अण्डा-मछली आदि सब भोजन के ही अन्तर्गत हैं। संसार में चीन जैसे देश भी हैं, जहाँ के निवासी साँप, मेंढक और छिपकली तक को भी चट कर जाते हैं। प्राचीन ऋषि-मुनि केवल कन्दमूल खाकर ही तृप्त हो जाते थे परन्तु वर्तमान युग की यूरोपियन जातियाँ जब तक पाँच वक्त न खा लें उनको सन्तोष नहीं होता। वास्तव में भौगोलिक परिस्थितियों ने भी पृथ्वी पर बसने वाले मनुष्यों के भोजन पर अपना प्रभाव डाला है। इसका अनुमान सहज ही लग सकता है जब कि एक अरब केवल खजूरों और ऊँटनी के दूध पर ही अपनी जीवनचर्या चलाता है। काँगू की घाटी में रहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाला बौना तीरों से चौपाये को मार गिराता है और इसके मांस से ही अपने पेट की ज्वाला को शान्त करता है। एक एस्कीमो बारलस या रेडिण्यर को अपने पेट का ईंधन बनाता है। इसी तरह यदि एक पहलवान का भोजन पाँच सेर दूध, एक सेर बादाम और बकरे की पूरी टाँग है तो एक रोगी के छटाँक भर चावल और दो तोले सागूदाना भी भोजन में ही गिना जाता है।

जिस तरह भोजन के अनेक प्रकार हैं, इसी तरह खाने वाले भी भिन्न-भिन्न श्रेणियों में बँटे हुए हैं। कोई बहुत थोड़ा खाकर खाने से हाथ खींच लेता है। ऐसा लगता है कि मानो इसने केवल भोजन को सूँघा ही है। कोई पावभर अनाज खाकर ही निःश्वास का साँस लेता है। ऐसे भी लोग मिलते हैं जो चार-पाँच सेर पकवान खाकर भी डकार नहीं लेते। इसी तरह प्रत्येक मनुष्य का अपना-अपना मनभाता खाजा होता है। कोई माँस पर फिदा है तो कोई फलों का दिलदादा है। कोई केवल शाकाहारी है तो कोई दूध के आहार पर ही निर्भर रहता है।

मेरे मिलने वालों में एक प्रोफेसर साहिब हैं, जो रसगुल्लों पर जान निसार करते हैं। कालिज की टकशाप की ओर वे यदि कहीं निकल जायें और रसगुल्लों के सजे-सजाये थाल पर उनकी नज़र पड़ जाए तो दुकान वाले की बाछें खिल जाती हैं। उसे विश्वास हो जाता है कि अब रसगुल्लों की खैर नहीं। प्रोफेसर साहिब का कौल है कि भगवान् ने रसगुल्लों से बढ़कर नाज़ुक गज़ा अब तक नहीं बनाई। इसे चबाने के लिए दाँतों को कोई तकलीफ गवारा नहीं करनी पड़ती और न ही इसे पचाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए मेदे को कोई खास ज़ोर लगाता पड़ता है। यह वह ख़ुराक है कि ज्योंही पेट में गई एक झटके के साथ ख़ून में तबदील हो जाती है। उनका कथन है कि जब वे बीमार पड़ जाते हैं और डाक्टर व्रत रखने का उपदेश देते हैं तो भी वे डाक्टर से स्पेशल इजाज़त लेकर ताज़े रसगुल्लों की एक पलेट सामने रख लेते हैं ताकि उन्हें देखते रहें और आँखों की भूख मिटती रहे—

गो हाथ में जुम्बश नहीं आँखों में तो दम है
रहने दो अभी साग़रो मीना मेरे आगे

पेटू लोग संसार के प्रत्येक भाग में पाये जाते हैं। आज से बीस-बाईस वर्ष पहले का ज़िकर है कि मैं कुछ लड़कों के साथ लाहौर गया। हमारी पार्टी में एक लड़का अविनाशीराम था। वह अठारह-बीस वर्ष का एकहरे बदन का हल्का-फुल्का नौजवान था। इससे पहले मैंने खाने की मेज़ पर चमत्कार दिखाने वाले बड़े-बड़े भोजनभट्टों के किस्से सुन रखे थे, परन्तु अभी तक आँखों से कोई ऐसा करिश्मा देखने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था। हमने पन्द्रह-बीस दिन लाहौर रहना था। इसलिए भोजन का प्रबन्ध एक अच्छे होटल में किया। सस्ता ज़माना था और होटल वाला चार आने में एक समय का भोजन देने पर राज़ी हो गया।

जब हम खाने के लिए बैठे तो अविनाशीराम पूरी सावधानी से अपने काम में जुट गया। जब वह दस रोटियाँ और कटोरा भर दाल हजम कर चुका तो होटल वाला और उसके नौकर आपस में सरगोशियाँ करने लगे परन्तु अविनाशीराम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने इर्दगिर्द के वातावरण से पूरी तरह बे-खबर था। जब बीस रोटियों तक नौबत आ गई तो होटल वाले के सबर का प्याला उबल पड़ा और वह हड़बड़ाकर अपने स्थान से उठा और अविनाशीराम के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और बोला——ए छोकरे मुझे बख्श दे । मैं तुझसे कुछ नहीं माँगता लेकिन कभी भूल करके भी इधर का रुख़ न करना। सामने वह होटल है, कल से अपने करतब वहाँ दिखाना।

मीरपुर में एक खोजूराम नाम के पंडित थे। पाकिस्तान से जान बचाकर हिन्दुस्तान चले आये हैं। पता नहीं आजकल वे कहां रहते हैं। जहाँ भी हों भगवान् उन्हें खुश रखें। बड़े ज़िन्दादिल इन्सान हैं।

अपने भोजनभंजन के कारनामे बड़े मज़े ले-लेकर सुनाते थे। वर्णन की शैली इतनी दिलचस्प थी कि घण्टों सुनते रहो, जी नहीं भरता था। एक दिन सुनाने लगे कि एक साहूकार ने उन्हें लड्डुओं का निमंत्रण दिया और फ़ी लड्डू एक आना दक्षिणा देने का एलान किया। पंडित जी ने अपने बेटे से कहा कि बरखुरदार, ईश्वर ने बड़े मुद्दत के बाद यह दिन दिखाया है। यदि तुम हिम्मत करो तो पच्चीस-पच्चीस रुपये हाथ लग सकते हैं। एक दो दिन व्रत रखकर आने वाले महायज्ञ के लिये लंगर-लंगोटे कस लो। लड़का बड़ा आज्ञाकारी था, कहने लगा——पिता जी आप तनिक चिन्ता न करें। आप वह दिन तो आने दें, फिर देखें कि लड्डुओं का क्या हाल होता है——

वक्त आने दे बता देंगे तुझे ए आस्मान
हम अभी से क्या बतायें क्या इनके दिल में है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिर वह घड़ी आ गई और पिता-पुत्र दोनों साहूकार के हाँ जा पहुँचे। ब्राह्मणों की लम्बी पंक्ति लगी थी। लड्डुओं से भरी एक-एक थाली सबके आगे रख दी गई। बड़ा पंडित तो था ही मगर बरखुरदार ने लड्डुओं पर वह बढ़-बढ़कर हाथ मारे कि पिता का मन प्रसन्न हो गया। उसे विश्वास हो गया कि इस नाशवान संसार से विदा लेने पर वह अवश्य ही अपना स्थानापन्न छोड़ जायेगा। कुछ समय के बाद लड़के ने पानी पीना शुरू किया, जिससे पिता को कुछ चिन्ता हुई और दबी आवाज़ में कहने लगे—कम्बख़्त पानी की बजाय दो-चार लड्डू और क्यों नहीं धकेल देता। लड़के ने उसी ढंग से जवाब दिया कि वह अन्दर गये हुए लड्डुओं को प्रैस कर रहा है, ताकि बचे-खुचे लड्डुओं के लिये गुंजाइश निकल सके। पंडित जी ने बेअख्त्यार लड़के की सूझ-बूझ की दाद दी और वेद मंत्र के कुछ शब्द गुनगुनाने लगे—"आत्मा वै जायते पुत्रः।" भगवान् वेद का वचन कभी झूठ नहीं हो सकता, सचमुच बेटा अपने पिता का ही रूप होता है।

भोजन पर अत्याचार करने के अनेक वृत्तान्त पाकिस्तान से आने वाले शरणार्थियों से भी सम्बन्ध रखते हैं। शुरू में जब कोई शरणार्थी हलवाई को सेर भर दही की लस्सी बनाने को कहता तो हलवाई आँखें फाड़-फाड़कर गाहक को देखने लगता और पानी डालते वक्त पूछ ही बैठता कि लस्सी एक आदमी के लिये बनाऊँ या दो के लिए। जब शरणार्थी एक ही साँस में दो सेर भारी लस्सी पीकर रवाना हो जाता तो इर्द-गिर्द के दुकानदार घण्टों तक शरणार्थियों के पेटपन के चरचे करते रहते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अम्बाला छावनी की घटना है। पाकिस्तान नया-नया बना था। पश्चिमी पंजाब से आने वाले हिन्दू और सिक्ख झाड़ू के तिनकों की तरह बिखर गये थे। प्रत्येक मनुष्य परेशान था। किसी को अपने भविष्य का पता न था और न किसी का कोई ठौर-ठिकाना था। उन दिनों जेहलम का एक शरणार्थी बाज़ार के चौक में खड़ा था। एक पूरबिये रेड़ीवाले की जो शामत आई, वह हलवे का थाल रेड़ी पर रखे उसी चौक में आ गया और 'हलवा गरम' की आवाज़ें देने लगा। शरणार्थी उसके पास गया और पूछने लगा––सेर भर हलवे के क्या दाम हैं ? रेड़ीवाले ने शरणार्थी के दुबले-पतले शरीर की ओर देखा और तड़ाक से बोला–पाव भर हलवा खाया नहीं जाता और भाव सेर का पूछता है। शरणार्थी बोला––अगर मैं तुम्हारे थाल का सारा हलवा खा जाऊँ तो ? पूरबिये ने पहले थाल पर पड़े हुए चार-पाँच सेर हलवे की तरफ देखा और फिर शरणार्थी के दुबले शरीर को। झट बोल उठा––यदि सारा हलवा खा जाओ तो हलवा मुफत और गिरह से पाँच रुपये और भेंट करूँगा। दरजनों राही इस झगड़े में दिलचस्पी लेने लगे। शर्त पक्की हो गई।

अब जनाब, शरणार्थी ने चादर उतार डाली और पलथी मार कर बैठ गया और हलवे पर टूट पड़ा। ज्यों-ज्यों हलवा उसके पेट में गायब होता जाता था, पूरबिये के चेहरे का रंग उड़ता जाता था। आख़िर एक लम्बा डकार लेकर वह सारा हलवा हज़म कर गया और शर्त जीत ली। पूरबिया खाली थाल बगल में दबाये घर को लौटा और शरणार्थी मूँछों पर ताव देता हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक तरफ निकल गया।

सत्य तो यह है कि पूरबिया फिर भी इस सौदे में सस्ता छूट गया था जो हलवे और पाँच रुपये पर ही शरणार्थी ने सन्तोष कर लिया क्योंकि वह दुबला-पतला और शहरी शरणार्थी था। यदि वह देहाती होता तो न केवल हलवे को वरन् थाल के साथ पूरबिये को भी हड़प कर डालता।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिजली का पङ्खा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अम्बाला की गर्मी यूँ भी प्रसिद्ध है, मगर १९५४ की गर्मियों में अम्बाला की जो हालत थी उसकी याद कई वर्षों तक रहेगी। सूर्य देवता के आकाश पर पदार्पण करते ही ज़मीन तन्दूर की तरह तपने लगती थी। दोपहर के समय यह हाल होता था कि बाहर निकलते ही लू के थपेड़े शरीर का रोआँ-रोआँ जला डालते थे। पसीना था कि थमता ही न था। फलतः न घर में चैन था, न बाहर आराम। लेकिन प्रत्येक बुराई में कोई न कोई भलाई प्रायः छिपी होती है। यह १९५४ की ही गर्मी थी जिसने तेनसिंह और उसके अंग्रेज़ साथियों को एवरैस्ट की चोटी विजय करने का सुअवसर प्रदान किया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिजली के पंखे के बारे में मेरे विचार प्रायः रूढ़ीवादी थे। मुझे विश्वास था कि यह केवल अमीरों का चोंचला है। यह एक फिज़ूलखर्ची ही नहीं वरन् मनुष्य को निकम्मा और आरामतलब भी बना डालता है। मगर गर्मी ने वह नाक में दम किया कि मुझे पंखे की उपयोगिता पर ईमान लाना पड़ा। बस, फिर क्या था, मन में रह-रहकर पंखे के प्रति सद्भावना जागृत होने लगी। मेरी हिचकचाहट शनैः-शनैः हटने लगी और एक सुबह पंखा किराये पर लेने के लिए मैं घर से निकल पड़ा। थोड़े समय के बाद ऐसा अनुभव हुआ कि पंखा प्राप्त करना कोई साधारण काम नहीं है बल्कि दूध की नहर लाने के समान है। दर्जनों दुकानों पर भटकता फिरा परन्तु यह अनमोल वस्तु कहीं भी हाथ न लग सकी। कोई कहता था कि एक-दो दिन से पंखों का स्टाक खत्म हो चुका है। कोई कहता कि थोड़ी देर पहले पी० ड्ब्ल्यू० डी० वाले सब पंखे ले गये हैं, अब देखिए कब नया माल आता है। इसी तरह ज्यों-ज्यों पंखे के बारे में इनकार के शब्द कानों में पड़ते थे, मुझे पंखे से गहरी दिलचस्पी होती जाती थी। कुछ घण्टों के अन्दर ही बिजली का पंखा मुझे एक दैवी प्रसाद दिखाई देने लगा। मेरे इस असाधारण परिवर्तन का कारण वही मनुष्य भलीभांति समझ सकता है, जो इस बला की गर्मी में बिना पंखे के अपने कमरे के अन्दर झुलसा जा रहा हो।

जब हर दुकान से टका सा जवाब मिला और घूमते-घूमते कचूमर निकल गया तो नगर के बाहर की ओर चल निकला कि शायद कुछ चैन मिले। अब शाम के चार बज चुके थे। गर्मी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताप में कुछ-कुछ कमी हो रही थी। गान्धी-पार्क में एक घने वृक्ष के नीचे एक बैञ्च पड़ा था, उस पर बैठकर सुस्ताने लगा। उस समय मेरा दिमाग़ बिजली के पंखे और गर्मी के चक्कर में बुरी तरह घूम रहा था कि दूर से मेरे एक मित्र चौधरी साहब पार्क की ओर आते दिखाई दिये। मुझे देखकर वे मुस्कराये और पास आकर बोले--

चौध०--सुनाइये क्या हाल है? आज बहुत जल्दी पार्क में आ गये हो। मालूम होता है गर्मी का कोप सहन नहीं होता। आज गर्मी भी तो बला की है!

मैं--चौधरी साहब, बात कुछ ऐसी ही है।

चौध०--भई, आज तुम कुछ खोये-खोये से दिखाई देते हो। बात क्या है?

मैं--यह सोच रहा हूँ कि अमीर और ग़रीब में क्या अन्तर है?

चौ०--इसमें भला सोचने की क्या बात है। अमीर अमीर है और ग़रीब ग़रीब।

मैं--यह तो सभी जानते हैं। वास्तव में यह प्रश्न इतना सरल नहीं।

चौध०--भई, अमीर क्लब में जाकर ब्रिज खेलें और सैकड़ों का हेर-फेर कर डालें तो वह उनका मनोरंजन समझा जाता है और ग़रीब डिग्गी के पास थोड़े से पैसों से भी खेलें तो पुलिस इनका जुए में चालान कर देती है।

मैं--मेरी अब भी तसल्ली नहीं हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौध०––तो फिर तुम ही बताओ कि अमीर और ग़रीब में क्या अन्तर है ?

मैं––तो सुनिये, अमीर दर्जन भर बिजली के पंखे मोल ले सकता है लेकिन ग़रीब दिन भर भटकता रहे फिर भी एक पंखा तक किराये पर नहीं ले सकता ।

चौधरी साहिब ने ज़ोर का कहकहा लगाया और कहा–– अब आपकी परेशानी की वजह मालूम हुई है । भाई साहिब, एक पंखा मेरे पास है । है तो ज़रा पुराना, मगर जर्मनी का बना हुआ है । अगर चाहो तो हाज़िर है । मैंने चौधरी साहिब की उदारता की सराहना की और बोला कि अंधे को क्या चाहिए–दो आँखें । आपकी मेहरबानी जीवन भर नहीं भूलूँगा । कृपा करके इसकी थोड़ी बहुत कीमत अवश्य ले लीजिए । चौधरी साहिब ने बहुत आनाकानी की मगर मैंने जैसे-तैसे पचास रुपये चौधरी साहिब की जेब में डाल दिये । चौधरी साहिब ने आश्वासन दिया कि कल सुबह ही पंखा नौकर के हाथ घर पहुँच जायेगा, और जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाते हुए चल दिये ।

घर पहुँचा तो दिल बल्लियों उछल रहा था । रात को नींद में कभी हवा का झोंका शरीर को स्पर्श करता था तो मैं इसे चौधरी साहिब के पंखे की करामात समझता था । सुबह तक मैं नींद के मज़े लेता रहा क्योंकि अब मेरे दिमाग़ से पंखे का बोझ कब का उतर चुका था । कह नहीं सकता कि कब तक इस प्रकार सुख की नींद सोया रहता कि मेरे बड़े लड़के ने मुझे एक ही झटके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से जगा दिया और बताया कि चौधरी साहिब का आदमी पंखा दे गया है। मैंने मन में कहा कि सचमुच यह चौधरी कितना वचन का पक्का है। रुपये लेकर अपने कर्त्तव्य को नहीं भूला। आदमी हो तो ऐसा हो।

जब मैं बैठक में पहुँचा तो बच्चे एक अजीब सी चीज़ के इर्द-गिर्द इकट्ठे हो रहे थे। मैंने बड़े लड़के से पूछा कि यह क्या है। उसने बताया कि यही तो चौधरी साहिब का पंखा है। मैंने इसे बड़े ध्यान से देखा तो मुझे इसके पंखा होने पर सहज ही विश्वास नहीं आता था। इसकी बाडी तरबूज़ की तरह थी। एक ब्लेड सिरे से लगभग चार इञ्च टूटा हुआ था। दूसरे दो ब्लेड जलेबी की तरह बल खाये हुए थे। यदि इसकी बाडी का विस्तार थोड़ा कम होता तो यह सुदर्शनचक्र की तरह का कोई अस्त्र दिखाई देता जो पत्थर और धातु के ज़माने में प्रायः कोल और द्रविड़ युद्ध के समय काम में लाते थे। मैंने पंखे को सिर से पाँव तक देखा। इसके शरीर पर लगभग आध इञ्च मोटी मिट्टी की तह जमी हुई थी, जो समय के साथ-साथ पत्थर की तरह सख्त होती चली गई थी। मैंने लड़कों से कहा कि ज़रा छुरी लेकर इस मैल-कुचैल को खुर्च डालो और तब किसी मिस्तरी को बुलाकर इसे बैठक में फिट करायेंगे। यह कहकर मैं गुसलखाने में चला गया।

थोड़ी देर के बाद बड़े लड़के की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी कि बाबू जी, मिट्टी की तह तो हट गई है, अब रेत की तह प्रकट हो रही है। थोड़ी देर के बाद दूसरा चिल्लाया कि बाबू जी, अब कोयलों की तह दिखाई दे रही है। मैंने गुसलखाने से ही आवाज़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी कि थोड़ा सबर करो शायद हीरों की तह भी निकल आये। क्योंकि जहाँ कोयले मिलते हैं, हीरे भी उनके पास ही पाये जाते हैं। वास्तव में हीरे और कोयले का मूल एक ही है। यह केवल रासायनिक तबदीली ही है जो एक द्रव्य को हीरा और दूसरे को कोयला बना देती है।

नहा-धोकर मैंने बाज़ार की राह ली और एक मिस्तरी को साथ ले आया। पंखे के दर्शन करते ही मिस्तरी ने बताया कि जब तक इसकी पूरी तरह मरम्मत न की जाय यह काम नहीं देगा। इसके अतिरिक्त यह मेरे बस का रोग नहीं हैं क्योंकि यह मॉडल मेरे जन्म से भी बीस वर्ष पुराना है। आप किसी बूढ़े मिस्तरी को दिखाइये। वास्तव में बूढ़े के मर्ज़ को बूढ़ा ही पहचान सकता है। यदि आप मेरी मानें तो पंखे को रजमेंट बाज़ार में उस्ताद चिरंजीलाल की दुकान पर ले जायें, वही इसका मंत्र जानते हैं, और कोई उपाय नहीं।

मैंने बड़े लड़के से पंखा उठवाया और रजमेंट बाज़ार पहुँचा। उस्ताद चिरंजीलाल पंखे को देखकर मुस्कराया और बोला--यह तो चौधरी साहिब का पंखा है, जो दर्जनों बार मरम्मत के लिये यहाँ आ चुका है। बाबू साहिब, भला मैं इसका क्या करूँ। इसका आरमेचर बिल्कुल ढीला पड़ चुका है। चारों के चारों फील्ड इतने घिसघिसा गये हैं कि अब इसका ठीक होना बहुत कठिन है। ब्लेडों की मरम्मत करने में जो खर्च उठेगा उन पैसों से आप नये ब्लेड खरीद सकते हैं। फिर अपने शागिर्द को लक्ष्य करके कहने लगा--देखो कलवा, पचास वर्ष हो गये हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मगर इस बेचारे पंखे की मुक्ति होने में नहीं आती। फिर बोला—बाबू जी, पाँच रुपये लगेंगे। मैं इसे खोलकर ग्रीस वगैरा देता हूँ। शाम को कलवा पंखा फिट कर आयेगा। देखो शायद काम दे ही जाय।

शाम को कलवा पंखा फिट कर गया। अब पंखे का उद्घाटन होने वाला था। श्रीमती जी और बच्चे उत्सुक नेत्रों से छत पर लटके हुए पंखे की तरफ देख रहे थे। हमने ईश्वर का नाम लेकर रेगुलेटर का बटन घुमाया। पंखे में हरकत हुई। ऐसा प्रतीत हुआ कि सदियों से कब्र में सोया हुआ मुर्दा पुनः जीवित होने की असफल चेष्टा कर रहा है। थोड़ी-थोड़ी देर के बाद पंखा दम लेने के लिये रुक जाता था और फिर चल पड़ता था। मैंने बटन को थोड़ा और घुमाया तो पंखे के सोये हुए सभी पुर्ज़े पूरी तरह जाग उठे और भिन्न-भिन्न आवाज़ें देने लगे। शाँ-शाँ के साथ ठूँ-ठूँ की आवाज़ें निकलने लगीं। एक-आध मिनट के बाद बड़े ज़ोर के साथ सीं सीं की आवाज़ आती थी। इन मिली-जुली आवाज़ों को सुनकर प्रत्येक राहगीर ठहर जाता था और ड्योढ़ी में झाँककर पूछता था कि बाबू जी क्या आपने अन्दर चारा काटने वाली मशीन लगा रखी है। मैं खिसियाना होकर कहता कि नहीं, ज़रा पंखे की टराई ले रहा हूँ। मैंने बटन को उल्टा घुमाकर पंखे को बन्द कर दिया तो ऐसा मालूम हुआ कि किसी भारी रेलवे शैड से बाहर आ गया हूँ। श्रीमती जी ने पंखा बन्द करने का कारण पूछा तो मैंने कहा—आखिर बूढ़ा है, इसे दम तो लेने दो, लगातार कैसे काम कर सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ समय के बाद मैंने बटन को पूरी गति पर घुमाया। अब पंखे में वह फुर्ती और जागृति आ गई कि देखकर अचरज होता था। भान्ति-भान्ति की आवाज़ों में एक विशेष प्रकार का सुरीलापन पैदा हो गया था। वास्तव में यह चेतना एवं जागृति उस चमक अथवा रौनक की तरह थी जो मरने से पहले प्रत्येक रोगी के चेहरे पर आ जाती है। पलक झपकते ही एक झटके के साथ तीनों ब्लेड तीन दीवारों के साथ जा टकराये और पंखा सदा के लिये गहरी नींद सो गया। मैंने श्रीमती जी से कहा कि तुम मृतक शरीर के सिरहाने बैठो, मैं इसके क्रियाकर्म के लिये किसी पंडित को बुला लाता हूँ।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमती जी

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी ने क्या खूब कहा है कि शादी बूरे के लड्डू हैं, जो खाये वह भी पछताये, जो न खाये वह भी हाथ मलता रहता है। हमें पहले ही शादी से एक प्रकार की चिढ़ थी। इसलिये हम ये लड्डू खाने के लिये तैयार न थे। आये दिन हम घर में बड़े भाई और भावज की नोंक-झोंक सुनते थे। भाई साहिब प्रायः देर से घर आते थे। भाभी को उनकी यह आदत बिल्कुल पसंद न थी। भाभी साहिबा वैसे तो कद की नाटी थीं परन्तु उनकी ज़बान गज़-भर लम्बी थी। भाई साहिब के घर में पदार्पण करते ही यह ज़बान कैंची की तरह चलने लगती थी। अजी, आपको किसी के दुःख-दर्द की क्या चिन्ता है। जहाँ मित्रों के साथ खुशगप्पियों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लग गये, आपको घर की सुध तक नहीं रहती। अब मैं कब तक चूल्हे के साथ लगी रहूँ। आपको कम-से-कम दूसरों के कष्ट का भी ध्यान होना चाहिये। मुन्ना का खांसी से बुरा हाल हो रहा है। चार दिन से चीख़ रही हूँ कि किसी डाक्टर को दिखाओ मगर आपकी बला से।

भाई साहिब के लिये डाँट-डपट का यह कार्यक्रम कोई नवीन बात न थी। फिर भी वे अपने बचाव के लिए ऐसा बहाना तराशते थे, जिसे सुनकर भाभी साहिबा के अतिरिक्त संसार का प्रत्येक प्राणी विश्वास करने पर प्रेरित हो सकता था। मगर हमारी भाभी एक ऐसी काइयाँ थी कि उस पर कोई नुस्ख़ा कारगर न होता था। वह लिफाफ़ा देखकर ही ख़त का मज़बून भाँप लेती थीं। अनुमान-शक्ति की गंभीरता का यह हाल था कि कबर की मिट्टी सूँघकर मुरदे का हाल बयान कर सकती थीं। वे इन हीले-हवालों को कच्चे धागे की तरह छिन्न-भिन्न कर देती थीं। और लगे हाथों शिकायतों का दफ़्तर खोल देती थीं। मुन्ना बड़े ध्यान से अपनी माता को देखता जाता था। ज्यों-ज्यों उनकी आवाज़ में तेज़ी आती जाती थी, मुन्ना भी उसी क्रम से अपना मुँह बसूरना शुरू कर देता था। जब यह आवाज़ किसी विशेष दर्जे पर पहुँच जाती थी, तो मुन्ना अकस्मात् इतने ज़ोर से रोना शुरू कर देता था कि जैसे किसी भिड़ ने काट खाया हो। भाई साहिब मुन्ने के रोने की ताब न लाकर गरजदार आवाज़ में भाभी को शान्त करने का प्रयत्न करते थे। भाभी साहिबा आस्तीन चढ़ाकर तुर्की-बतुर्की जवाब देती थीं। अब तो जनाब वह हुल्लड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मचता था कि घर में महाभारत के युद्ध का नक्शा खिंच जाता था। अब आप ही बतायें कि जिस डगर पर चलने का यह परिणाम हो, वह राह ही क्यों अपनायी जाये।

हमारी अब तक बड़े मज़े से गुजर रही थी। उन दिनों हम कालिज में थे। सुबह-सुबह बाग में जाकर कसरत करना, वहाँ से दो-तीन घण्टे के बाद लौटना तो किताबों में जुट जाना। किताबों से जी भर गया तो बिल्ली के बच्चे से खेलना शुरू कर देते थे। उसकी शरारतों से तंग आ जाते तो रेडियो हमारा साथी बन जाता। जब इससे भी उकता जाते तो मित्रों की मण्डली में गप्पें उड़ाई जाती थीं। वस्तुत: जीवन की सरिता निर्बाध गति से बहती थी। काश कि वे दिन फिर लौट आते!

जब हमने बी० ए० पास किया तो चारों ओर से शादी के तकाज़े शुरू हो गये। ऐसा प्रतीत होता था कि शहर भर की जवान लड़कियों के माता-पिता हमारे ग्रेजुएट बनने की इन्तज़ार में थे। अब तो यह बात थी कि जब भी हम घर में प्रवेश करते तो कोई न कोई श्रीमती जी हमारे इण्टरव्यू के लिए इन्तज़ार में होती थीं। हमें भावी पत्नी के सम्बन्ध में अनेक बातें बताई जातीं। भारी दहेज का लालच दिया जाता मगर हम थे कि पट्ठे पर हाथ न रखने देते थे। इसलिए जो भी आता अपना सा मुँह लेकर लौटता।

हमारी बरादरी में एक प्रतिष्ठित बजुर्ग थे। उन्हें हर कँवारे मनुष्य से अकारण चिढ़ थी। जब कभी राह-बाट में उनसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलने का अवसर आता तो वे शादी पर एक सारगर्भित भाषण दे डालते थे। अरे, कँवारे आदमी की भी कोई ज़िन्दगी है। न खाने का मज़ा, न पीने का आराम, न बैठने की सुविधा, न उठने का सुख। यदि कहीं बीमार पड़ जाओ तो टापते रहो, कोई पानी देने वाला नहीं मिलता। यदि किसी रिश्तेदार ने मेहरबानी की तो पानी दे डाला या डाक्टर से दवाई ला दी। वास्तव में पत्नी के बिना सारा सिलसिला मुसाफिरी होता है। वही सच्ची सेवा-सुश्रूषा कर सकती है। मेरी मानों तो हवेलीवाले वकील साहिब की लड़की से शादी कर लो। बड़ा खान्दानी आदमी है। दौलत-माया की भी कोई कमी नहीं है। लड़की भी बड़ी गुणवती और रूपवती है। ऐसा रिश्ता कहाँ मिलेगा। इस प्रकार वे बजुर्ग महाशय हमें आये-दिन उपदेश देते रहते थे और हम थे कि हर बार हूँ-हाँ करके उन्हें तराह दे जाते थे।

इन्हीं दिनों हमारी नौकरी भी लग गई। अब तो शादी की चर्चा बहुत ज़ोर पकड़ गई। सभी रिश्तेदारों ने हमारा सिलसिला जोड़ने में कोई भी कसर उठा न रखी। मगर हम एक ही न की रट लगा रहे थे। कुशल यह थी कि अब तक भाभी साहिबा ने इस महान् कार्य में कोई दिलचस्पी नहीं ली थी। उन्होंने कभी भी शादी के सम्बन्ध में हमारा दृष्टिकोण जानने का प्रयत्न नहीं किया था। एक दिन जो शाम को हम दफ़्तर से लौटे तो वह मुस्कराकर कहने लगीं कि तुम्हारी तो दुनियाँ से रीत ही निराली है। यह भीष्म पितामह की आत्मा कबसे तुम्हारे अन्दर आई है। ज़रा गिरेबानमें मुँह तो डालकर देखो कि तुम्हारे दोस्तोंमें अब तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई कवारा है, केवल तुमने ही ब्रह्मचर्यव्रत धारण करने का ठेका ले रखा है। हमने भाभी साहिबा के ये छटे-फूँके शब्द सुने तो चौंक पड़े कि बड़े मूज़ी से पाला पड़ा है। ईश्वर ही बचा सकता है। पता नहीं हमने उस समय घबराहट में क्या कहा, मगर भाभी ने हमें वह आड़े हाथों लिया कि हमने सब हथियार छोड़ दिये और कह उठे--

सरे तस्लीम ख़म है जो मिज़ाजे यार में आये

हमारी शादी हो गयी। पत्नी क्या थी बस यही समझो कि किसी सीता अथवा सावित्री ने बीसवीं सदी में दोबारा जन्म लिया था। बिना कहे नहाने के लिए गर्म पानी मिल जाता था। दफ़्तर से लौटते तो गर्म चाय और मधुर मुस्कान से हमारा स्वागत होता। यह सब कुछ देखकर हमें खुशी के साथ अफसोस भी हुआ कि हमने ये बूरे के लड्डू देर से क्यों खाये हैं।

ज्यों-ज्यों समय बीत रहा था हम श्रीमती जी में एक विशेष प्रकार का परिवर्तन देख रहे थे। हमें ऐसा प्रतीत होने लगता कि हम दोनों के विचारों में आकाश-पाताल का अन्तर है। जो चीज़ हमें पसन्द थी, वह श्रीमती जी को एक आँख न भाती थी। हम अगर बैंगन का भर्ता पसन्द करते थे तो वे आलुओं का भर्ता बड़े चाव से खाती थीं। हम यदि कम मीठे वाली चाय पीते थे तो वे अपने लिए करारे मीठे वाली चाय बनाती थीं। केला हमारा मनभाता खाजा था परन्तु केले का नाम सुनते ही उनकी भूख मर जाती थी। हम इन बातों को तनिक भी महत्त्व नहीं देते थे क्योंकि प्रत्येक मनुष्य की अपनी-अपनी पसन्द होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय अपनी स्वाभाविक गति से बीत रहा था। सर्वप्रथम मुन्ने ने और उसके तीन वर्ष बाद गुड्डी ने हमारे घर में प्रवेश किया। यहाँ भी हमारी और श्रीमती जी की नहीं पटती थी। हम अगर मुन्ने को प्यार करते थे तो वे गुड्डी को चूमती थीं, हम यदि मुन्ने पर जान छिड़कते थे तो वह गुड्डी पर जान न्योछावर करने के लिए तैयार हो जाती थीं।

उन दिनों राशन का बोलबाला था। इसलिए हम मेहमानों से कतराते थे। श्रीमती जी भारतीय सभ्यता के अनुसार मेहमान को देवता का रूप समझती थीं। जो भी मेहमान एक बार आता था, वह श्रीमती जी की अतिथि-सेवा को कभी भूल नहीं सकता था। इसलिए श्रीमती जी की सहेलियोंका वर्ग भी बहुत विशाल था। वे प्रायः आमोद-प्रमोद में अपनी सहेलियों के साथ हँसी मज़ाक की फुलझड़ियाँ छोड़ती रहती थीं, जिससे घर का स्तब्ध वातावरण गूँज उठता था। घर में प्रायः सखी-सहेलियों का ताँता लगा रहता था। उनकी सहेलियाँ जब मज़े ले-लेकर पक्वान्न खाती थीं तो हम कमरे के अन्दर बैठे हुए उनकी चपड़-चपड़ सुनते और दिल मसोस-कर रह जाते थे। वे अगर चाय पीती थीं तो हम खून के आँसू पीते थे। हमने कितनी बार कहा कि हे भाग्यवती! ज़रा देखो तो कितना भयंकर समय जा रहा है। खाने-पीने की चीज़ें खुले बाज़ार बहुत कम मिलती हैं। इस युग में मेहमानों का इतना सत्कार उचित नहीं। वे मुस्कराकर जवाब देतीं—यह तो अपनी-अपनी पसन्द है। मैं जानती हूँ कि आपको मेहमानों से कोई लगाव नहीं, परन्तु मेरे लिए अतिथि-सेवा एक पवित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म है ।

एक दिन हम शाम को घर लौटे तो श्रीमती जी दो-तीन स्त्रियों से अपनी उदारता के बारे में बढ़-बढ़कर बातें बना रही थीं । उनकी बातों से ऐसा लगा कि वे उनकी कोई दूर की रिश्तेदार हैं, जो अम्बाला में किसी शादी के सिलसिले में आई हैं । वे जब विदा होने लगीं तो श्रीमती जी ने उन्हें भोजन तथा रात बसर करने का निमन्त्रण दिया । हमारा माथा ठनका कि अवश्य अब कुछ न कुछ होकर ही रहेगा । उन्होंने कहा कि हमारे साथ पाँच-चार स्त्रियाँ और भी हैं । श्रीमती जी ने बहुत प्रसन्न होकर कहा कि उनको अवश्य ले आइये ।

अब जनाब थोड़ी देर के बाद आठ-दस औरतों का काफिला हमारे घर पर टूट पड़ा । घर में इतना फालतू सामान कहाँ । माँग-ताँगकर चारपाइयाँ और बिस्तर पूरे किये । ईश्वर का शुकर था कि राशन घर से निकल आया । रात के बारह बजे तक मेहमानों को खिला-पिलाकर हम खुली छत पर ज़मीन पर ही बिस्तर बिछाकर दराज़ हो गये ।

कोई रात के दो बजे होंगे कि श्रीमती जी ने मुझे झंझोड़कर जगाया और कहा कि लक्ष्मी को हैज़ा हो गया है और उसका बुरा हाल हो रहा है । हम हड़बड़ाकर उठे और डाक्टर की ओर दौड़े । डाक्टर अपने मिलने वाला था, उसी वक्त साथ हो लिया । रोगिणी को देखा । अपने बक्स से एक इन्जेक्शन दिया और एक पीने की दवाई तजवीज़ की, जिसे लेने के लिए मुझे उनकी दुकान जाना पड़ा । डाक्टर ने दवाई का आठ रुपये आठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आने का बिल भी हमारे हाथ पर दाग़ दिया।

सुबह हुई तो मेहमानों का काफिला विदा हो चुका था। परंतु अपने पीछे कई तरह की स्मृतियाँ छोड़ गया था। एक चारपाई टूट चुकी थी। दो चादरें फट गई थीं। आटे की खाली मटकी मुँह फाड़-फाड़कर हमारा ध्यान आकृष्ट कर रही थी। नौकर ने मटकी उठा ली और हम बाज़ार की ओर चल दिये मगर रह-रहकर पछताते थे कि हमने बूर के लड्डू क्यों खाये।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्मची और फिल्म स्टार

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिलम स्टार शब्द तो बड़ा प्रचलित है, परन्तु फिल्मची आपके लिए बिल्कुल नया प्रयोग है। बस, यही समझ लीजिये कि जिस तरह प्लेग का शिकार सबसे पहले ग़रीब चूहा होता है, इसी तरह फिल्मची आम तौर पर कालिज के वे छोकरे होते हैं, जिन पर फिल्मी कीटाणु अपना प्रभाव डाल देते हैं। ज्यों-ज्यों ये कीटाणु ज़ोर पकड़ते जाते हैं, फिल्मी मेनिया तेज़ से तेज़तर होता जाता है। इस मरज़ के दीवाने प्रायः अपने आपको मजनूँ का प्रतिनिधि समझते हैं। प्रत्येक नई फिल्म की हीरोइन से इन्हें ग़ायबाना प्रेम हो जाता है! साधारण ज्ञान से उन्हें चाहे तनिक भी लगाव न हो, परन्तु वे इतना अवश्य जानते हैं कि मधुबाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन की कितनी बहारें देख चुकी है। भूगोल की चाहे इन्हें बिल्कुल थोड़ी सी भी सुधबुध न हो, परन्तु इनको इतनी जानकारी अवश्य होती है कि नूतन स्विटज़रलैण्ड क्यों गई थी और वह किस होटल में ठहरी थी। शहर में मोटर या बस की कोई दुर्घटना हो जाय तो इनकी बला से। ये क्यों अपना दिमाग़ परेशान करें, मगर मीनाकुमारी की बायें हाथ की छिंगनी कब और कहाँ मोटर दुर्घटना का शिकार हुई थी, यह भूल जाना उनके बस का रोग नहीं है। वास्तव में इनसे जब भी बातचीत करने का अवसर मिले, यही प्रतीत होता है कि फिल्मी एन्साईक्लोपीडिया पर इनका विशेष अधिकार है।

फिल्मची लाख प्रयत्न करने पर भी छिपा नहीं रह सकता। आप सैकड़ों नवयुवकों में से इसे सहज ही पहचान सकते हैं। इसके बाल दलीपकुमार कट के होते हैं। बातें करें तो आप तत्काल समझ जायेंगे कि हजरत सोहराब मोदी के डायलॉग के लहजे को अपनाने की नाकाम कोशिश कर रहे हैं। ज़ोर से हँसें तो जानीवाकर के कहकहा का भ्रम होता है। क्लास कट करके सिनेमा देखना, फैशन करना, बाज़ारों और सड़कों के चक्कर काटना ऐसे युवकों की हॉबी होती है। जब भी किसी नवयुवक में ये लक्षण दिखाई देने लगें तो समझ लो कि फिल्मची पूरी तरह फिल्मी कीटाणुओं का शिकार हो चुका है और रोग ने पाँव जमा लिये हैं।

फिल्मची के रोग की दूसरी स्टेज तब होती है, जब वह देवानन्द बनने के मधुर स्वप्न लेकर घर से बम्बई पहुँचता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनभर बम्बई की प्रसिद्ध स्टूडियो के चक्कर काटना या एक्ट्रैसों के बँगलों की मटरगश्ती करना ही उसका मुख्य उद्देश्य होता है। कई बार किस्मत के मारे ये फिलमची किसी फिल्मी चार-सौ-बीस के अड्डे भी चढ़ जाते हैं। इनके हथकण्डे बड़े विचित्र होते हैं। ये इस तरह के भोलेभाले नवयुवकों को हीरो बनाने के सब्ज़ बाग दिखाकर उनकी सारी पूँजी हड़प कर लेते हैं। जब दो-चार तड़ाके के फाके लगते हैं और रातें सड़क की पटरी पर गुज़ारनी पड़ती हैं तो सारा नशा हिरण हो जाता है और फिल्मी कीटाणु स्वयं मर जाते हैं और हज़रत पूरी तरह स्वस्थ होकर घर लौटते हैं।

फिलमची या फिल्मी परवानों की तरह फिल्म स्टारों का जीवन भी विचित्र प्रकार का है। कौन जानता है कि वह आदमी जो रजतपट पर बादशाह का अभिनय कर रहा है और जिसके कानों में बादशाह सलामत या महाराजाधिराज की आवाज़ पड़ती है, वस्तुतः एक निर्धन मनुष्य है, जिसने सम्भवतः पिछली रात किसी नानबाई की दुकान पर गुज़ारी हो। किसे मालूम है कि बहुत-सी फिल्म तारिकाओं का आँखों को चुंधिया देने वाला सौन्दर्य केवल फिल्मी मेक-अप पर निर्भर है। बनावटी रंगरोगन अथवा टीपटाप उतर जाने पर कई अभिनेत्रियों का तो अमावस की रात को भी लज्जित कर देने वाला रंगरूप छिपा नहीं रहता। वस्तुतः फिल्मी-संसार इतना विचित्र है कि यहाँ हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और होते हैं। यहाँ असल नकल और नकल असल बन जाती है। चित्रपटी पर जब किसी हीरो की फिल्मी मृत्यु हो जाती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है तो उस समय उसके सिरहाने हीरोइन इस प्रकार शोकभरे लहजे में आसावरी की तान छेड़ देती है कि हाल में बैठे हुए लोगों को विश्वास हो जाता है कि अभी लकड़ियाँ आईं और यह बेचारी चिता बनाकर सती हो जायगी। इसी तरह जब हीरो और हीरोइन परस्पर प्रेम की पीगें बढ़ाते हैं, तो उस समय इनके हृदय की वीणा के तारों को झंकृत कर देने वाले डायलॉग सुनकर इन पर मजनू और लैला का गुमान होता है। परन्तु यह सारी लीला स्टूडियो की दुनिया तक ही सीमित है। मृगतृष्णा की तरह इसका वास्तविक जीवन से रंचमात्र भी सम्बन्ध नहीं। यहाँ की आशाएँ और रंगीनियाँ सेम्बल के फूलों की तरह निष्प्राण होती हैं। इस लिए अभिनेतागण शूटिंग की समाप्ति पर जब बाहर आते हैं, तो बरबस कह उठते हैं—

ख्वाब था जो कुछ के देखा जो सुना अफसाना था

लाहौर की घटना है। उन दिनों चलचित्र का स्थान नाटक ने ले रखा था। भाटी दरवाज़ा के बाहर मदन थ्येट्रीकल कम्पनी का एक ड्रामा हो रहा था। नायिका अपने प्रेमी के मृतक शरीर पर ज़ारोज़ार रो रही थी। इतफ़ाक की बात है कि यह सीन इण्टरवल से बिल्कुल पहले का था। आप जानते हैं कि खोंचेवाले इण्टरवल के लिए बड़े बेताब होते हैं। हीरोइन लाश पर विलाप कर रही थी और स्टेज का बड़ा पर्दा शनैः-शनैः गिरने का उपक्रम कर रहा था क्योंकि अब इण्टरवल होनेवाला था। हीरोइन रो-रोकर कह रही थी—हे मेरे भगवन्! अब मेरे लिए इस संसार में क्या रह गया है। ज्यों ही हीरोइन के मुख से ये शब्द निकले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अभी पर्दा पूरे तौर पर गिरा भी न था कि एक खोंचेवाला बोल उठा—केले गंडेरियाँ। ऐसा प्रतीत होता था कि खोंचेवाला भी फिल्मी अदाकारों की बनावटी मुहब्बत को खूब समझता है।

यदि कहीं किसी एक्टर और एक्टरैस को कभी सचमुच मुहब्बत का उबाल आ ही जाये तो भी कुछ समय के बाद उनका प्रेम फिल्मी प्रेम का रूप धारण करना आरम्भ कर देता है। जवानी और मुहब्बत के जोश में यदि ये परस्पर विवाह के बंधन में भी बँध जायें तो भी इनका कोई भरोसा नहीं होता। न जाने कब पतिदेव को छींकें आने लगें और देवी जी तलाक की तैयारी में लग जायें। इसीलिए फिल्मी संसार की नव्वे प्रतिशत शादियाँ असफल सिद्ध होती हैं। हज़ारों लाखों दर्शकों का दिल लुभानेवाली तारिकाएँ भला किसी एक की सम्पत्ति बन सकती हैं। वे एक-दो बच्चों की माँ बनने के बाद भी अपने पति को धत्ता बता देती हैं और बेचारे को वियोगभार के अतिरिक्त बच्चों का भार भी उठाना पड़ जाता है। वस्तुतः फिल्म स्टारों के जीवन में बनावट का इतना दौरदौरा होता है कि वास्तविकता पर नकल का सन्देह होने लगता है और यदि सचमुच कोई फिल्म स्टार बोलोराम ही हो जाय तो यही पता चलता है कि हज़रत ने एक्टिंग ही फरमाया है।

मिस्टर विनोद फिल्मी प्रयोगशाला में एक साधारण स्टोरकीपर थे। भाग्य ने पलटा खाया तो डायरेक्टर देसाई की नज़रों में जँच गये और कुछ ही वर्षों में चोटी के हीरो बन गये। तीन-चार वर्ष तो इनकी खूब धूम मची परन्तु भाग्य ने अधिक समय तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ न दिया और वे एक भयानक रोग से आक्रान्त हो गये। अन्त में वह दिन भी आ पहुँचा जब उन्होंने अपने जीवन का अन्तिम अभिनय करना था। स्टूडियो में ही उनको रोग का दौरा पड़ गया और वे बेहोश हो गये। उन्हें एक कमरे में ले जाया गया। डायरेक्टर देसाई और अन्य सभी ऐक्टर और ऐक्ट्रैसें उनके सिर-हाने खड़ी थीं। अचानक अविनाश पानी की सुराही की ओर भागा और गिलास में पानी भरकर मरने वाले के मुँह के पास ले गया। डायरेक्टर देसाई और दूसरे फिल्म स्टार सख्त हैरान हुए कि यह क्या हरकत है। अविनाश बोला, तनिक ध्यान दीजिये यदि बाहर कोई इस दृश्य को शूट कर रहा हो तो फिल्मी दृष्टि-कोण से यह कितना अधूरा रह जायगा। देखने वाले कहेंगे कि मरने वाले के सिरहाने इतने आदमी खड़े हैं मगर किसी को इतनी सूझबूझ नहीं हुई कि इस बेचारे के मुँह में पानी की ही दो-चार बूंदें टपका दें। डायरेक्टर देसाई ने संतोषपूर्ण नज़रों से अविनाश को देखा। सरूप उठा। उसने तिपाई और दवाई की शीशी लाकर विनोद के सिरहाने रख दी। मिस चम्पा दौड़कर अल्मारी से कोई अंग्रेज़ी की किताब उठा लाई और मरने वाले के पास बैठकर अधर हिलाने लगी। ऐसे लगता था कि दुनिया से विदा लेनेवाले को भगवद्गीता का पाठ सुना रही हो। डायरेक्टर देसाई झट बोल उठे कि अब यह दृश्य सोलह आने सम्पूर्ण है। और साथ ही स्टूडियो के चपरासी को पुकारा--ओ रामू--ज़रा भागकर जाओ। बाहर कहीं मिस्टर कोछड़ होंगे। उनको ढूँढकर फौरन बुला लाओ ताकि वे इस दृश्य को ध्यानपूर्वक देख लें क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगली फिल्म में उन्होंने मरने वाले का पार्ट अदा करना है। रामू वापिस आकर बोला—–सरकार वे इस दृश्य को अभी-अभी देख गये हैं और इस समय मेक-अप रूम में आइने के सामने खड़े होकर मिस्टर विनोद के मरने की नकल उतार रहे हैं।

निदान मिस्टर विनोद की आँखें पथरा गईं। सिर को झटका लगा और उसने दम तोड़ दिया। मिस्टर देसाई चाहते थे कि भावी हीरो मिस्टर कोछड़ को लिटाकर आत्मा के परवाज़ करने का दृश्य भी शूट कर लें, मगर विनोद के मृतक शरीर को भी ठिकाने लगाना था जिसका श्मशान भूमि ले जाना और संस्कार करना सबके लिये एक विकट समस्या बन रही थी। ज्यों-त्यों करके अरथी मँगवाई गई और श्मशान यात्रा के लिये सब लोग तैयार हो गये। अरथी के पीछे चलनेवाला यह जन-समुदाय होली के जलूस के समान दिखाई देता था। किसी ने बादशाह की चमक-दमक वाली पोशाक पहन रखी थी। किसी के शरीर पर सिपाही की वरदी थी। किसी ने डाकू के वस्त्र पहन रखे थे। इनमें प्रायः बहुत ही कम लोग इस प्रकार श्मशान भूमि में आये थे। इसीलिए इनके पास नहाने का अंगोछा तक न था।

जब सब के सब श्मशान भूमि पहुँचे तो इन्हें पता चला कि मृतक शरीर को जलाने का कुछ विधिविधान भी होता है, जिसके लिए किसी पंडित का होना अनिवार्य है। एक आदमी को तत्काल शहर दौड़ाया गया जो एक बूढ़े पंडित को अपने साथ ले आया। पंडित जी ने मृतक संस्कार की विधि पूर्ण की जिसे सभी फिल्म स्टार बड़े ध्यान से देखते रहे। जब पंडित जी अपने कार्य से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निपट गये तो डायरेक्टर देसाई बोले—पंडित जी, आपकी सेवा का पारिश्रमिक कम्पनी की तरफ से दिया जायगा। आप निश्चिन्त हो जायें। पंडित जी पर कंपनी के नाम का वह रोब पड़ा कि उन्होंने माँगने का साहस तक न किया और चुपचाप अपने घर चल दिये।

पंडित जी राह चलते सोचते जा रहे थे कि इतनी बड़ी कम्पनी है, दस-बीस रुपये से क्या कम देगी। चलो ईश्वर ने सुनी है। श्रीमती जी कई रोज़ से मुन्नी के फराक की रट लगाये हुए हैं। अपनी पगड़ी भी अब बुर्द हो चुकी है, यह भी खरीद लेंगे। खाँड कब की खत्म हो चुकी है, उसका प्रबन्ध भी हो जायगा। इसी तरह अनेक ख्याली पुलाव पकाते पंडित जी घर पहुँच गये।

दूसरे दिन प्रातःकाल डाक से पंडित जी को एक लिफाफा मिला। पंडित जी ने इसे टटोला तो अन्दर से नोट की सी खड़-खड़ाहट सुनाई दी। पंडित जी की बाछें खिल गईं। पंडिताइन भी आटे से भरे हुए हाथों के साथ ही रसोईघर से लपक पड़ीं और पंडित जी के पास आकर खड़ी हो गईं। पंडित जी ने काँपते हुए हाथों से लिफाफा चाक किया। अन्दर से बैंक पेपर पर हिन्दी में लिखी हुई एक चिठ्ठी मिली और उसके साथ मोटे कागज़ का एक चतुष्कोण सा टुकड़ा चिपका हुआ था जिस पर अंग्रेज़ी के कुछ शब्द छपे हुए थे। चिट्ठी बहुत ही संक्षिप्त थी——

पूज्य पंडित जी,

कम्पनी आपकी सेवा का हार्दिक धन्यवाद करती है। आपका नाम कंपनी के रिकार्ड में श्रा गया है। जब भी कभी इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह की कोई घटना हुई तो आपको याद किया जायगा। आपकी सेवा का ध्यान करते हुए एक लोकल सिनेमा का सैकेण्ड क्लास पास भेजा जा रहा है। आप जिस शो में भी जाना चाहें आपको कोई रोक-टोक न होगी।

पंडित जी ने चिट्ठी पढ़ी। उनके मुँह से "अरे दुष्टो" शब्द निकले और वे सिर पकड़कर चारपाई पर बैठ गये।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शराब की बोतल

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने लपककर बोतल को उठाया। रंगीन शराब का एक पैग ग्लास में उँडेला और एक क्षण के लिए ठहर गया। सहसा बोतल बोल उठी––क्या सोच रहे हो ? गटागट पी जाओ।

हातिमताई और गुलबकावली के किस्सों में पढ़ा था कि पशु-पक्षी भी मनुष्यों की तरह बातें करते हैं। प्राचीन ऋषि-मुनि वृक्षों और पर्वतों से वार्तालाप करते थे। कादम्बरी का वैशम्पायन और पद्मावत का हीरामन अपनी मधुर बातों से सबका मन हर लेते थे। आजकल भी साईंस ने वे चमत्कार दिखाये हैं कि अनेक असंभावित बातों को वास्तविकता के रंग में रंग दिया है। लकड़ी और लोहे में वह करामात भर दी गई है कि आप चाबी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घुमाकर सहगल के तराने सुन सकते हैं। हज़ारों मील दूर बैठे हुए भी देश-विदेशों के नेताओं के भाषण का आनन्द ले सकते हैं। टैलीवीज़न जैसे आविष्कार की कृपा से तो भाषण देने वाला मानो साक्षात् खड़ा हो जाता है। जब ये सब बातें मेरे सामने हों तो मेरे लिए आश्चर्य की क्या बात थी, यदि बोतल को भी मनुष्यों की तरह बोलने की शक्ति प्राप्त हो गई हो।

मैंने यह बात बोतल को भी कह डाली कि बड़ी बी, मुझे तुम्हारे बोलने पर कोई हैरानी नहीं। बोतल बहुत प्रसन्न हुई और कहने लगी—हे पंडित जी महाराज, मुझे तुमसे ऐसी ही आशा थी। न केवल तुम बुद्धिमान् हो बल्कि तुम्हारा हृदय भी बड़ा सुन्दर है। तुम मन और वाणी से एक हो। यही कारण है कि तुम निश्शंक होकर मुझसे प्रेम करते हो। बगले भगतों की तरह लुक-छिप कर मुझे गले नहीं लगाते। इसीलिए तुम्हारा चरित्र महान् है। वास्तव में तुम ही मेरा दुःख-दर्द समझ सकते हो। इन्हीं विचारों से प्रेरित होकर ही मैंने आज अपना अनादि मौन व्रत तोड़ा है। आज तुम अकेले बैठे हो। चारों ओर सन्नाटा है। इसीलिए मेरे चिरनिद्रित उद्गार मचल उठे हैं। ये तुम्हारे दिल की गहराइयों में डूब जाना चाहते हैं। क्या तुम मुझे दिल हल्का करने दोगे ?

मैंने ज़ोर से सिर हिलाकर हाँ कह दी और पैग को मुँह में दाखिल दफ़्तर करके तैयार हो गया। बोतल ने एक क्षण ठहर-कर अपना बयान जारी किया।

मेरे प्यारे पंडित जी, तुमने चार उँगल का सफेद तिलक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगाया हुआ है। तुम्हें देखकर प्राचीन ऋषियों का स्मरण हो आता है। लोग तुम्हें मेरे साथ देखकर दाँतों तले उँगली दबाते हैं। पहले तो वे तुम्हारे लम्बे तिलक को देखते हैं और फिर मुझे। पंडितों को मेरा दीवाना देखकर वे प्रायः जल-भुन जाते हैं। उन्हें कौन बताये कि मेरा सबसे अधिक सेवन पंडित, शेख और पादरी आदि ही करते हैं। परंतु मुझे ऐसे चाहने वालों से सख्त घृणा है। मैं मानती हूँ कि मेरे वियोग में ये लोग बुरी तरह छट-पटाते हैं। मेरे लिए भारी से भारी कुर्बानी करने को तैयार हो जाते हैं। मगर ये टट्टी की आड़ में शिकार खेलते हैं। ऊपर से तो पक्के मोमिन बने हुए हैं। मेरा नाम आते ही कानों पर हाथ रखकर राम-राम पढ़ते हैं, मगर पर्दे के पीछे मेरे साथ रंगरलियाँ मनाते हैं।

जिन दिनों मैं अमेरीका में थी, वहाँ के एक थियेटर के मालिक ने घोषणा की कि हमारे थियेटर के अन्दर शराब लाना मना है। यद्यपि हम थियेटर में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की तलाशी लेते हैं फिर भी यदि कोई हमारी आँखों में धूल झोंककर शराब ले आये तो हम उसे एक हज़ार डालर इनाम देंगे। एक दिन दैनिक क्रम के अनुसार पर्दा उठने से पहले मैनेजर ने एलान किया कि यदि कोई हमारी आँख से बचाकर शराब लाने में सफल हुआ हो तो वह सामने आकर इनाम ले सकता है। ज्योंही मैनेजर ने अपनी बात समाप्त की एक लम्बी और सफेद दाढ़ी वाले पादरी साहिब उठे और मुझे हाथ में थामे हुए आगे बढ़े। पंडित जी ! क्या आप जानते हैं कि उन्होंने मुझे कहाँ छिपा रखा था ? जब मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी अनभिज्ञता प्रकट की तो बोतल बोली—पादरी की लम्बी दाढ़ी पेट तक फैली हुई थी। उसने मेरे गले में डोरी बाँधकर मुझे अपनी गरदन के साथ लटका लिया था और मैं दाढ़ी के अन्दर बिलकुल दिखाई न देती थी। तलाशी लेने वालों ने पादरी की जेबें टटोलीं। आस्तीनों को ध्यान से देखा। आदर के साथ उनकी टोपी भी उतरवाई किन्तु पवित्र दाढ़ी को छूने का किसी ने भी साहस न किया।

मैंने ज़ोर का एक कहकहा लगाया। बोतल ने कहा पंडित जी, यह तो कुछ भी नहीं, अगर मैं तुम्हें इन बहरूपियों के कच्चे चिट्ठे सुनाऊँ तो तुम दंग रह जाओ। ये लोग रंगे सियार हैं। समाज और परमात्मा के चोर हैं। ऐसे लोग मुझे एक आँख नहीं भाते। इनसे तो केवल राओरस्म ही चलती है। मेरे सच्चे प्रेमियों की बिरादरी तो बड़ी लम्बी है। ये लोग मुझ पर जान छिड़कते हैं। मैं किस-किस का नाम लूँ। इनमें सरहद के दगारावडे, बम्बई के दादे, लखनऊ के बांके, बनारस के ठग और दिल्ली के जेबकतरे हैं। जब मैं इन लोगों की महफिल में प्रविष्ट होता हूँ तो मेरा दिल बल्लियों उछलने लगता है। इनकी जेब खाली हो या भरी, ये हर्ष में हों या शोक में, नर्मी हो या गर्मी प्रत्येक अवस्था में ये लोग मुझे अपनी सखी बनाते हैं।

मेरे चाहने वालों में ऐसे लोग भी हैं, जो न हंसों में हैं न कागों में। न तो इनकी गणना नौ में होती है, न वे तेरह की गिनती में आते हैं। जानते हो वे कौन हैं? ये वे रिन्द हैं जो रात को मुझे पीते हैं और प्रातःकाल तोबा कर लेते हैं :——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात को पी सुबह को कर ली तोबा
रिन्द के रिन्द रहे हाथ से जन्नत न गई

मगर इनमें कई रिन्द ऐसे होते हैं जो परले सिरे के निडर होते हैं। यद्यपि इनकी संख्या थोड़ी है, परन्तु जितनी भी है मोतियों में तोलने के योग्य है। यदि कहीं सुरापान पर वादविवाद छिड़ जाय तो ख़म ठोककर खड़े हो जाते हैं। सुरापान के पक्ष में ऐसे-ऐसे प्रमाण और नुकते निकालते हैं कि कोई नामी बैरिस्टर भी क्या करेगा। जब ये समाज से नहीं डरते तो धर्म और ईमान से इन्हें क्या भय है। आश्चर्य तो यह है कि कई रिन्द ऐसे भी हैं जो अभिमान से सिर ऊँचा करके कहते हैं:—

काज़ी शराब पीने दे मस्जिद में बैठकर
या वह जगह बता जहाँ पर ख़ुदा नहीं

मैंने झूमकर शेर की दाद दी और पूछा कि क्या तुम कविता भी करती हो? बोतल बोली कि मेरा और कविता का चोली-दामन का सम्बन्ध है। किसी भी कवि का काव्य तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक उसमें मेरी चर्चा न हो। मैंने सैंकड़ों कवियों की गोष्ठियाँ देखी हैं। इन गोष्ठियों में यदि कोई मेरा प्रतिद्वंद्वी होता है, तो वह माशूक ही होता है किन्तु कवि के साथ उसकी मित्रता अधिक समय तक नहीं टिकती। वह शीघ्र ही कवि को चरका दे जाता है। वियोग की घड़ियों में मैं ही कवि का ग़म ग़लत करती हूँ।

अरे पण्डित! सारा संसार जानता है कि मैं शोक सागर में डूबे हुए मनुष्य को सहारा देती हूँ। सुखी इन्सान भी मुझे पाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर्षातिरेक से नाच उठता है। परन्तु समय आने पर दोनों प्रकार के मनुष्य बेवफा सिद्ध होते हैं। उनके इस व्यवहार को देखकर मैं खून के आँसू रोती हूँ। मेरी छाती पर एक भारी बोझ है जिसके नीचे मैं दबी जा रही हूँ।

मैंने कहा, लो मैं तुम्हारा बोझा हल्का किये देता हूँ। यह कह-कर मैंने डबल पैग ग्लास में डाला। बोतल मुस्कराई और बोली :—

प्यारे पण्डित जी, यह बोझ नहीं। इस बोझ से तो मैं खुश हूँ। इसके कारण ही आप मुझे छाती से लगाये रखते हैं। मेरी सर्वप्रियता इसी की बदौलत है। मैं जिस बोझ का ज़िकर कर रही हूँ वह इन्सान की बेवफाई है। मैंने कहा——उदाहरण दीजिए। बोतल ने एक आह भरी और भरे हुए गले से कहने लगी:—

तिलकधारी पंडित जी, आप इतने ज्ञानवान होकर भी नहीं समझ सके। आपने भगवद्गीता में नहीं पढ़ा कि मनुष्य आवा-गमन के चक्कर में पड़कर बार-बार जन्म लेता है और बार-बार मरता है। इसी तरह मेरे भी अनेक जन्म हुए हैं। मेरी आयु की अवधि केवल उतनी ही है, जितनी देर तक मुझ में शराब पड़ी हो। मेरी मृत्यू का समय वह है जब मैं खाली होकर किसी कबाड़ी की दुकान में या किसी होटल की कोठरी में पटक दी जाती हूँ। शराब रूपी आत्मा के उड़ जाने से मैं मिट्टी में मिल जाती हूँ। तुम जानते हो कि यह शरीर पाँच तत्त्वों का पुतला है। शराब भी तो पाँच तत्त्वों का ही सन्निपात है। तुमने मधुशाला में प्रायः देखा होगा कि कई झक्की मित्र मेरी अग्निपरीक्षा भी करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी ईमानदारी को परखने के लिये वे मुझे दियासलाई दिखाते हैं। उस समय मेरे हृदय की आग भभक उठती है। इसी प्रकार पानी, वायु आदि तत्त्व सब मुझ में छिपे हुए हैं। तत्त्वहीन शरीर शव के अतिरिक्त कुछ नहीं। इसीलिए जब में खाली हो जाती हूँ, तो बेवफा इन्सान मुझे पास बैठाना तो दूर रहा, मेरी सूरत तक से घृणा करने लगते हैं। उस समय ऐसा प्रतीत होता है कि मेरी इनसे कभी राम-राम भी नहीं हुई थी। अब तुम ही बताओ कि क्या यह बेवफाई की पराकाष्ठा नहीं है?

दूर क्यों जाते हो, तुम्हारी ही बात कहती हूँ। थोड़ी देर में तुम मुझे खाली कर दोगे और इसी मेज़ पर छोड़कर चले जाओगे। होटल का नौकर आयेगा और मुझे उठाकर सामने की अंधेरी कोठरी में फेंक देगा, जहाँ मेरी बिरादरी की बहुत सी बहनें कैद का जीवन व्यतीत कर रही हैं। भगवान् का शुक्र है कि कैद की ये लम्बी घड़ियाँ मिल-जुलकर जैसे-तैसे बीत जायेंगी, यदि अकेले यह दुःख झेलना पड़े तो बड़ा अनर्थ हो। भगवान् जाने यह कैद कब समाप्त होगी। कैद की समाप्ति पर मेरे पुनर्जन्म का नवीन अध्याय प्रारम्भ होगा। मुझ पर नये लेबल लगेंगे और मधुशाला की नई अलमारी में स्थान मिलेगा। तब तक मुझ पर जो गुज़रेगी उसका ध्यान आते ही कलेजा मुँह को आता है। पर क्या करूँ, भाग्य का यही विधान है।

बोतल की कहानी सुनकर मेरा हृदय मर्मान्तक वेदना से भर गया और मैंने ग़म गलत करने के लिए बाकी शराब भी गिलास में उँडेल दी और कहा—प्यारी बोतल! तुम्हारी कहानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिगर के टुकड़े कर डालने वाली है, परन्तु चिन्ता न करो। मैं तुम्हें घर ले जाऊँगा और अपने कमरे के ताक में रखूँगा, जहाँ तुम सदा मेरी आँखों के सामने रहोगी। मै वचन देता हूँ कि कभी तुम्हें अपने से अलग नहीं करूँगा। क्या तुम मेरा साथ दोगी?

परन्तु मेरे प्रश्न का कोई उत्तर न मिला। मैंने देखा कि बोतल दम तोड़ रही थी। मैं उठा और अपने मुख को उसके पास ले जाकर एक फूँक मारी परन्तु उसकी आत्मा कब की बलौरी शरीर से उड़ चुकी थी।

मैंने बोतल को उठाकर कोट की जेब में डाला और घर की राह ली। रास्ते में रह-रहकर मुझे बोतल की करुण कहानी याद आ रही थी। मेरा हृदय अथाह वेदना से भर रहा था। घर पहुँचकर मैंने दरवाज़ा खटखटाया। मेरी धर्मपत्नी ने दरवाज़ा खोला। बिजली की रोशनी और मेरी धर्मपत्नी की निगाहें एक ही समय बोतल पर पड़ीं जो कोट से बाहर झाँक रही थी। श्रीमती जी ताव खाकर बोलीं---फिर वही हरकत। पंडित होकर यह काम करते हो। शरम नहीं आती और फिर इतनी ढिठाई कि शराब क़ी बोतल जेब में रखक़र घर चले आये हो?

मैंने बुझी-बुझी आवाज़ से कहा---खफ़ा क्यों होती हो ज़रा देख तो लो, खाली बोतल है---खाली बोतल।

मेरी बात सुनकर उनके मिज़ाज का काँटा बदल गया और चेहरे से क्रोध की रेखाएँ शनैः-शनैः विलीन होने लगीं। उन्होंने झपटकर बोतल मेरी जेब से निकाल ली और बिजली के बल्ब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सामने ले जाकर इसे ध्यान से देखा और जब तसल्ली हो गई तो इसे अपने साथ रसोई घर ले गईं।

मैंने खाना खाया और यह सोचकर कि प्रातःकाल बोतल को अपने कमरे में रख लूँगा बिस्तर पर दराज़ हो गया। प्रातःकाल अभी मैं हल्के-हल्के स्वप्न ही ले रहा था कि गली से किसी कबाड़ी की मनहूस आवाज़ कानों में पड़ी—खाली शीशी—खाली बोतल। मेरी धर्मपत्नी तत्काल बोल उठीं—ओ बोतल वाले। ज़रा इधर आना। जब मैंने श्रीमती जी के ये शब्द सुने तो शरीर सुन्न हो गया क्योंकि अब बोतल कबाड़ी के थैले में प्रवेश कर चुकी थी और मेरा वायदा टूट चुका था।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भैंस

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कहावत बड़ी प्रसिद्ध है कि 'ऊँट रे ऊँट तेरी कौन सो कल सीधी'। बात भी ठीक है। ऊँट का कोई भी अंग सीधा नहीं होता। मगर समझ में नहीं आता कि कहावत गढ़ने वाले की दिव्यदृष्टि भैंस को क्यों छोड़ गई है। ऊँट के शारीरिक अवयवों में फिर भी कोई न कोई तनासब तो है, मगर भैंस में इतना भी कहाँ! इस पर इसकी अप्रिय रंगत, भद्दा शरीर, बेतुकी आवाज़ और फिर चाल का तो पूछो ही मत। यूँ तो हथिनी भी झूम-झूम कर चलती है, परन्तु इसकी चाल में एक तरह की मस्ती होती है। भैंस में यह भी नहीं। यही कारण है कि कवियों ने एक प्रेमिका की चाल को हथिनी की चाल से मिलाया है परन्तु भैंस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेचारी को किसी ने आँख उठाकर भी नहीं देखा।

कौन नहीं जानता कि संगीत में कितनी मनमोहिनी शक्ति छिपी हुई है। मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी तक भी इसके प्रभाव से वंचित नहीं रहते। ऊँट घंटी की प्यारी आवाज़ सुनकर सौ-सौ कोस की मंज़िल तय कर डालता है। हिरण शिकारी के संगीत पर मस्त होकर अपनी जान तक निसार कर देता है। प्रातःकाल होते ही परिन्दों की मीठी रागिनी से सारा वातावरण झूम उठता है। बन्दर स्वयं तो नहीं गाता परन्तु मदारी की डुगडुगी की आवाज़ और बंसरी की लय सुनकर आनन्द से नाच अवश्य उठता है। हमने गाय और बकरियों को भी संगीत के प्रभाव से सिर हिलाते देखा है। परन्तु कितनी विचित्र बात है कि भैंस पर न संगीत का असर होता है न कविता का ? आप इसे कालिदास सुनायें या ग़ालिब का कलाम, हीर वारिसशाह की ऊँची तान छेड़ें, वायलन ले आयें या जलतरंग, परिणाम वही घास के तीन पात, होगा। क्या मजाल जो यह मस्तमौला जानवर टस से मस हो जाय। इसीलिए तो "भैंस के आगे बीन बजाना" कहावत का जन्म हुआ है। जब भी हमारा किसी अक्ल के अंधे और गाँठ के पूरे मूज़ी से पाला पड़ता है तो हम झल्ला उठते हैं और अनायास ही यह कहावत हमारे ओठों पर थिरकने लगती है।

अम्बाला छावनी में कवियों का बहुत ज़ोर है। इनमें कुछ सज्जन ऐसे भी हैं जिन्होंने भैंसें पाल रखी हैं। वे भलीभांति जानते हैं कि भैंस को कविता सुनाना अन्धे को नृत्य दिखाने के समान है परन्तु फिर भी वे इसमें शायरी की लटक पैदा करने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोशिश करते रहते हैं। उनका विचार है कि इस जानवर को कवि बनाना तो असंभव है, मगर कविताप्रेमी तो बनाया ही जा सकता है, जिससे यह गरदन हिला-हिलाकर शेरो-शायरी की दाद दे सके। हमारे निराश साहिब अपनी भैंस को कविता सुनाते सुनाते स्वयं कवि बन गए हैं, मगर भैंस है कि ज़मीं जुम्बद न जुम्बद गुलमुहम्मद। भगवान् ने इसे हृदय दिया है कि रेगिस्तान, जहाँ काव्य-सरिता तत्काल सूख जाती है। सुमन साहिब ने पिछले दिनों एक भैंस खरीदी है। वे अपनी भैंस को प्रतिदिन यह प्रसिद्ध फिल्मी गीत ––

आसमाँ वाले तेरी दुनियाँ से जी घबरा गया

बड़ी दर्दभरी आवाज़ में सुनाते हैं। अब तक केवल इतना हुआ है कि जब वे गीत गाना शुरू करते हैं तो उनकी भैंस गर्दन उठा-कर आसमान की तरफ देखने लगती है।

भैंस काली हो या भूरी, सफेद हो या मटियाली, सीधे सींगों वाली हो या टेढ़ेवाली, सबकी सब शान्त और सहनशील अवश्य होती हैं। सुमन साहिब की भैंस तो विशेषकर मसकीन टाइप की है। वह अपनी लम्बी-चौड़ी पीठ पर तड़ाक से पड़ते हुए डंडे को इस प्रकार सहन कर लेती है मानो उसे कोई पारितोषिक मिल रहा हो। परन्तु जब सुमन साहिब ज़बरदस्ती अपनी कवि-ताएँ उसके कानों में ठोंसने का प्रयत्न करते हैं, तो वह सबर का दामन छोड़ देती है। एक दिन वह कविता सुनते-सुनते रस्सा तुड़ाकर यों सरपट भागी कि धान के खेत में ही पहुँचकर दम लिया। खेत के मालिक ने दूर से देखा और डंडा लेकर भागा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमन साहिब ने जब यह घटना देखी तो 'हाय मेरी भैंस' के नारे लगाने शुरू कर दिये। एक भारी हंगामा पैदा हो गया। आफत तो यह है कि बेचारी भैंस को डण्डे से गहरा सम्बन्ध है। सब यही कहते हैं कि जिसकी लाठी उसकी भैंस। कोई भी तो नहीं कहता "जिसकी कविता उसकी भैंस"। इसलिए इस प्रकार के झगड़े में प्रायः लाठी वाले की ही विजय होती है और कवि महाशय लाठी और भैंस दोनों का मुँह देखते रह जाते हैं।

जिन दिनों वनस्पति देवता प्रकट नहीं हुए थे, भैंस-पालन की प्रथा अधिकतर देहातों में ही प्रचलित थी। अब जो चारों ओर से शोर उठा कि यदि देसी घी खाना चाहते हो तो गाय या भैंस पालो, तो पढ़े-लिखे बाबू भी इस ग़रीब जानवर से लाभ उठाने लगे। यह ठीक है कि पश्चिमी शिक्षा के पुजारी अपटूडेट बाबुओं के यहाँ बेचारी पुराने फैशन की भैंस के सींग नहीं समाते क्योंकि इसे ललित कलाओं से कोई सरोकार नहीं। शायरी से तो चिढ़ है परन्तु स्मरण रहे कि विद्या से इसका अवश्य कुछ न कुछ सम्बन्ध है। इसीलिए तो कहा गया है—'काला अक्षर भैंस बराबर'—

गो वहाँ नहीं पर वहाँ के निकाले हुए तो हैं
काबा से इन बुतों को भी निस्बत है दूर की

कई वर्ष हुए मेरे मिलने वालों में एक गुप्ता साहिब थे जो किसी दफ्तर में काम करते थे। उनके घर में घी प्रायः वनस्पति ही प्रयुक्त होता था। जब कभी मुन्ने को खांसी होती या गुप्ता साहिब को ज़ुकाम होता तो उनकी धर्मपत्नी डालडे के विरुद्ध कमर बाँधकर एक ज़ोरदार भाषण दे डालती थीं। अजी! यह वन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पति घी भी कोई खाने की चीज़ है। पता नहीं इसमें क्या अल्लम-गल्लम पदार्थ मिले होते हैं कि यदि इसे एक और आँच दी जाय तो यह साबुन में तबदील हो सकता है। यह मनहूस जिस रास्ते से शरीर में घुसता है, अपना बुरा प्रभाव छोड़ता जाता है। ज़बान की कड़वाहट, गले की खराश और मेदे की जलन सब वनस्पति देवता के चमत्कार का ही फल हैं। मैं तो डाक्टरों के बिल चुकाते-चुकाते तंग आ गई हूँ। इन दो महीनों के बिलों से तो हम एक अच्छी भैंस खरीद सकते हैं। देसी घी के क्या कहने। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में 'आयुर्वैघृतम्' कहकर शुद्ध घी को आयु माना गया है। ज्योंही देसी घी से तर एक लुकमा मुँह में जाता है, तबीयत में क्या सरूर आ जाता है। मस्तिष्क का एक-एक पुर्ज़ा चमक उठता है। हृदय में सन्तोष एवं आनन्द की एक लहर दौड़ जाती है। गुप्ता साहिब भैंस का नाम सुनकर नाक-भौं चढ़ाने लगते थे और कहते थे 'भलीमानुस ! इस युग में भैंस का पालन-षोषण जान-जोखों का काम है। भैंस के साथ स्वयं भैंस बनना पड़ता है। इसलिए मेरी मानो तो इस चक्कर में मत पड़ो।' मगर तिरिया हठ भी तो कहाँ पीछा छोड़ता है। प्रतिदिन के कहने-सुनने से तंग आकर एक दिन भैंस ख़रीद ही लाये और इसकी सेवा इस तन्मयता से करने लगे कि माता-पिता की भी कोई क्या करेगा। यद्यपि वे स्वयं बेचारा थे परंतु भैंस के लिए चारा लाने में कभी ग़फ़लत नहीं करते थे।

एक दिन पता नहीं भैंस के मन में क्या आया कि वह रस्सा तुड़ाकर भाग निकली और शहर के बाहर एक खेत में जा घुसी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेत के स्वामी ने आव देखा न ताव सीधे इसे सरकारी फाटक में बन्द करवा दिया। गुप्ता साहिब दिल्ली गये हुए थे। आते ही यह दारुण घटना सुनी तो कलेजा धक-धक करने लगा। ज़रा होश सँभाली तो धर्मपत्नी से कहने लगे कि हमारे तो खानदान में कभी किसी ने कानून की अवज्ञा नहीं की। यह सरकश भैंस कहाँ से हमारे पल्ले पड़ गई है। सहसा उनकी नज़रों के सामने भैंस की मासूम सूरत फिरने लगी और उनके मुँह से स्वत: निकल पड़ा-- 'ईश्वर मेरी भैंस की खैर हो'।

अन्त में साहस बटोर कर सरकारी फाटक की राह ली और भैंस से मुलाकात करने की इच्छा प्रकट की। फाटक के अधिकारियों ने कहा कि सरकारी फाटक के कानून सैण्ट्रल जेल से भी अधिक कठोर हैं। मिलना है तो प्रार्थनापत्र दीजिए। हम इसे सदर दफ़्तर में भेज देंगे। वे चाहें तो आज्ञा दें, चाहें न दें। मरता क्या न करता। विवश होकर प्रार्थनापत्र लिखा और सदर दफ़्तर में भिजवा दिया। दिन पर दिन व्यतीत होने लगे परन्तु कोई उत्तर प्राप्त न हुआ।

वकील से परामर्श किया तो उसने बताया कि भैंस से मुलाकात करने की आज्ञा प्राप्त करना टेढ़ी खीर है। सम्भव है इसी तरह एक वर्ष व्यतीत हो जाय। आप जुर्माना देकर भैंस को छुड़ा क्यों नहीं लेते ? निदान गुप्ता साहिब ने वकील के कथन पर अमल किया और भैंस को घर ले आये।

भैंस की तुलना बुद्धि से की जाती है जो कि सरासर गलत और अनुचित है। इसकी खोपड़ी में अक्ल का खाना ही गायब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। भैंस का क्षेत्रफल तथा वज़न तक लोगों ने मालूम कर लिया है मगर अकल के विषय में अभी तक सब कुछ रहस्यमय है। इसलिए अक्ल और भैंस की कोई निस्बत नहीं है। जब यह बात है तो हम कैसे कह सकते हैं कि अक्ल बड़ी है या भैंस ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाय

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़बाँ पर बारे खुदाया यह किसका नाम आया
कि मेरे नुत्क ने बोसे मेरी ज़बां के लिये

मिर्ज़ा गालिब ने माशूक को लक्ष्य करते हुए कहा है कि जब भी मैं तेरा नाम लेता हूँ, मेरी वाक्शक्ति मेरी ज़बान को चूमने लगती है। इसे आप कवि की कल्पना समझिये या अतिशयोक्ति परन्तु इस सचाई से कौन इनकार कर सकता है कि संसार की आधी से ज़्यादा आबादी चाय की दिलदादा बनी हुई है। नव्वे करोड़ मनुष्य प्रातःकाल बिस्तर से उठते ही चाय की याद में चुटकियाँ लेने लगते हैं और इनमें से अधिकांश बिस्तर पर लेटे-लेटे ही इसका सेवन करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार में नाना प्रकार के फल और तरकारियाँ उपलब्ध होती हैं। अंगूर अपने निराले माधुर्य से किसको आकृष्ट नहीं करता। सेब की भीनी-भीनी सुगन्ध कितनी प्रसिद्ध है। अनार की रंगत और स्वाद दोनों मन को लुभा लेते हैं। मगर चाय ने इन सबकी विशेषताओं को पछाड़ दिया है। चाय के होते हुए इन बेचारों की दाल नहीं गलती और हर महफिल में वह प्रधान बन जाती है। भांति-भांति की अलोनी-सलोनी मिठाइयाँ इसके सामने धरी की धरी रह जाती हैं। वस्तुत: सर्वप्रियता एवं लोक-रंजन किसी के बाप की बरासत नहीं वरन् ईश्वर का दिया हुआ उपहार है।

चाय ने हमारे समाज को बुरी तरह जकड़ रखा है। ब्याह हो या मंगनी, मुँडन संस्कार हो या नामकरण, आप मेहमान बनें या मेहमाननिवाज़ चाय का अस्तित्व कभी उपेक्षित नहीं रहता। साधारण घरेलू झगड़ों से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं तक जितनी भी उलझनें पेश आती हैं, चाय की मेज़ पर ही सुलझाई जाती हैं। दूर क्यों जाते हो, पिछले दिनों अकाली लीडर मास्टर तारासिंह और पंडित नेहरू के गिले-शिकवे चाय के गिर्द बैठकर ही दूर हुए थे। हिन्द और पाकिस्तान के प्रधान मन्त्रियों की कान्फ्रेन्स दिल्ली में हो या कराची में, वे किसी तीसरे व्यक्ति को अपना मध्यस्थ बनायें या नहीं, मगर चाय की प्याली वहाँ भी पहुँच जाती है और उनकी बातचीत का प्रत्येक शब्द सुन लेती है। मज़े की बात तो यह है कि इसकी उपस्थिति पर न तो पंडित नेहरू को कोई आपत्ति होती है और न ही पाकिस्तान के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान मन्त्री नाक-भौं चढ़ाते हैं।

चाय हमें समता का पाठ पढ़ाती है। राजनैतिक दृष्टि से तो यह पूरी सोशलिस्ट है। जहाँ राजमहल तक इसकी रसाई है वहाँ इसके वैभव की उदारता मज़दूर की झोंपड़ी में भी अपनी झलक दिखा जाती है। यह अलग बात है कि एक तरफ सेठ बिरला चाय के साथ पेस्टरी और टोस्ट खाता है और दूसरी तरफ एक रिक्शावाला चाय के साथ केवल एक आने की डबल रोटी से अपनी पेटपूजा करता है। चाय अमीर और ग़रीब दोनों के साथ पूरी तरह घुलमिल जाती है और अमीर ग़रीब में कोई अन्तर नहीं समझती।

चाय के कई रंग और कई प्रकार हैं। इसी तरह इसके पीने वाले भी भिन्न-भिन्न वर्गों में बटे हुए हैं। प्रत्येक वर्ग की चाय का स्तर भिन्न-भिन्न होता है। कोई हल्की चाय पसन्द करता है तो कोई तेज़। इसी तरह कोई मध्यम मार्ग अपनाता है। लारियों और बसों के ड्राइवर इस कदर स्ट्रांग चाय पीते हैं कि यदि कोई दूसरा पी जाय तो उसे पाव भर शराब का नशा हो जाता है। अफीम और चाय का चोली-दामन का सम्बन्ध है। अफीम के साथ जब चाय गले मिलती है, तो मनुष्य के मस्तिष्क के कपाट खुल जाते हैं और उसे दिन में तारे दिखाई देने लगते हैं। उस समय वह दूर की कौड़ी लाने लगता है और बात-बात में इस प्रकार रहस्य और नुकते निकालता है कि बड़े से बड़ा फिलासफर भी क्या करेगा।

मेरे पड़ोस में भी एक अफीमची सज्जन रहते हैं। चाय और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफीम की कृपा से बड़े जि़न्दादिल बने हुए हैं परन्तु जब कभी उन्हें चाय और अफ़ीम का नाग़ा हो जाता है, तो उन्हें ऐसे लगता है कि उन्हें यमराज के दूत लेने आ गये हों। उस समय उनकी अवस्था उस साँप की तरह होती है, जो प्रातःकाल कड़ाके की सर्दी में किसी खेत में पड़ा अकड़ रहा हो। मगर अफीम का प्रयोग करने के बाद जब वे चाय पी लेते हैं, तो उनके रोम-रोम में इस तरह नशा निखर उठता है, जिस तरह सफेद कपड़े पर हल्का गुलाबी रंग। उनकी जि़न्दादिली पूरे यौवन पर पहुँच जाती है। उस समय वे इस प्रकार ज़मीन और आसमान के कुलावे मिलाते हैं कि सुनने वाले भौंचक्के रह जाते हैं। उनकी-बे-सिर पैर की गप्पें सुनकर सारी महफिल कहकहों से गूँज उठती है।

विभाजन के पूर्व मेरे एक साहित्यिक मित्र लाहौर में थे। वहाँ तो प्रायः वे चाय से खिंचे-खिंचे-से रहते थे। लाहौर छोड़ने के बाद वे कुछ समय के लिए जालंधर रहे। कहते हैं कि यहाँ पहुँचकर यह हिचकिचाहट कुछ कम हो गई और उनके मन में चाय के प्रति सद्भावना जागृत होने लगी। अब दिल्ली पहुँचकर तो श्रीमान् जी चाय से प्रायः घुलमिल गये हैं।

एक शाम मुझे वह कैनाट प्लेस के किसी होटल में मिल गये। दिल्ली के व्यस्त जीवन पर असंतोष प्रकट करने के बाद चाय का रोना ले बैठे। बातों-बातों में कहने लगे कि यह कम्बख्त ऐसी मुँह लगी है कि जब तक दिन में चार-पाँच बार न पी लूँ चैन नहीं आता। चाय मिलने में यदि देर हो जाय तो जी मतलाने लगता है और हल्के-हल्के चक्कर आने लगते हैं। लाहौर में तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी चाय से दूर की साहब सलामत थी, अब हर समय चाय के ही स्वप्न देखता रहता हूँ। मैंने मुस्कराकर कहा—कमल साहिब! इसमें हैरान होने की क्या बात है? आपको विदित होना चाहिये कि चाय की जन्मभूमि आसाम की ढलवान पहाड़ियाँ हैं। इसलिये ज्यों-ज्यों आप पश्चिम से पूर्व की तरफ खिसकते जायेंगे चाय का प्रेमपाश दृढ़ से दृढ़तर होता चला जायगा। परमात्मा न करे, यदि आप इसी तरह आगे-ही-आगे कदम बढ़ाते गये तो हावड़ा के पुल को पार करने के बाद कुछ और ही रंग होगा। उस समय आप गर्म पानी, दूध और खाँड के धंधे से सर्वथा मुक्त हो जायेंगे और चाय की सूखी पत्तियाँ चबाकर ही अपना नशा पूरा कर लिया करेंगे—

सुराही की हाजत है न हाजते पैमाना
चुल्लू से ही पी लेगा साबर तेरा दीवाना

चाय का ज़िकर होते ही मुझे कई बार अपने एक सम्पादक मित्र चंचल जी का स्मरण हो आता है। वैसे तो बड़े दृढ़-संकल्प मनुष्य हैं। जो बात एक बार मन में धारण कर लेते हैं, लाख कहने पर भी टस से मस नहीं होते। परन्तु चाय के सम्बन्ध में उनकी कमज़ोरी छिपी नहीं रहती। क्या मजाल जो कभी चाय का निमंत्रण टाल सकें। ऐसा लगता है कि चाय ने उनको पूरी तरह से जकड़ रखा है। दिन-भर में दस-बारह प्यालियों से क्या कम पीते होंगे। चंचल साहिब शारीरिक दृष्टि से कोई हट्टे-कट्टे व्यक्ति नहीं हैं बल्कि इकहरे बदन के हल्के-फुल्के नौजवान हैं। समझ में नहीं आता कि चाय की इतनी बड़ी मिकदार उनके संक्षिप्त से पेट में कहाँ समा जाती है। आप एक सफल लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने के अतिरिक्त बला के मेहनती भी हैं। मेहनती आदमी प्राय: स्वभाव के चिड़चिड़े होते हैं परन्तु इनमें ऐसी कोई बात दिखाई नहीं देती। वरन् उल्टे चाय की कृपा से वे ज़िन्दादिली का नमूना बने हुए हैं। अख़बार की अन्तिम कापी प्रैस में जाने वाली हो, दिनभर की थकावट से शरीर टूट रहा हो, निद्रा का उन्माद आँखों के पपोटों को भारी बना रहा हो, इन परिस्थितियों का सामना करने के लिए वे तत्काल चाय की प्याली मंगवा लेते हैं। गर्म चाय की हल्की सी चुस्की लगाते ही चंचल साहिब की नींद में डूबी हुई आँखें फासफोरस की तरह चमकने लगती हैं। मस्तिष्क का प्रत्येक पुर्ज़ा सचेत हो जाता है और उनका उदास चेहरा इस तरह खिल उठता है, जिस तरह सुबह की हवा के मधुर स्पर्श से गुँचा चटककर फूल बन जाता है।

यह न समझिये कि इन पंक्तियों का लेखक ही चाय के व्यापक प्रभाव से बच सका है। बचपन से वह दही की लस्सी का दिल-दादा रहा है। लाहौर में भगवानसिंह लस्सी वाले का स्थायी गाहक था। सुना है अब भगवानसिंह की लस्सी दिल्ली पहुँच चुकी है। जहाँ कहीं भी है, ज़रूर चाय ने लस्सी का स्थान ले लिया होगा। यदि ऐसा नहीं है तो चाय ने अवश्य ही इसके साथ अपने झण्डे भी गाड़ दिये होंगे। कहने का अभिप्राय यह है कि आजकल चाय से कौन टक्कर ले सकता है। इसकी पकड़ से न आप बच सकते हैं, न मैं और न कोई और। मीर तकी ने शायद चाय के बारे में ही कहा हो—

हम हुए तुम हुए मीर हुए
उनकी ज़ुल्फों के सब असीर हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूख हड़ताल

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चे की ज़िद पूरी न हो तो वह प्रोटेस्ट के तौर पर रोटी नहीं खाता। घर में सास और बहू की किसी बात पर ठन जाय तो अन्त में दोनों का अथवा एक का गुस्सा रोटी पर ही निकलता है। फैक्टरी के मज़दूर, जेल के कैदी आदि भी जब अपनी माँगें मनवाने पर उतर आते हैं, तो उनका भी अन्तिम नुस्खा यही होता है। अब तो दिन-प्रति-दिन भूख हड़ताल का महत्त्व बढ़ रहा है। कल्लू मोची से लेकर कभी-कभी प्रदेश के प्रधान मन्त्री तक भी भूख हड़ताल की शरण लेते हैं।

प्राचीन इतिहास में भूख हड़ताल का कहीं पता नहीं चलता। हमारा अनुमान है कि इसका वर्तमान स्वरूप गांधी-युग की ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुपम देन है। गांधी जी धमकी के तौर पर नहीं बल्कि अपने विरोधी के ऊपर प्रभाव डालने के लिये भूख हड़ताल आरंभ करते थे। मगर अब तो ऐसे-ऐसे धुरन्धर नेता पैदा होने लगे हैं, जिन्होंने भूख हड़ताल को चूँ-चूँ का मुरब्बा बना दिया है। भूख हड़ताल का अनुष्ठान करने वाले इन महारथियों में अधिकांश तो प्रायः दूध पीने वाले मजनूँ ही होते हैं, जो केवल भूख हड़ताल का नाटक ही करते हैं। यदि तीर निशाने पर बैठ गया तो पौ-बारह, नहीं तो निराशा और लज्जा तो भाग्य में है ही।

कई वर्ष पहले की बात है कि मीरपुर में एक जटाधारी साधु पधारे और श्मशान भूमि में अपनी धूनी रमाई। सोहन नाई एक भक्तवृत्ति का मनुष्य था। श्मशान भूमि में एक नवागन्तुक साधु को देखा तो अन्न और फल लेकर उनकी सेवा में उपस्थित हुआ। यह देखकर महात्मा जी के चेहरे पर बल पड़ गये और कहने लगे, मैं इन चीज़ों को स्पर्श तक नहीं करता, खाना तो बड़ी बात है। फ़ारसी की एक कहावत है कि पीर नहीं उड़ते बल्कि मुरीद इन्हें उड़ाया करते हैं। भोले भक्त ने सारे नगर में महात्मा जी का डंका बजा दिया कि वे केवल हवा फाँकते हैं, भोजन को देखते तक नहीं। फिर क्या था, नगर की अन्धविश्वासी जनता थोड़े दिनों में ही साधु महाराज को भगवान् का रूप समझने लगी और नर तथा नारियों के ठठ के ठठ महात्मा जी की सेवा में उपस्थित रहने लगे।

मीरपुर में कन्दाराम नाम का एक अठारह-बीस साल का सैलानी युवक था। वह भी साधु महाराज की सेवा में प्रतिदिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपस्थित होने लगा। वह मन में सोचता कि महात्मा जी बिना कुछ खाये ही हृष्ट-पुष्ट बने रहते हैं। इनके मुखमण्डल पर कमज़ोरी का नामोनिशान तक नहीं मिलता। उल्टा तेज चमक रहा है। शनैः शनैः उसका यह विचार सन्देह में तबदील होने लगा और उसने महात्मा जी पर कड़ी निगरानी शुरू कर दी। रात के समय जब सब दर्शनाभिलाषी चले जाते तब वह धूनी के पास ही पड़कर सो जाता।

वास्तव में बात यह थी कि महात्मा जी ने धूनी के पास ही मिठाई से भरा हुआ एक मटका ज़मीन में दबा रखा था। वे प्रतिदिन रात के सन्नाटे में पेटभर मिठाई खा लेते थे। अब कन्दाराम ने जो चौकीदारी शुरू कर दी तो वे बहुत सटपटाये। कई बार कहा कि बेटा, गृहस्थी और साधु का इतना मेल-जोल ठीक नहीं, तुम्हें रात अपने घर ही व्यतीत करनी चाहिये। कन्दाराम भी एक ही काईयां था। वह हाथ जोड़कर कहता—महाराज, मुझे जो आनन्द आपके चरणों में मिलता है, वह घर में कहाँ मिल सकता है। मैं तो अब आपका ही हो लिया हूँ। जब दो-तीन दिन महात्मा जी के पेट में कुछ न गया तो लगे भूखों मरने। मगर अब क्या हो सकता था। समय मिलते ही वहाँ से रफूचक्कर हो गए और सदा के लिए मीरपुर को अलविदा कह गये। उनके जाने के बाद लोगों ने जो धूनी को खोदा तो मिठाई के भाण्डे के साथ ही महात्मा जी का भाण्डा भी फूट गया।

जब से देश आज़ाद हुआ है, भूख हड़ताल की प्रथा ज़ोर पकड़ रही है। जान पर खेलने वाले इन भूख हड़तालियों की यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिनती की जाय तो इनकी संख्या सैकड़ों से क्या कम होगी। समाचार-पत्रों में प्रायः ऐसी खबरें बड़े मोटे अक्षरों में छपती रहती हैं। भूख हड़ताल करने वाले का चित्र तथा उसका प्रोग्राम भी छप जाता है। इन भूख हड़तालियों में राजनैतिक, सामाजिक तथा अन्य सब तरह के लोग सम्मिलित होते हैं। कांग्रेसी महाशय इस विशाल विरादरी में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। जिस तरह वे सामान्य भूख हड़तालियों में निखरे-निखरे से नज़र आते हैं, इस तरह इनके भूख हड़ताल का ढंग भी बिलकुल मौलिक एवं अनोखा होता है। इनकी भूख हड़ताल का आरम्भ एवं अंत इतना नाट्यपूर्ण होता है कि देखते ही बनता है।

स्वतन्त्रता के बाद कांग्रेसियों की भारी संख्या परले सिरे की भावुक तथा कोमलहृदय बन गई है। ये इतने टची (Touchy) हो गये हैं कि यदि किसी साधारण-सी बात पर भी बिगड़ बैठें तो झट छुईमुई के फूल की तरह कुम्हला जाते हैं और भूख हड़ताल का शस्त्र सम्भालकर मृत्यु-शय्या पर विराजमान हो जाते हैं। इर्द-गिर्द के कांग्रेसियों को इस असाधारण घटना की कानो-कान खबर हो जाती है और वे तत्काल इस आकस्मिक परिस्थिति की रोकथाम के लिए बड़े जोश-ख़रोश के साथ कूद पड़ते हैं। इस प्रकार मौत की घाटी में कदम रखने वाला कांग्रेसी यदि कोई असर-रसूख वाला व्यक्ति हो तो दिल और नब्ज़ की परीक्षा के लिए डाक्टर भी सिरहाने आ बैठता है। अब तो मिन्नत और खुशामदों का सिलसिला शुरू हो जाता है। उसे तरह-तरह के वास्ते डाले जाते हैं। मृत्यु को आलिंगन करने के लिए कटि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वद्ध यह वीरव्रती पहले तो कुछ अकड़ता है, फिर ऐंठता है, अन्त में देश और जाति पर एहसान करते हुए अपना हठ छोड़ देता है और सेरभर संतरों का रस पीकर भूख हड़ताल त्याग करने का उद्घाटन कर देता है। इस प्रकार इस नवीन सुखांत नाटक का शीघ्र ही रोचक ढंग से पटाक्षेप हो जाता है।

कई बरस हुए, उत्तर प्रदेशके एक प्रसिद्ध कांग्रेसी लीडर ने भी इस प्रकार आँखमिचौनी का खेल खेला था। उत्तर प्रदेश में खाँड के अनेक कारखाने हैं, जिनमें लाखों मज़दूर काम करके अपना जीवन-निर्वाह करते हैं। उन दिनों इन्होंने अपनी लम्बी-चौड़ी माँगों से कारख़ाने के मालिकों का नाक में दम कर दिया था। आये दिन इनकी माँगें शैतान की अंत की तरह लम्बी होती जाती थीं। जब सीधी उंगलियों से घी निकलना सम्भव न रहा तो मज़दूर स्ट्राइक पर उतर आये।

बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा। कूटनीतिज्ञ कांग्रेसियों को ऐसे सुनहरे अवसर कभी-कभी हाथ लगते हैं। ये कांग्रेसी महाशय 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' की नीति से झट मज़दूरों के लीडर बनकर आ धमके। 'मुद्दई सुस्त और गवाह चुस्त' वाली बात थी। मज़दूर बेचारे कुछ करते या न करते परन्तु इन्होंने तत्काल ऐलान कर दिया कि कारखाने के मालिकों ने मज़दूरों की माँगों को इस प्रकार ठुकरा दिया तो वह राजघाट पर मरणव्रत आरंभ कर देंगे। उन्होंने अपनी इस अटल प्रतिज्ञा की सूचना सरदार पटेल और पंडित नेहरू को भी पहुँचा दी कि फिर न कहना कि हमें खबर नहीं हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह वृत्तान्त भलीभांति प्रकाश में नहीं आया कि इस भूख हड़ताल का क्या परिणाम हुआ। यह बात भी एक रहस्य बनी रही कि क्या इन्हें सचमुच राजघाट पर लम्बे पड़ने की एक्टिंग करने की नौबत भी आई या नहीं। परन्तु इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि वे अपने नगर में सर्वथा कुशलपूर्वक हैं और मूँछों पर ताव देकर दनदना रहे हैं। शुकर है कि वे इस घटना का शिकार नहीं हुए। यदि मरणव्रत के सिलसिले में वे बोलोराम भी हो जाते तो भी मृत्यु की गोद में मीठी नींद सो जाते क्योंकि वे खाँड के सम्बन्ध में प्राणों की आहुति दे रहे थे। हर हालत में उनके दोनों हाथों में लड्डू थे :—

"हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्"

निस्संदेह वे भगवद्गीता के इसी मूलमन्त्र को लेकर चले थे और इसीलिए अपना यश अमर कर गये हैं।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भय का राज्य

इन्द्र विद्यावाचस्पति
चन्द्रलोक, जवाहर नगर
दिल्ली द्वारा
गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय को
भेंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भय कितना भयानक शब्द है। इसे सुनते ही मन में भय का संचार होने लगता है। सन्देह और वहम भी भय का ही पूर्वरूप हैं। कई प्रसिद्ध डाक्टरों का कथन है कि संसार में हैज़े और प्लेग से इतने मनुष्यों का देहान्त नहीं होता, जितने केवल इन रोगों के भय और आतंक से ही मृत्यु के घाट उतरते हैं। मनुष्य पर जब भय सवार हो जाता है, तो बस समझ लो कि उसकी खैर नहीं। इसी तरह जब वह स्वयं भय पर सवार हो जाय तो वह ऐसे-ऐसे विकट एवं साहसपूर्ण कार्य करने में समर्थ हो जाता है कि देखते ही बनता है। छूत की बीमारियों की छाया से भाग खड़े होने वाले बड़े-बड़े सतर्क एवं सावधान व्यक्ति भी इनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लपेट में आ जाते हैं और दूसरी तरफ नित्यप्रति पास रहकर सेवा-सुश्रूषा करने वाले निर्भीक लोगों के भी पर्याप्त उदाहरण मिलते हैं, जिनका बाल भी बाँका नहीं होता।

भय जब ववाई रूप धारण कर लेता है तो सारी-की-सारी कौम उसकी लपेट में आ जाती है। हिटलर का फ़िफ्थ कालम क्या था—-यह कि शत्रु-राष्ट्रों में भय के जरासीम फैलाना। ऐसे हथकंडों का परिणाम किसी से छिपा नहीं है। फ्रांस जैसा शक्ति-शाली देश भी हिटलर की ताब न ला सका और एक सप्ताह में ही घुटने टेकने के लिए विवश हो गया। अन्यथा उसमें कई महीनों तक टिककर सामना करने की शक्ति थी।

भय का संसार बड़ा व्यापक एवं विचित्र है। भूत, प्रेत, जिन्न आदि भय के ही मानस-पुत्र हैं। जिन मनुष्यों का दिल कमज़ोर होता है वे कभी-कभी इनकी पकड़ में आ जाते हैं। ऐसी अवस्था में लाख कोशिश करने पर भी उनका वहम दूर करना कठिन हो जाता है। बड़े-बड़े डाक्टर हार जाते हैं परन्तु ऐसे रोगियों का रोग निवृत्त नहीं होता। वे बरसों तक बीमार बने रहते हैं और दिन-प्रति-दिन सूखते चले जाते हैं। जब तक ऐसे रोगियों का इलाज मनोवैज्ञानिक आधार पर नहीं किया जाता, तब तक उनका कल्याण नहीं होता।

हमारे मुहल्ले के मन्दिर के पुजारी बड़े नेक और धर्मात्मा थे। भाग्य का विधान देखिए कि वे जितने सज्जन थे, उनके दो बेटे उतने ही आवारा और निकम्मे थे। उनके साथ पूरण और चूनी दो लड़के और भी मिल गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्होंने मन्दिर के फर्श पर कोयले से लकीरें खींचकर राम-चौक बना रखा था और आरती के बाद जब सब चले जाते थे तो ये चारों धमाचौकड़ी मचाते थे और आधी-आधी रात तक खेलते रहते थे। जीवन नाम का हलवाई रात के दस बजे के बाद मंदिर आया करता था, जिससे इनके रंग में भंग पड़ जाता था। लेकिन इनकी नज़रों से बचना कोई कठिन नहीं था। जीवन बेचारा बूढ़ा और पुरानी खाँसी का शिकार था। वह जब दूर से खौं-खौं करता हुआ आता था तो उसकी खाँसी उन्हें सिगनल दे देती थी और वे झट चिराग बुझाकर इधर-उधर छिप जाते थे। जब वह माथा टेककर चला जाता तो फिर अपने खेल में जुट जाते थे।

एक दिन दोपहर के समय बूढ़ा जीवन मन्दिर के बाहर चबूतरे पर बैठे हुए अपनी बहादुरी की कहानियाँ सुना रहा था। इत्तफ़ाक से चारों लड़के भी बैठे हुए सुन रहे थे। जीवन कह रहा था कि आजकल लोग भूतों की कहानियाँ सुनकर दहल जाते हैं। मारे डर के उनके चेहरे पीले पड़ जाते हैं। जिन दिनों मैं जवान था, मैं भूतों की तलाश में फिरा करता था। भूतों की दुनियाँ भी विचित्र है। तुम इनसे डरो तो ये तुम्हें तंग करेंगे। यदि तुम इनका पीछा करो तो ये गीदड़ की तरह तुम्हारे आगे भागना शुरू कर देंगे।

एक रात मैं गाँव को जा रहा था। रास्ता एक घने जंगल में से गुज़रता था। चांदनी छिटक रही थी। रास्ते में एक मनुष्य सोया पड़ा था। वह सफेद चादर ओढ़े बेहोश पड़ा था। मैंने शरारत से उसकी चादर उठा ली और चल पड़ा। अभी कुछ ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कदम आगे बढ़ा था कि पीछे से पाँव की आहट सुनाई दी। मैंने पीछे मुड़कर देखा तो एक भयानक चेहरा मुझे घूर रहा था। उस मनुष्य ने मेरा हाथ पकड़ लिया और कहा कि देखो, शीघ्र ही मेरे विश्राम-स्थल पर लौट आओ। मैं वहाँ फिर उसी तरह लेट जाऊँगा और तुम्हें यह चादर उसी तरह मेरे शरीर पर डालनी होगी जिस तरह मैं ओढ़े हुए था। यदि तुम से ऐसा न हुआ तो तुम्हारी जान की खैर नहीं।

मुझे डर तो लगा मगर जवानी दीवानी होती है। मैंने कहा कि अच्छा चलो। यह सुनकर वह मनुष्य उसी स्थान पर पूर्ववत् लेट गया। मैंने उस पर चादर डाल दी। लेकिन यह देखकर मुझे विस्मय हुआ कि चादर जो पहले बिल्कुल पूरी थी अब छोटी हो गई है। मैंने सोचा कि शायद यह मनुष्य लम्बा हो गया हो। जब मैं इसके सिर की तरफ से चादर खींचता तो इसके पाँव नंगे हो जाते। यदि पाँव की तरफ से खींचता तो सिर दिखाई देने लगता। मैं किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। अन्त में मैंने बगल से डंडा निकालकर ज़ोर से उसके पाँव पर मारा। चोट खाते ही तत्काल उसने अपनी टांगें सुकेड़ लीं। मैंने कहा, तो शर्त पूरी हो गई है। यह कहते ही मैं चल पड़ा। जब मैंने मुड़कर देखा तो वह जंगल की तरफ भागा जा रहा था और उसका सिर आसमान से लगा हुआ था।

शाम को चारों लड़के जीवन की कहानी पर टीका-टिप्पणी करने लगे। पूरण ने कहा कि ये सब मनगढंत किस्से हैं। मैंने एक उपाय सोचा है, जिससे इसकी बहादुरी की परीक्षा भी हो जायगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और भविष्य में यह बूढ़ा खसूट इतनी रात गये कभी मन्दिर में पाँव नहीं रखेगा, जिससे हमारे खेल का सिलसिला निर्बाध रूप से चलता रहेगा।

अगले दिन पूरण बाज़ार से फासफोरस खरीद लाया। रात को जब जीवन की खौं-खौं ने उसके आने का अलारम दिया तो पूर्ववत् चिराग़ गुल कर दिया गया। पूरण ने तत्काल अपने मुख पर फासफोरस मल लिया। उसका चेहरा रात के अंधेरे में आग के शोलों की तरह चमकने लगा। ज्योंही जीवन ने मन्दिर के अन्दर कदम रखा, पूरण ने तरह-तरह की भयानक आवाज़ें निकालनी आरम्भ कर दीं और जीवन की तरफ कदम बढ़ाने प्रारम्भ कर दिये। जीवन बनावटी भूत की एक घुर्की भी न सह सका। हाथ में जूते संभाले गिरता-पड़ता बाहर की ओर भागा और घर पहुँचकर ही दम लिया। उस समय जीवन के चेहरे पर पीली उदासी छाई थी, मानो रक्त की एक भी बूंद उसके शरीर में शेष न रही हो। धर्मपत्नी ने ज़ब जीवन की यह अवस्था देखी तो कहने लगी, खैर तो है, काँप क्यों रहे हो? उसने कहा कि देसराज की माँ, क्या बताऊँ, मन्दिर में भूतों का बसेरा हो गया है।

भय जब पैनिक (Panic) का रूप धारण कर ले तो उसकी प्रतिक्रिया बड़ी व्यापक होती है। जहाँ भी वह फैल जाता है वहाँ की सारी जनता को अपनी लपेट में ले लेता है। जिन दिनों पाकिस्तान का जन्म हो रहा था, उन दिनों तो यह बला पूरे ज़ोरों पर थी। यदि बाज़ार में परस्पर दो साँडों की मुठभेड़ भी हो जाती थी तो दूसरे बाज़ार वाले केवल शोर सुनकर ही दुकानें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़-छोड़कर भाग जाते थे। पाकिस्तान बनने के बाद भी पैनिक रूपी आग बीच-बीच में सुलग पड़ती थी।

पाकिस्तान अभी नया-नया बना था। सिक्खों पर जो अत्याचार पाकिस्तान में ढाये गये थे, उनकी याद मुसलमानों के दिल से मिट न सकी। उन्हें विश्वास होता जाता था कि सिक्ख बदला लेने के लिए ज़रूर कुछ-न-कुछ करेंगे। उन दिनों सामान्यतः सम्पूर्ण पश्चिमी पंजाब में और विशेषतः लाहौर में सिक्ख फ़ोबिया तेज़ी से फैल रहा था। बच्चे, बूढ़े, नर और नारियाँ सब के सब भय से लरज़ रहे थे कि सिक्ख अवश्य ही लाहौर पर आक्रमण करेंगे। मोची दरवाज़े के महाजे-गामे शाम के समय जब जुम्मा कबाबफ़रोश की दुकान पर इकट्ठे होते थे, तो उनके वार्तालाप का विषय प्रायः यही होता था। अरब होटल में दफ्तरों के क्लर्क चाय पीते समय बड़े विचित्र अंदाज़ से इस पर आलोचना प्रारंभ कर देते थे। मुसलमानों का सम्भ्रान्त वर्ग भी नित्यप्रति इसी तरह चिन्ता के सागर में डूबा रहता था।

पाकिस्तानी मौलवियों ने इस सिलसिले में विचित्र नीति अपना रखी थी। जब भी मौलवी साहिब राहबाट में दो-चार आदमियों को दबे शब्दों में इस तरह की बात-चीत करते देख लेते थे तो उनका मुख चकंदर की तरह लाल हो जाता था और वे गर्जदार आवाज़ में फरमाते थे—अरे मलऊनों, क्या खुसर-पुसर लगा रखी है ? अरे तुम मुसलमान होकर डरते हो। मुसलमान तो केवल अल्लाह से डरता है। परन्तु स्वयं मौलाना साहिब जब घूम-फिरकर घर लौटते थे और बेगम साहिबा पूछती थीं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रशीद के अब्बा, यह सिक्खों के सम्बन्ध में मैं क्या सुनती हूँ। तो उस समय आं जनाब दाढ़ी पर हाथ फेरने लगते थे और होठों पर हल्की-सी हँसी लाकर जवाब देते थे--अरी कम्बख़्त, तू क्यों हल्काँ हुई जा रही है। अभी तो कोई ऐसी-वैसी बात नहीं है। जब कोई ऐसा समय आयेगा तो मैंने रावलपिंडी भाग जाने का पूरा-पूरा प्रबन्ध कर लिया है।

मियाँ पाटेखाँ लाहौर के प्रसिद्ध चण्डूनोश थे। ईद के रोज़ तड़के ही उठे। रात के बचे-खुचे गोश्त और सेवियों पर बढ़-बढ़ कर हाथ मारे। इसके बाद गुसल किया और नया जोड़ा पहनकर चण्डूखाने की राह ली, जहाँ उनके दोस्त-यार बड़ी उत्सुकता से उनकी बाट जोह रहे थे। मियाँ पाटेखाँ के बैठ जाने पर बातचीत का सिलसिला अफीम के ठेकेदार की बेईमानी से प्रारंभ हुआ और लुड़ककर सिखों की करपानों पर उतर आया। इसके बाद निहंग सिखों के आकार-प्रकार तथा सज-धज का ज़िकर चल पड़ा। निहंग सिखों के सम्बन्ध में ज्यों-ज्यों मियाँ पाटेखाँ के ज्ञान में वृद्धि होती जाती थी मारे डर के वे आग पर रखे हुए पापड़ की तरह सुकड़ते जाते थे। अन्त में सबके सब उठकर शाही मस्जिद की तरफ चल पड़े, जहाँ ईद की निमाज़ का आयोजन था। चण्डूनोशों की यह पार्टी जब शाही मस्जिद में पहुँची तो नमाज़ प्रारंभ हो चुकी थी। इसलिए पाटेखाँ पिछली पंक्ति में ही खड़े हो गये। दोपहर का समय, भरा हुआ पेट, उस पर चण्डू का नशा। इस सन्निपात का यह परिणाम हुआ कि उन पर तन्द्रा छा गई और वे ऊँघने लगे। स्वप्न में क्या देखते हैं कि एक ग्रांडील निहंग सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रछा ताने हुए अपनी तरफ लपक रहा है। निहंग की भयानक शकल देखते ही पाटेखाँ का नींद सहित सारा नशा हवा हो गया और वे ज़ोर से चिल्ला उठे––"सिख आ गये।"

चण्डूनोश के ये शब्द हवा की लहरों पर तैरते हुए मस्जिद के वातावरण में बिखर गये। निमाजियों में भगदड़ मच गई। न किसी को रकूह की सुध रही न किसी को सजदा याद रहा। सब ने मस्जिद से बाहर भागना शुरू कर दिया। एक लाख आदमियों का हजूम, तंग दरवाज़ा––इस धक्का-मुक्की के परिणामस्वरूप मुफ्त में ही दस-बीस मुसलमान पिसपिसा कर ठंडे पड़ गये। न कहीं कोई सिख था न उसकी किरपान थी। न कोई निहंग था और न उसका बरछा था। केवल मियाँ पाटेखाँ की बौखलाहट थी, जिसके कारण ये गरीब अनायास ही मृत्यु का शिकार हो गये।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शादी एजेंसी

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो सौ वर्षों में के लम्बे अंग्रेज़ी शासन के फलस्वरूप भारत के जीवन में अनेक युगान्तरकारी परिवर्तन हुए हैं। हम प्रायः बहुत हद तक पश्चिमीय सभ्यता के रंग में रंग गये हैं। नित्यप्रति नये-नये फैशन और झूठी शान-शौकत ने हमें बुरी तरह जकड़ लिया है। इसी कारण आज के मानव को प्रायः समय का अभाव खटकता रहता है। वह बहुत भाग-दौड़ करता है परन्तु फिर भी ज़माने की तेज़ चाल के साथ कदम मिलाने में समर्थ नहीं हो सकता।

इसमें संदेह नहीं कि जीवन के संघर्ष को कम करने के लिए नित्यप्रति नये-नये आविष्कार हो रहे हैं। मोटर, रेलगाड़ियाँ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडियो आदि ने हमारे व्यस्त जीवन को विशेष गति प्रदान की है। इसके अतिरिक्त हमारे जीवन का कारोबारी ढाँचा भी बिलकुल बदल गया है। अब तो प्रत्येक वस्तु के तथा प्रत्येक काम के लिए एजेंसियाँ स्थापित हो गई हैं। सिगरेट, चाय, घी आदि अनेकानेक एजेंसियों की धूम मच रही है।

आपने सैंकड़ों एजेंसियों के नाम सुने होंगे परन्तु इनमें सबसे अधिक मनोरंजक शादी एजेंसी है। इसके मालिक या मैनेजर को मलावाराम कहना चाहिये। यदि यह नाम घटिया प्रतीत हो तो आप इसे मिलापचन्द कह सकते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि वह स्त्री और पुरुष दोनों से पैसे बटोरता है लेकिन आवश्यकता पड़ने पर काम तो हो जाता है। न नाई भेजने की नौबत आती है, न पुरोहित को ताना-बाना करना पड़ता है। एजेंसी के दफ्तर में गये, फार्म भरा, फीस जमा कराई और निश्चिन्त हो गये। अब एजेंसी के मैनेजर साहिब हैं कि पुरोहित और नाई दोनों का उत्तरदायित्व अपने कन्धों पर संभाल लेते हैं। वर के लिये कन्या और कन्या के लिए वर की तलाश में भटकते फिरते हैं।

इसमें संदेह नहीं कि बहुत-सी एजेंसियाँ बड़ी मेहनत और दयानतदारी से काम करती हैं लेकिन कुछ ऐसी शादी एजेंसियाँ भी मिलती हैं, जो पूरी चार सौ बीस हैं। एक बार मैं दिल्ली से लौट रहा था कि मेरी मुलाकात एक देहाती से हुई। वह बेचारा किसी बोगस शादी एजेंसी का शिकार हो चुका था। मेरी उत्सुकता देखकर बोला—श्रीमान् जी, कुछ न पूछिये। मेरी जो शामत आई,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो अखबार में शादी एजेंसी का इश्तहार पढ़ लिया। मैं चूंकि कँवारा था इसलिए दिल्ली में एजेंसी के मैनेजर को जा मिला। मैनेजर बड़ा अपटूडेट जण्टलमैन दिखाई देता था। उसने मुझे अपनी लच्छेदार बातों में उलझा लिया। कहने लगा, भई लड़की देखोगे तो तुम्हें सीता और सावित्री की याद आ जायेगी। इतनी रूपवती और गुणवती कन्या चिराग़ लेकर ढूँढने से भी नहीं मिलेगी। मैंने कहा, आपका कथन सत्य है, फिर भी यदि देवी जी के दर्शन हो जायें तो ठीक रहेगा। मैनेजर साहिब ने तत्काल हाँ कह दी और अपने नौकर से कहा--ज़रा कमरा नं० ११ से चमेली को तो बुला लाओ। रात का समय था। बिजली की चमकीली रोशनी में मैंने चमेली का चेहरा देखा जिसका रंग मैदे और सिन्दूर से मिलता था। हरे रंग की रेशमी साड़ी में उसका रूप और भी निखर रहा था। मुझे ऐसे लगा जैसे अठारह-बीस बरस की कोई स्वर्गीय सुन्दरी मुझे देखकर मुस्करा रही हो। मेरी खुशी की कोई सीमा न रही और मैं अपने भाग्य पर इठला उठा और तत्काल पाँच सौ की थैली मैनेजर के हाथ पर दाग दी।

घर पहुँचकर भगवान् का शुकर किया कि चलो आखिर घर का दरवाज़ा तो खुला है। भोजन की बकझक से छुटकारा मिलेगा। सुख की नींद सोयेंगे और चैन की बंसी बजायेंगे। दो-चार दिन ही गुज़रे थे कि देवी जी ने अपना आप दिखाना आरंभ कर दिया। इनके रंगढंग ही कुछ निराले थे। मेरा माथा ठनका और ऐसे प्रतीत होने लगा कि देवी जी की प्रत्येक बात बनावटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। यहाँ तक कि उनका रूपरंग भी पाउडर और सुर्खियों का ही मोहताज था। वह मेकअप के आर्ट में इतनी कुशल थीं कि चेहरे के भद्दे-से-भद्दे दागों को भी बड़ी होशियारी से छिपा सकती थीं। ख़ैर, फिर भी मैं अपनी किस्मत पर सन्तुष्ट रहता यदि उनमें गृहस्थियों वाला कोई लच्छन होता। हर समय खोई-खोई सी रहती थीं। यह सिलसिला अधिक देर न चल सका। अन्त में वही हुआ जिसका मुझे खटका था। एक दिन जब मैं प्रातःकाल उठा तो उनका बिस्तर खाली था। पोलीस स्टेशन में रिपोर्ट करने का ध्यान आया परन्तु सोचा कि वहाँ जाने की अपेक्षा शादी एजेंसी के मैनेजर के पास ही चलना चाहिये। संभव है वे ही इस मुसीबत में कुछ कर सकें। निदान शादी एजेंसी के दफ़्तर पहुँचा। मेरे आश्चर्य का कोई ठिकाना न था जब श्रीमती चमेली देवी जी मैनेजर के पहलू में बैठी हुई गपशप लड़ा रही थीं। मैंने मैनेजर को कानूनी चाराजोई की धमकी दी। मैनेजर तो चुप रहा, मगर मुद्दई सुस्त और गवाह चुस्त। चमेली देवी जी आस्तीन चढ़ाकर गले का हार बन गईं। कड़ककर बोलीं—ओ निखट्टू, ज़रा अदालत में तो चल, तेरा वह गुड्डा पीटूंगी कि छठी का दूध याद आ जायेगा। तुम में मरदों वाली कौन-सी बात है, जो ब्याह करने चला है। यह सुनकर मैं हक्का-बक्का रह गया और कान लपेटकर दफ़्तर से बाहर आ गया। बाहर एक बुजुर्ग मिले जिन्होंने सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा कि तुम किन ठगों के हत्थे चढ़ गये। यह औरत तो दरजनों बार ब्याही जा चुकी है और फिर भी कँवारी है। मदारी के लट्टू की तरह कितनी ही दूर फैंको, घूमफिर कर मैनेजर के पास ही आ धमकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे मिलने वालों में एक मिस्टर भण्डारी हैं। इन्होंने जीवन में अनेक पापड़ बेले मगर कोई धंधा रास न आया। अन्त में उन्हें शादी एजेंसी खोलने की सूझी। आदमी चलतेपुर्ज़े थे, थोड़े दिनों में ही काम चमक उठा। एक दिन जब मैं उनके दफ़्तर में बैठा था कि एक जण्टलमैन, जो किसी सरकारी कार्यालय में हैड-क्लर्क था, वहाँ पहुँचा। उसने बतलाया कि उसके यहाँ सन्तान नहीं होती, इसलिए वह एक और विवाह करना चाहता है। भण्डारी साहिब ने नये कस्टमर को एक ही नज़र में भाँप लिया और उसकी हाँ में हाँ मिलाकर बोले कि सचमुच सन्तान से बढ़-कर इस संसार में कुछ भी नहीं है। सन्तान के बिना घर सूना है। भला वह भी कोई मनुष्य है, जिसका कोई नामलेवा भी न हो। हम आपको एक ऐसी बढ़िया पत्नी टकरायेंगे कि आपके यहाँ बच्चों का ताँता लग जायेगा। जब आप बाज़ार तशरीफ ले जायेंगे तो दो-तीन बच्चे आपकी बीवी साहिबा उठाये होंगी और दो-तीन आपकी उंगली पकड़कर चलेंगे। यदि ऐसा न हो तो फीस वापिस।

बात पक्की हो गई। मिस्टर भण्डारी ने फार्म निकाला। हैडक्लर्क ने इसकी शर्त पढ़ी और झट जेब से एक रुपया निकाल-कर मेम्बर बन गये। भण्डारी साहिब ने उसे एक रुपये की रसीद दे दी।

मिस्टर भण्डारी ने उसी दिन हिन्दुस्तान टाइम्ज़ में 'पत्नी की आवश्यकता' शीर्षक से इश्तहार छपवा दिया। दो-तीन दिन बाद एक तीस-बत्तीस वर्ष की आयु वाली एक भद्र महिला घूँघट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लटकाये भण्डारी साहिब के दफ़्तर में प्रविष्ट हुई। उसने आते ही घूँघट उलट दिया और कहा कि उसका पति इस संसार में नहीं रहा और वह शादी का प्रबन्ध करवाने के लिए वहाँ उपस्थित हुई है। भण्डारी ने उसे तसल्ली देते हुए कहा कि उस जैसी सुन्दर स्त्री को बहुत अच्छा पति प्राप्त हो सकता है परन्तु वे स्वयं स्त्रियों के विषय में बहुत सतर्क एवं सावधान रहते हैं, इसलिए जब तक किसी स्त्री का रिश्तेदार साथ नहीं आता तब तक वे किसी कच्चे काम में हाथ डालने के लिए तैयार नहीं।

वह स्त्री चली गई और दूसरे दिन एक नवयुवक को साथ लेकर आ खड़ी हुई। उसने मि० भण्डारी को कहा कि वह अपने भाई को साथ ले आई है, इसलिए इनसे बातचीत करके अपना सन्देह निवृत्त कर लीजिए। मि० भण्डारी ने नवयुवक से कुछ प्रश्न किये। इसके बाद फार्म निकालकर स्त्री और उसके भाई दोनों के हस्ताक्षर कराये। स्त्री ने एक रुपया मेम्बरशिप फ़ीस प्रदान कर दी। जाते-जाते उस स्त्री ने भण्डारी साहिब को कहा कि वह अपने भावी पति के दर्शन करना चाहती है। मिस्टर भण्डारी ने आश्वासन देते हुए कहा कि वे कल ही शाम के चार बजे यहाँ आ जायें और पतिदेव के दर्शन कर लें।

वह स्त्री घर चली गई। मिस्टर भण्डारी ने फोन उठाया और हैडक्लर्क को बताया कि उसके लिए एक अनुपम सुन्दरी पत्नी हाथ लग रही है। इसलिए कल दफ़्तर बन्द होते ही वे आ जायें। संभव है ऐसा अच्छा रिश्ता कहीं हाथ से निकल न जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैडक्लर्क ने रात बड़ी बेचैनी से काटी। भण्डारी साहिब के शब्द रातभर उसके कानों में गूँजते रहे। अगले दिन नया सूट पहनकर वे दफ़्तर पहुँचे। एक-एक पल उनको युग के समान प्रतीत होता था। बार-बार उनकी दृष्टि दीवार पर लगी हुई घड़ी पर जाती थी परंतु घड़ी की सुइयों की गति उनकी कल्पना से बहुत कम हो गई थी। अन्त में दफ़्तर के क्लाक ने चार बजाये। हैडक्लर्क साहिब ने ईश्वर का धन्यवाद किया और ताँगा लेकर सीधे मिस्टर भण्डारी के पास पहुँच गये।

भण्डारी साहिब ने उनका बड़े प्रेम से स्वागत किया। उनके भाग्य की सराहना करते हुए वे बोले कि ऐसा मनोहर रूप बहुत कम मिलता है। कृपा करके बताइये कि अब हमें क्या इनाम मिलेगा।

हैडक्लर्क साहिब ने उत्तर दिया। जैसे आप कहेंगे। तसल्ली रखिये, मैं सर्व प्रकार से हाज़िर हूँ।

अभी बातें ही हो रही थीं कि वह स्त्री भी आ गई और कुर्सी पर बैठ गई। उसने घूँघट की ओट से हैडक्लर्क साहिब को अच्छी तरह देख लिया। मिस्टर भण्डारी बोले—कहो बहन ! क्या आपको यह पति पसन्द है ? स्त्री मुँह से कुछ न बोली मगर उसने इशारे से स्वीकृत दे दी।

मिस्टर भण्डारी बोले——हैडक्लर्क साहिब भी आपके दर्शन करना चाहते हैं। भण्डारी साहब का यह कहना था कि उस स्त्री ने झट घूँघट उलट दिया। हैडक्लर्क साहब का रंग पीला पड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। यह उनकी अपनी धर्मपत्नी थी। इसके बाद उसने अपने पति की वह खबर ली कि शादी का बुखार सदा के लिये उतर गया।

पत्नी पर पति का यह रहस्य इस प्रकार खुला था कि उसने अपने पति की जेब में मिस्टर भण्डारी की दी हुई रसीद देख ली थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाल भुजक्कड़

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाल भुजक्कड़ को हिन्दी साहित्य में एक विशेष स्थान प्राप्त है। प्रत्येक गप्पबाज़, शेखचिल्ली अथवा हवाई किले बनाने वाले को लाल भुजक्कड़ की उपाधि दी जाती है। कह नहीं सकते कि यह उपाधि कोरी कवि-कल्पना ही है, अथवा इस नाम का कोई मनुष्य सचमुच भारत-भूमि पर हो गुज़रा है। चाहे कुछ भी हो, इस बारे में हमें कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिलता। लेकिन आप मानें या न मानें मुझे तो लाल भुजक्कड़ साहब के दर्शन करने का सौभाग्य अवश्य प्राप्त हुआ है। उन्होंने प्रसन्न होकर मुझे बातचीत का अवसर भी प्रदान किया है। कृपया सुनिये और देखिये कि यह मुलाकात कितनी दिलचस्प थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन मैं श्मशान भूमि के पास से गुज़र रहा था। वहाँ पर यत्र-तत्र बहुत-सी समाधियाँ बनीं हुई थीं। मेरी दृष्टि अकस्मात् एक ऐसी समाधि पर जा टिकी जिसकी संगमरमर की शिला पर मोटे अक्षरों में 'लाल भुजक्कड़' शब्द अंकित था। इसके साथ ही लाल भुजक्कड़ का जन्म तथा मरण दिवस भी लिखे हुए थे। लाल भुजक्कड़ की इस अकाल-मृत्यु का जीवित प्रमाण देखकर दिल भर आया और नेत्र आँसुओं से भीग गये। अनायास मुँह से निकल गया--ओ लाल भुजक्कड़ ! हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध फिलासफर ! तू क्या मरा है कि हिन्दुस्तान से ख़याली पुलाव पकाने का सिलसिला ही खत्म हो गया है। जब से पाकिस्तान बना है, पुलाव हिन्दुस्तान में वैसे ही कम मिलते हैं परन्तु हमारा कितना दुर्भाग्य है कि अव हम ख्याली पुलाव से भी वंचित हो गये हैं।

मेरे मुँह से ये शब्द अभी निकले ही थे कि समाधि से आवाज़ आई—अरे राही, मैं यहाँ हूँ। मैं अब भी जीवित हूँ बल्कि संसार के प्रत्येक मनुष्य के दिल तथा दिमाग़ पर छाया हुआ हूँ। मैंने कहा--ज़ालिम, तू मरकर भी गप्पें हाँकने से बाज़ नहीं आता। यदि तुम मरे नहीं हो तो अपने जीवित होने का प्रमाण दो। आवाज़ आई, अच्छा। आज शाम को मुझे कैनाट प्लेस के यूनाटिड काफी हाऊस में मिलना।

घर लौटते समय रह-रहककर लाल भुजक्कड़ के ये शब्द कानों में गूँज रहे थे कि मैं प्रत्येक मनुष्य के दिल तथा दिमाग़ पर छाया हुआ हूँ। ज्यों-ज्यों मैं सोचता जाता था, ऐसा लगता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था कि लाल भुजक्कड़ का कथन अक्षरशः सत्य है। संसार में कितने मनुष्य हैं जो अभिमान से खाली हैं। कम-से-कम नब्बे प्रतिशत मनुष्य खाली पुलाव पकाते हैं, यहाँ तक कि प्रायः भद्दी शकल और बेडौल शरीरवाले मनुष्य भी अपने आपको लार्ड बायरन अथवा यूसफ का प्रतिनिधि समझते हैं। अभी कुछ दिन हुए, हमारे एक मिलने वाले प्रोफेसर साहिब दो भले आदमियों के कानों में अपना राजनैतिक दृष्टिकोण ठोंस रहे थे। जब इन दो आदमियों में से कोई शंका-समाधान कराने का प्रयत्न करता तो प्रोफैसर साहिब बड़ी कठोरता से टोक देते और कहते कि बस सुनते जाओ। आपको अपनी प्रत्येक शंका का उत्तर मेरे भाषण से मिल जायगा। वास्तव में उनका भाषण क्या था, साम्प्रदायिकता के रंग में रंगे हुए एक कट्टरपंथी की दिमागी घुड़दौड़ थी जो सुनने-वाले में इतनी थकान पैदा कर देती थी कि सेरभर दूध पीने की तमन्ना होती थी। मेरे एक और मित्र से वे एक दिन कहने लगे कि मैं कालिदास के काव्य पर एक पुस्तक लिखूँगा और इसे आल इण्डिया कम्पीटीशन के लिए पेश करूँगा। जनाब, पुस्तक क्या होगी, कुछ न पूछिये। मेम्बर लोग जब इसे पढ़ेंगे, तो अवाक् रह जायेंगे और एक स्वर से कह उठेंगे कि मैरट की दृष्टि से यह कालिदास पर पहली और आखिरी पुस्तक है।

शाम को वायदे के अनुसार जब मैं यूनाइटिड काफी हाउस पहुँचा तो गेट पर एक लंबे-तलंगे जवान को सुर्ख खद्दर के लिबास में देखा जो अपने कद से दुगना सुर्ख रंग का झंडा पकड़े हुए था। सिर पर चौगोशिया लाल टोपी थी। मुझे देखकर वह मुस्कराया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बोला—–लो मै आ गया हूँ । आओ, अन्दर चलें, वहीं बातें होंगी ।

जब बैरा हमारी मेज़ पर काफी की ट्रे रखकर चला गया तो मैंने खामोशी को तोड़ते हुए पूछा कि प्यारे मित्र, आपने यह उल्टा नाम क्यों रखा है । प्राय: नामों के अन्त में लाल शब्द का प्रयोग होता है । जैसे रोशनलाल, रामलाल, मोतीलाल इत्यादि आपने यह उल्टी गंगा क्यों बहाई है और भुजक्कड़ के स्थान पर लाल भुजक्कड़ नाम को अपनाया है । उत्तर मिला कि सुनिये—– मैं पहले लाल हूँ और बाद में भुजक्कड़ हूँ । मेरी टोपी और झण्डे को देखो। इनमें लगा हुआ खद्दर सफेद है परन्तु सुर्ख रंग ने सफ़ेदी को दबोच रखा है । सूर्य देवता भी उदय होने से पहले आकाश मण्डल में चारों ओर सुर्खी बखेर देते हैं और इसी प्रकार अस्त हो जाने के बाद भी अपने पीछे सुर्खी ही छोड़ जाते हैं । सब जगह लाली का ही प्रभुत्व है । सुन्दरी के सौन्दर्य में वह जादू कहाँ यदि उसके माथे पर लाल बिन्दी न हो । टमाटर और लौकी पर एक दृष्टि डालो । टमाटर की रक्तिम लालिमा लौकी का मुँह चिढ़ा रही होगी । लाल मिर्च कड़वी भले ही हो मगर जहाँ तक इसकी रंगत और शोंभा का सम्बन्ध है, अंगूर को भी पिछाड़ देती है । स्वयं भगवान् को भी यही रंग इष्ट है । आपने भक्त कबीर का वह दोहा नहीं सुना :—

लाली मेरे लाल की जित देखूँ तित लाल ।
लाली देखन मैं गई मैं भी हो गई लाल ॥

मैंने पूछा—–आप अब चाहते क्या हैं ? आपकी बातों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से प्रकट हो रहा है कि आप एक भयानक टाइप के क्रान्तिकारी हैं। यह सुनते ही श्रीमान् लाल भुजक्कड़ के लाल अधर आँख-मिचौनी करने लगे। आपने ठीक ठीक भाँप लिया है परन्तु यह क्रान्ति अहिंसापरक नहीं अपितु हिंसात्मक होगी। हिन्दुस्तान की पवित्र भूमि पर हज़ारों वर्षों से इतने पाप होते चले आ रहे हैं कि इन्हें केवल ख़ून की नदियाँ ही धो सकती हैं। हज़ारों और लाखों आदमियों का ख़ून होगा। यदि आवश्यकता पड़ी तो करोड़ों का ख़ून किया जावेगा।

लाल भुजक्कड़ की बातें सुनकर मेरा कलेजा धक-धक करने लगा। मैंने साहस बटोरकर पूछा—आप किस-किस का ख़ून करेंगे? लाल भुजक्कड़ ने बड़े जोश से कहा—अपने आपको छोड़-कर सबका। ख़ून सर्वप्रथम उन बूढ़े लीडरों का होगा जो इसका नाम सुनकर ही काँप उठते हैं और देश में इसके स्थान पर दूध और शहद की नदियाँ बहाना चाहते हैं। इसके उपरान्त गद्दारों का होगा जो भारत माता की गोद में काले साँप बनकर चिपके हुए हैं। इसके पश्चात् उन पंडितों और मौलवियों की बारी आयेगी, जो साम्प्रदायिक आग को हवा देते रहते हैं। पूँजीपति का भी यही अन्त होगा। इसमें सन्देह नहीं कि इनकी संख्या बहुत कम है, परन्तु इनसे रक्त की पर्याप्त मात्रा निकल सकती है क्योंकि ये गरीबों का ख़ून चूस-चूसकर मोटे हो गये हैं।

मैंने पूछा कि आप वर्तमान लीडरों से उनकी लीडरी छीनना चाहते हैं? उत्तर मिला—बेशक परन्तु यह कदम किसी व्यक्ति-गत स्वार्थ के लिए नहीं होगा वरन् मानवमात्र के कल्याण के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा। मैंने कहा––फिर आपकी और इनकी लीडरशिप में क्या अन्तर होगा? लाल भुजक्कड़ बोले––निस्सन्देह हमारी और आजकल के लीडरों की नीति में आकाश और पाताल का अन्तर होगा। देखिये सबसे बड़ा अन्तर तो यही है कि वे ऊपर से नीचे की ओर क्रान्ति लाना चाहते हैं परन्तु हम नीचे से ऊपर की ओर ले जायेंगे। मैंने हैरान होकर कहा कि श्रीमान् जी, मैं कुछ नहीं समझा कि ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर का क्या मतलब है। उत्तर मिला कि यार तुम भी निरे बुद्धू हो। ऊपर सरमायादार है और नीचे जनता। मैंने कहा जनता तो अभी अनपढ़ है, अविद्या के अन्धकार में भटक रही है। सम्भव है वह आपका नेतृत्व स्वीकार न करे। वे बोले कि बेशक जनता जाहिल तथा मूर्ख है परन्तु यह बात हमारे हित के लिए है। इसीलिए हमारी लीडर-शिप चमकेगी। पढ़े-लिखे और सूझबूझ वाले लोग तो प्राय: बाल की खाल निकालते हैं।

मैंने पूछा––आप जनता के लिए क्या कर रहे हैं? बोले––श्रीमान् जी यह सब कुछ जनता के लिए ही तो है। हम साल में दो बार देहात का दौरा करते हैं। कलेजे पर पत्थर रखकर बाजरे की रोटी और साग खाते हैं। देहातियों की बोली समझते हैं और उन्हें अपने विचार समझाने का प्रयत्न करते हैं। जब बहुत प्रयत्न करने पर भी हम एक दूसरे को नहीं समझ सकते तो कई बार निराश होकर वापस भी लौटना पड़ता है। इससे बढ़कर हम क्या कर सकते हैं।

मैंने पूछा कि क्या आप स्वयं क्रान्ति लायेंगे या आपकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पार्टी ? यदि आपकी पार्टी ने ऐसा करना है तो यह सर्वथा कठिन है। कारण यह है कि अभी आपकी पार्टी के मेम्बरों की संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती है। यदि केवल आपने ही इस महान् कार्य का बीड़ा उठाया है तो अकेला चना क्या भाड़ फोड़ेगा। मेरे ये शब्द सुनकर लाल भुजक्कड़ तिलमिला उठा और जवाब दिया—देखिये हमारी पार्टी दिन-प्रतिदिन ज़ोर पकड़ रही है। माना कि अभी इसकी संख्या पर्याप्त नहीं है परन्तु वह समय दूर नहीं है, जब इसके मेम्बरों की संख्या सब पार्टियों से बढ़ जायगी। हमारा विश्वास है कि दस-पन्द्रह साल तक इसकी सदस्य-संख्या करोड़ों तक पहुँच जायेगी। इसके पश्चात् हम विधान-सभा तथा लोक-सभा के चुनाव लड़ेंगे। जब हम इन पर अपना अधिकार जमा लेंगे तब हमारी पार्टी लाल सेना तैयार करने की योजना हाथ में लेगी। हमारी यह सेना शीघ्र ही पूँजीपतियों की सोने की लंका को भस्मसात् कर देगी।

मैंने जी कड़ा करके कहा कि इस सेना में आपका क्या पद होगा? लाल भुजक्कड़ नथने फुलाकर क्रोध से उफनते हुए बोले—मैं इस फौज का सेनापति बनूँगा क्योंकि पार्टी के नवयुवकों को अब भी मैं ही ट्रेनिंग दे रहा हूँ। ज़रा सोचिये, जब एक करोड़ मनुष्यों की सेना मेरे एक इशारे पर मौत से खेलेगी तो कौन अभागा मुझसे टक्कर लेगा। मेरी वक्रदृष्टि लाखों पूँजीपतियों को मृत्यु के मुख में झोंक देगी। देश के हज़ारों नवयुवक तलवार चूमकर सो जायेंगे। जागीरदारों की गर्दन में फाँसी का फंदा डाल दिया जायेगा। मैं आज्ञा दूँगा——'फायर' और करोड़ों ग़द्दारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सिर हवा में उड़ते नज़र आयेंगे। मैं डरा, क्योंकि उस समय लाल भुजक्कड़ की आँखों में शरारे बरस रहे थे परन्तु फिर भी मैं रुक न सका और पूछ बैठा--इसके बाद क्या होगा ?

वे बोले--यह भी कोई पूछने की बात है। इसके बाद क्रान्तियुग आयेगा जिसकी प्रतीक्षा में हमने बरसों से आँखें बिछा रखी हैं। प्राचीन शासनप्रणाली के परखचे उड़ेंगे। लाल झंडा गगन में गर्व से अपना सिर ऊँचा किये लहरायेगा। आकाश और पृथ्वी खुशी से लाल हो जायेंगे। सुर्ख बारिश होगी तथा सुर्ख आँधी चलेगी।

कोई जागीरदार होगा न नवाब। रायबहादुर होगा न खान साहिब। ढोल के समान तोंद वाले सेठों का पर्चा चाक होगा। मौलवी होंगे न पंडित। बस, जनता ही जनता होगी। चारों ओर समता का राज्य होगा। कोई उच्च होगा न नीच। कोई बन्दा होगा न बन्दानिवाज़। महमूद होगा न अयाज़। कोई सेव्य होगा न सेवक। प्रत्येक मनुष्य काम करेगा और चैन की बंसी बजायेगा।

मैंने विस्फारित नेत्रों से लाल भुजक्कड़ की ओर देखा और नम्र निवेदन किया कि लाल साहिब, यदि कोई पूँजीपति आपकी सेवा में उपस्थित होकर क्षमायाचना करे और जीवन का दान माँगे तो क्या आप उससे दया का व्यवहार करेंगे ? लाल भुजक्कड़ का चेहरा रक्तिम हो उठा और वह ज़ोरदार आवाज़ में चिल्लाया कि मैं उस दुष्ट को खींच के एक लात मारूँगा कि बत्तीसी बाहर आ जायेगी। और यह कहते ही उसने इस ज़ोर से दोलत्ती झाड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि मैं भौंचक्का होकर देखने लगा। हमारे साथ वाले मेज़ पर पाँच-सात भद्रपुरुष और महिलाएँ काफी पी रही थीं। लाल भुजक्कड़ की दोलत्ती खाकर मेज़ पर रखी हुई काफी की प्यालियाँ नाच उठीं। गर्म-गर्म काफी के छींटे मेज़ के गिर्द बैठे हुए स्त्री-पुरुषों के मुँह पर जा गिरे। होटल में हुल्लड़ मच गया। किसी ने कहा कि दीवाना है। किसी ने कहा कि सौदाई है, इसे पकड़ो। सब लोग हमारी तरफ लपके। लाल भुजक्कड़ ने आव देखा न ताव, झट कोने से अपना झंडा उठाया, चौकड़ी भरी और हवा हो गया। लोगों ने पीछे भागना आरंभ किया। मैं पीछा करने वालों से गला फाड़-फाड़कर कह रहा था, अरे लोगो, लौट आओ, क्यों व्यर्थ में थकान मोल लेते हो। यह तो लाल भुजक्कड़ है, लाल भुजक्कड़।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री विश्वनि

SAMPLE STOCK VERIFICATION
1988
VERIFIED BY..........................

STOCK VERIFY
2020
G.K.V. Library

8.3,6
37311

R 8.3,SAN-S
37311

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

867
H57
P59
P 64

स्तकालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऑरिएण्टल बुक डिपो
दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar